Chapter-2

-:- द्वितीय अध्याय :-

कमलेश्वर के तादित्य का कर्मकारण तथा उसका परिचय :
द्वितीय अध्याय : कमलेश्वर के तार्कित्व का कवित्तकरण तथा उसका परिचय।

कथा उपस्थापः
1. एक शहर तत्तावरण गलियाँ
2. डाक बेगला
3. कानी अंधी
4. अगामी अलीम
5. तीसरा आदमी
6. अनुभूत में बोध बुझा आदमी
7. लोटे हुए मलाफिर
8. बड़ी बात
9. हुबह दोपहर शाम

कहानी
1. कमलेश्वर के निमं लिखित कहानी सुभद्रः
2. सिंदूर मुस्कान
3. व्यापार तथा अन्य कहानियाँ
4. फ्रेड कहानियाँ
5. भाषा का दरिया
6. मेरी प्रयोग कहानियाँ
7. घोंघे हुई इंसानिये
8. राजा निर्वाणिक्य
9. कमले का आदमी
किरातीय अनुवादः कमेब्लाचर के साहित्य का प्रगतिशीलता तथा उसका परिचय।

प्रस्तावना:-

मद्यमान काल में हिन्दी कब्जा लेखकों में कमेब्लाचर जी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। कमेब्लाचर जी का यथार्थ रूप साहित्यिक दृष्टि की तकलीफ़ की उस मंजिल का पहुँच गया है जहाँ सक्रिय और उनके प्रयास सकारात्मक दिशा में बहुतेरी और उनकी सकारात्मक प्रेरणा के लिए उसे दिखा गया उसका निश्चित है। उनके प्रति सम्पदा उपन्यास "बाली आँधी" और "आँधी के रात" दोनों उपन्यासों को उनके ईर्षा निम्न में नाम बदलकर फ़िल्मों के लिए लिखा गया उपन्यास करार दिया है। ऐसा कहते हैं कि जिस किसी उपन्यास का फ़िल्मिकरण हो गया माना वह उपन्यास की अंतरिक्षता ही नहीं है। कल्पना: आधुनिक गय प्राचीन साहित्य में उपन्यास एक साहित्य-सामग्री के रूप में मानना अत्यन्त अलग होता है। कल्पना की तत्वांतरात्मक और तत्वांतरित उपन्यास में तराश पैदा करते हैं जो मानच की सत्यियों और गतियों पर भरोसे पर गृहर बनते हैं।

कमेब्लाचर जी के उपन्यासों में आधुनिकता की प्रादुर्भाव प्रारंभ करने वाली रूप है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से सुधारक विधायकार्यों, साम्प्रदायिक अध्यात्मिकता, नाती की प्रेरणा अलगावात्मकता निर्माण की धोखा घड़ी का भी कर तरीक़े दिखाया है। यहाँ आप कब्जा साहित्य के कदमों को उपन्यास चलाने के लिए परिपरित कर इसकी चीज़ें हैं।

इंग्लिश उपन्यासः-

इंग्लिश उपन्यासः-

यह उपन्यास प्राचीन की पूर्व के कारण खास में "बदलाने गयी" शीर्षकः। कमेब्लाचर जी का यह प्राचीन उपन्यास है। उनका यह प्राचीन उपन्यास की इतनी तपाई है कि कमेब्लाचर जी की उपन्यासकार के ख्याति में भी तपाई दिखाने कर देता है। इसी प्रकार का यह भी प्राचीन उपन्यास 1961 में प्रकाशित हुआ। इसके पहले तय 1957 में ही यह "स्नेह" पत्रिका में प्रकाशित हो गया था। इस उपन्यास की आज भी पढ़ने समय रात नहीं लगता कि यह इतने और इतने अध्यायों के लिए प्रेरणा सिखाया जाता है।

....2/3
वह पहले लिखा गया होगा। यह प्रतिवेदन ही इसकी तात्पर्यी और तदार्थार्थ को बताती है। इत उपन्यास की तबसे बड़ी विस्मृता यह है कि आकाश और गहराई उसकी ज्यादा ज्यादा है कि उसकी धार्मिक पाना मुरिश्त है।

इसका प्रथमार्थ यह है: मोटर वाले तर्करम सिंह का गाँव में दक्षिण था। स्वामी तवदानंद जी का बेहोश ज्ञान हालक सिवराज उनके साथ रहकर उनके चक्षुसूत लीखता था। सिवराज के पिता की मृत्यु बाद उसके घर ते पूर्वज दान-दिव्या अनी बंद हो गई। तब से आश्रम के लोगों का उसके प्रति व्याख्या कवल गया था। वह उखान-उबाह रहता था। एक दिन वह मोटर के आगे पर दुखाया संस्थैयों का तर्करम सिंह के पास आ लैहा। आश्रम के मुलु ब्रह्मवाचियों ने सिवराज को वहाँ डैगे देख लिया। ब्रह्मवाचियों ने उसे स्वामी की के पास लेने के लिए कहा, पश्चिम सिवराज बंद हो गई। ओर ते सिवराज तर्करम सिंह के साथ ही रहने लगा। उस छोटी-बड़ी बस्ती में यह बात केले देर नहीं लगी कि तर्करम सिंह ने सिवराज को फूला लिया है। सिवराज तर्करम सिंह के पास था।

तर्करम सिंह अपने दोस्त की ज्यादा धार्मिक वर्षा की तर्करम सिंह से बुझानी हो गई।

तर्करम सिंह स्वभाव में ही स्वभाव रहता था। बस्ती की रात्रीं बाद की भी उसे परवाह नहीं रह गई थी। तर्करम सिंह अपने साथ एक लोगों के साथ मिलकर डांडा भी डालता था। तबसे पहली बार की इकती में वह सत्र नहीं हुआ था। इकती के नामक घर के तस्तथा जान गए थे और उनकों डाक्तरों का झटक गंभीर लिया। डाक्तरों ने घर की महिला बंतरी को बुझाने का रंग लिया लेकिन बंतरी ने कोई बेद नहीं दिया। वह डाक गाराया गया था। उसे दिन इकती की सप्ता थाने में दर्पण कर दी गई थी। तर्करम सिंह के बारेंट जारी हो गए थे। एक दिन तर्करम सिंह ने स्वभाव को अदालत के सामने आत्महत्या कर दिया था। बंतरी रोंगु अदालत में बाँतरी होती। तर्करम सिंह के प्रस्तोत तर्करम सिंह को कहता कि उसके बाहर बंतरी को छोड़ा। अब बंतरी की जीमत ही एक बप्पा लाया होती। अदालत में बंतरी ने तर्करम सिंह को पहुँचाने से खाली कर दिया था। तर्करम सिंह को मिटा गंभीर्ता उसे बार-बार उल्लिखित कि बंतरी कहीं तराय में स्वयं होगी, वह उसका अवहेलन कर लेता। लेकिन तर्करम सिंह कुछ और ही सोचता था।

....3/-
तर्नाम तिहाड़ फौज में बना गया। दो दिन तक उसने प्रोज़ में खूब काम करते थे और फिर वह वार्षिक इलाकी बस्ती में आ गया था।

उस दिन उहाँ के नौरूज़ी में उसने बंतीरे को देखा था। दोनों में तभ हुआ कि वह दिन बेहद सुखद उम्मीदें उठाता है कि वह बंतीरे को भोजन करे और उसके दौरान भोजन की आवश्यकताओं के लिए खाते हैं। 

जब उस दिन उहाँ नौरूज़ी और नौरूज़ी में दूल्हा देखने के लिए वह दिन खुशी साधना हुआ। बस्ती में इतना पता लगा कि वह तर्नाम के कारण दिन का समय में खींच गई थी।

सूरती बेहद मनोवैज्ञानिक व्याख्या थी। वह अदालत में गवाहियां देने का बाम करता था। वह उस दिन उहाँ नौरूज़ी के तार छाया के पर रहता और दोस्तों को यादरूपों में दूल्हा रहता। वह नौरूज़ी अंदाज़ में लड़ता रहता। एक दिन उसने खुद की तारना को कल्की बाबा आवारा लेने वाले से देखा। उसके दौरान तर्नाम ने कर्मियों को नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा। उस दिन उसने लापता की तारना को नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा। उसने नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा। उस दिन उसने नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा।

उस दिन उसने नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा। उस दिन उसने नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा। उसने नौरूज़ी लेने का लक्ष्य उठा।
विप्रार्ज हायं: बंगाली के पास चला जाता था। बंगालि उसके लिए यां, बढ़ा विप्रार्ज सब कुछ बन गई थी। इस बार तर्कसर सिंह, मंगल व रेंगीले अक्सर दाखले की योजना बना रहे थे। वह योजना विप्रार्ज को पता चल गई। बंगालि बंगाली को तलाकात्मक है कि वह क्यों अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। विप्रार्ज का मन करता कि वह बंगालि को अपनी प्रेमिका देख के बारे में बतायें, वरना उसके हम्मला ही नहीं होता था।

बंगालि को तर्कसर सिंह से बहुत पिछली जब भी रेंगीले तर्कसर सिंह की जोई बात करता, तो बंगालि जब शुन जाती थी। तर्कसर सिंह अपने मित्रों के साथ डाका डालने की योजना बना गया था। डाके तेज लौट कर वह रेंगीले के घर पहुँचा। वहाँ वह हकीकत हुमाना बातचीत था। लेकिन बंगालि विफर उठी। उसने हकीकत बिना नहीं। तर्कसर सिंह डाका डालने गया उन लोगों ने बारे में रिपोर्ट कर दी थी। बीतने वाली तर्कसर सिंह के वारेंट जारी हो दुके थे और तर्कसर सिंह फरार था। पुलिस ने तर्कसर सिंह फकूँ नाम ने मुंबई के पूरे इलाम करवा रखे थे। रेंगीले ज्यादा हुआ था कि न जाने अब क्या होगा। इसर विप्रार्ज कार्यकर्ता की एकही कमसत्ताम ते प्रेरण में दीवाना हो रहा था। वह उसे विचार करना मानता था। उन दिनों वह हर बात बूढ़कर बाजा मास्टर के साथ नाटक की तैयारी में बुद्धा रहता था। विप्रार्ज तारा दिन बढ़ीं बढ़ा रहता था। तर्कसर सिंह की जाग-जब खोज ही पड़ी थी।

एक दिन मंगल से तर्कसर सिंह रेंगीले के घर आ पहुँचे। तर्कसर सिंह तो रात को जाने की तैयारी थी। तर्कसर सिंह समय ने रात को रेंगीले के घर में ही घरें रहने की तैयारी थी। बंगालि को वह कटकी त्वीकार न कर क्यों भाद्र उसके घर में रहे। मंगल ने भूल था। बंगालि ने रेंगीले से कहा कि वह मंगल से जोल जाने को वह दें।

....5/-
मंगल ने सुन लिया और वह खुद उठ कर चला गया। रात को गड़ा धारी ने उसे नो की हालत में पड़ा पाया और धाने में पहुँचा दिया। अब दिन अबर के गयी तक खुद और पड़ी गया।

सरनाम ने तुम्हा तो उसका खुद सील करा दिया। उसने रंगीले की कोई बात नहीं सुनी। सरनाम के सिर भी खुद सवार था। शाम को रंगीले पर तोट रहा था कि मंगल के लोगों ने उसे पीट डाला। क्रौल आदमी रंगीले को बेचौरी की हालत में थर पड़ुता गया था। सरनाम ने तुम्हा तो आज रह गया। कि मंगल के आदमियों ने यह क्या नियाम किया। उसने सोचा कि वह मंगल के आदमियों से बदला लेगा, परन्तु वह रंगीले को ओढ़े समझाला। रंगीला भी लोकित कि सरनाम ने ही कराया या गया। बंसिरी का निविस्तार गया था कि सरनाम के प्रिया और कौन यह करा लेगा था। वह सौचती रही कि सरनाम अब उसकी इज्जत भी भिन्न कर उस्त करना ले गए।

रंगीले बहुत अच्छी गवाही देता था और पुलिस जांच की कि रंगीले के सरनाम के खिलाफ गवाही देता है। रंगीले लोकतान्त्रिक कि सरनाम उसके लाख दुरा है, पर वह उसके विचर पत्रकार न देगा। इस पर बंसिरी ने रंगीले को यह बता देगा कि सरनाम सिंह ने उसके लाख देकर पत्रकारों के कहने का ईस्ट ही गया था। सरनाम सोच रहा था कि अब तो उसे तुड़ा हो गई जास्ती। इससे पहले वह रंगीले के निम्न मन की बात कर देना चाहता था। वह बंसिरी को भी एक बार देख लेना चाहता था। बिक्राम और बाजा मास्टर नाटक के मुख होने की पूर्तितिश थे कि वहाँ उसने वह पहले ही टेन में आने लग गई। तब खुद समाप्त हो गया। जान मान की बहुत दातन हुई। खबर साहब भी मारे गए। तब खुद बिराने में बदल गया।

6/-

"एक सड़क सत्तावन गलिया" से हट कर कामेश्वर जी ने इस लघु उपन्यास
सेही पुकारी की कहानी है जिल्ले अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देते, अच्छे और बुरे तौर पर टोकरा गुजरती, और वह हर जगह हारती जीतती हुई आगे बढ़ती है। "इरा" एक विरोधी पुकारी है जो आधुनिक दिवसों में ठहरी है, जहां पर उसने अपनी नूतनी हुई जिन्दगी की अनुभूतियों को अपने लििंग और विचारों के द्वारा अस्थायी फिया कांग्रेसी वास्ता के दौरान वह एक बंगली में तिक्का और तोलखी नामक गुलस्के के लाभ ठहरी है। जबहर पर उसने तिक्के के लाभ इधर-उधर की तैयार करते हुए अपनी आत्मलब्धता तुलना ।

"इरा" के जीवन में विचार और नृत्यज्ञान की प्रादर्शें नहीं है लििंगकर्मी। नारी जीवन की पुकार और वेदान्तक अनुभूतियों का "इरा बेंगला" अपने आप में एक उत्कृष्ठ प्रशंसक श्रीमती श्रीमती अपने आपातकर्म नारी "इरा" के साधकों के लाभ साधारण नारी की चिनता और उनके अन्यतरिक एवं बल्के तंत्रों को स्मरणित किया जा रहा है। उपन्यास में अनेक रूप में "इरा" नहीं जीवन की गहन अनुभूतियाँ बोलती है और पाठकों को फिया की नजर रखता है।

"इरा" मध्यकालीन परिवार की लड़की है। जीवन की पहली तीन दिनों तक वह फिल्म गई। एक नाटक प्रेमी तजों दिसला नामक गुलस्के ने रंगमंच का प्रतिक देख उसे अपनी वातान का फिल्म बनाया। यह दर जिक्सी की राह गुल की दिने पर प्रयास करने के बाद भी नहीं दिखा फिल्म नहीं और फिल्मि की है ली दिख गुलारे के बाद जबकी जीवन के पहले में उलझी कोई गहरी नहीं रही। फिल्म के धोखा गाया के बाद "इरा" को बाद जिक्सी गुल नहीं है जबां वह लोगती है, "मेरी आत्मा का जीवन-कोना यादों ते भरा हुआ है। मेरी आईरों में हर दर आदरी की तत्काल है जिसके लाभ दौड़े ते भी दिन गुढ़े है। सबी ने फिल्म फिया ने लाई।"

"इरा" के जीवन में फिल्म के प्रतिरोध और तीन गुल आये - शिकार, नापंके और योगी। इन अर्कणों के प्रति अपत्ति और आकर्षण उसे रहा। इन अर्कणों नहीं बह तकत। इन अर्कण पुकारों में डॉक्टर के पास वह फिल्म परिस्थितियाँ है।

1) "फिल्मकार" - डॉ. विलियम तत्काल - मुखर सिंह - पृष्ठ 186.
2) "डॉक्टर" - कपिलेश वर्मा - पृष्ठ 30-31.
लाल छोटे गये थे। बुध आकाश और प्रेम की इरा स्वीकार नहीं करती। उनसे कहा भी है: "हर वात को आदर के पर्दे में रखर जाते देखें।" तिल्ल। गंगा धीरा पर पड़ी धाट दो तो उसकी फिल-मिलाद बूढ़ुबुढ़ लगती है। इसकी आदर का यात्रा जिम्मेदार जो गत पहनाया।”

उनमें सन्देह नहीं कि फिल के प्रति इरा को बिन्दू आक्षेपण रहा। उल्ले भुजुबुझ की वह उतः बूढ़ नहीं पायी। फिन्न मिलने, इरा से जो प्रकार किया वह कम नहीं है। आर्थिक परेशानियों से तंग आकाश फिल इरा को बतारा नामक दलाल के यहाँ नौकरी दिला देता है। बतारा आयुष्मान दलाल है। तम्बाच्चों को बनाना और लोटना यही उनका काम है। तम्बाच्चों को बनाये रखने के लिए वह औरतों के उपयोग को जापय मानता है। आखों दे दोस्ती कर वह व्यापारियों का काम करता है। और तेज़किरियों की बीड़ीयों और पेड़किरियों से उसके निकट के सम्बन्ध थे। उन लोगों की कमजोरीयों जो वह जाता था। शीला नामक युवती से उसे इतना वाम में सदा तड़पता मिली। "शीला हर घर में बीड़ी का नक़बा लाकर रखती है। वह झूठ शारीरिक औरत है वकल और पेटे की मार ने उसे बुद्धि बनाया है।"

बतारा, तोल्ली और डाक्टर के साथ रहते हुए इरा ने प्रेम से अधिक उन्हें कला ही दी है। इरा बार वह गत जीवन को वाटर केंद्र देती है और नयी जिम्मेदारी शुरु करती है। बतारा के साथ जिम्मेदारी का दूर गोड़ उनसे मुक्त किया। बतारा ने उसके साथ रखर की मरकर उसे खेला है। उनसे तारे खेल और भाराम उसे दिये, वह गर्मियों ही जाती है। बतारा उसका गर्भवत्ता करता है और शीला आकाश उसे घर से निकाल देती है। आगे बतारा इरा को डॉ. पंड्रीबोन्न के साथ आताम मैड़ा देता है। जब डाक्टर के साथ उसका विकास होता है। और उनसे पर वह विधवा बन जाती है। जिम्मेदारी को फिर एक नया मोड़ मिलता है। इरा विलक्क और तोल्ली के साथ वापस आती है और तोल्ली से अधिक तिल्ले से ही वह भुजुबुझ मिल लेती। तिल्ले से वह कहती है: "विलास मैं सबधु कहता है, उसके गादी न कर सकी क्योंकि मैं वह नहीं वह कहती कि तुम मेरी जिम्मेदारी में पड़े हो। जो भी मेरी जिम्मेदारी में आया उसने जाने अथवा आने दुआ फिरता कर या तूम-कूम या -

पृष्ठ 35
पृष्ठ 65
"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"

"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"

"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"

"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"

"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"

"धरा बंगला" की कथा एक तात्त्व दो रात्रों पर जाती है। वास्तव में यह कथा उल्लेख आयुष्य और अन्दर की बाहि कहानी है। अमीर यात्रा और तोलकी वही की आयुष्य कथा के तात्त्व है। जबकि तिल और हरा का अतिस उल्लेख आयुष्य कथा के तात्त्व जलता है। तोलकी, बातरा या हार्टर को उसे अपनी उत्तर आयुष्य यात्रा का तात्त्व बनाया है।"
झी तत्त्व पर है। इतर का हुब यही है कि इस कपड़ी दुनिया में औरत विना पुक्ष के रह नहीं तकती, उसे एक कवच धारित। उसने कहा है कि -"हर लड़की एक कवच दूर्लभ है। वह यादे पति का हो, भाई या बाप या फिरी हूँ के रिश्तेदार का। इत कवच के नीचे यह अद्यता या बुरा हर तरह का जीवन बिता तकती है।
उसे पहनने के लिए जैसे एक ताजी पारित हैं वह कवच भी यादिए।" । जीवन की इस राष्ट्र पर अभी आस्तित्व को सुरक्षित रखने के लिए और अपने आपको मनाये रखने के लिए एक सुधित युवती को चिन-चिन समस्याओं से टोकर निरोगता प्राप्त है, उत्तरा मार्गिक चिन "डाक कंग्ला" में हुआ है। एक सयंबर पर इसके परिचार ने दार्शनिकता आ गयी है। उसके तारे नाम जीवन की गहरी अनुभूति की विविधता करते हैं। इसके परिचार जीवन में जो लोग देखें और तहले वह उसी संयंबर का प्रश्नकाल है।
इस संबंध में हम यह सोचते है कि "पति" के अन्तर्गत का वितरण कर उनके बाहर का सृष्टि विशेष करने एवं उनके आस्तित्व को प्रश्नकाल में कम्युनिति लकड़ी है।" । माध्यम की आर्थिक रिस्तियत का और उसके कारण जीवन के बदलने वाले मूल्यों का वृहती सुधित लेख ने इत रचना में किया है। "डाक कंग्ला" में आर्थिक समस्या दूर समस्याओं का आधार लेए उद्देश्य है। इसके माध्यम से नारी जीवन की अस्थायी और नवनीत तपतियतियों को विकसित किया गया है। तथा आर्थिक पवित्रता से सुधित की कामना का आर्थिक पवित्र स्पष्ट हुआ है।"

यह उपन्यास कमेव्वर जी ने तुरारित यथार्थवाद मैली में लिखा होता तो ज्यादा प्रभावी बन सकता था।

मार्फत आवदः :-

एक लम्बे अरसे के परावर कमेव्वर जी का यह लघु उपन्यास प्रकाशित हुआ। व्यक्तिगत और सामाजिक दो भिन्न लघु पर एक साथ इत लघु उपन्यास का वचन प्रकाशित है। "मार्फत आवदः" एक और आस्तित्व दार्शनिक का कथा बहावी लक्ष्य है। इत रचना में लेखक ने मार्फत और जगी बाबू के माध्यम से उन्नी के 

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

1। "डाक कंग्ला" - कमेव्वर - पृष्ठ 45.
2। "हिन्दी उपन्यास उद्धव विकास" - आ. सुरेश सिन्हा - पृष्ठ 558.
3। "कमेव्वर" - कृष्ण बुरहाणा - पृष्ठ 205.
फ्रेम्स और स्थितियों द्वारा समूहीय पुनः प्राप्त। ओर स्थितियों पर प्रभाव होता है। यही बारह के भी लघु उपन्यास आकार में संक्षिप्त होते हुए भी जीवन के विस्तार पतल की लेकर जाता है। आज के जीवन में भूमि घर और राजनीति ने इस फ्राइर प्रेक्षा किया है कि जहाँ पर भी, आाहत हुए भी सामान्य व्यक्ति उसे मुफ्ति नहीं पाता, सी गढ़ी और व्यापक देखना "काली आठ" में तर्क देखने को मिलती है उनके तत्त्व वास्तव में एक चर्चकर के जीवन के और यह भी आस-पास के कार्यकर्ता और सत्ता का अधृत ही महीनता के प्रतिनिधि किया है। इस रचना के दर पाने, जिन्हें न जिनके प्रकार का प्रतीत है जो तमाम हानि और स्वास्थ्य के लिए आर्थिक बुद्धि तो मिलते हुए वर्ण का शौच से उन्हें बिखारती है। और उनकी कमलहरी का हर भाग दितता समय हो तो उत्तर आयंता उठाती है। त्यहीं और हालार्च व्यक्ति के चित्र में लेख ने मानती है यह में स्तरात्मक और प्रभावी पार्षद का निश्चय किया है।

"काली आठ" के पास तमाम शब्दों में संगीत बात कहने की जरूरत है, जो व्यापार-व्यवस है उस उपन्यास में उल्लेख हुई है तथा हो पढ़ने हुए से सच कभी नहीं कहता कि लेख को अपनी बात पेश करने के लिए उपलब्ध शब्द नहीं मिले।" जगदीश और सहरी जीवन के निम्न रोज जीवन की तात्कालिक और आर्थिक समस्याओं का चित्र कमलहरी जी ने इस रचना में किया है। "काली आठ" में उनके तृणान्त पर उच्च कार्ययोग तमाम की तात्कालिक और आर्थिक समस्याओं का चित्र कमलहरी जी ने इस रचना में किया है। कमलहरी जी ने उच्च-कार्ययोगी निम्न रोज जीवन कार्यक्रम और तात्कालिक कार्यक्रम का गठन और वास्तविक विवाह किया है। "काली आठ" में हां यह देखा देखने को मिलता है जो त्योहार को देखुआ है किसी अन्य कार्यक्रम के अनेक पढ़ने हैं तथा निम्न रोज तमाम भारत में अन्य वर्धित कर्म के नाम भी जो राजनीतिक अस्तित्व है। उसका अत्यन्त यथार्थवादी दिखाने लेख ने किया है। राजनीतिक समस्याओं का सम्बन्धित कार्यक्रम के सन्दर्भ में इतना करारा अंतर-प्रथा लघु उपन्यास पढ़ने बार ही देखने बार मिलता है।

"काली आठ" की नाटिका है मानती उसका प्रभाव व्यक्तित्व ही समूहीय रचना में छाया हुआ है। मानती जगदीश जी की पत्नी हैं। मानती और

"कमलहरी" - 87. "विशेष" नवेल्डा - पुस्तक 194.
जगनीभावू का प्रेम विवाह हुआ था। बादी के कुछ दिनों के बाद ही मालती के
पिता की मृत्यु हो गई थी। उसके बाद ही मालती ने राजनीति में कदम रखा।
धीरे-धीरे मालती एक दिन मिनिस्टर हो गई। मालती का जीवन परिवार बिखर गया।
जगनीभावू बोधपाल में आकर होटल गोल्डन सन के नैवेद्य के पद तक पहुंच गए थे।
तिल उनकी धनलीली बेटी थी। वह एक्साट्री में पड़ रही थी।

मालती को पुनाव के लिए बोधपाल केस्ट मिला था। शहर में उनके
प्रश्नों द्वारा पुनाव-प्रस्थार आराम हो पुका था। कुछ दिनों बाद मालती ने भी
बोधपाल आ गई थी। जगनीभावू के होटल में ही उनके खाने का पुष्टियां किया गया
था। जगनी बाबू ने त्यह सारा उपलब्ध देखा था। मालती ने आँख और प्रायोगिक
अभ्यास का मीमांसा समाप्त किया था। मालती ने बहुत कुटनीति से बोधपाल की
जनता का सर्वमन्त्री प्राप्त कर लिया था। उन्होंने जगनी-बाबू पुनाव सभाओं को
संबद्ध किया था। अकेले निर्माणों को स्वीकार किया। उनका कार्यक्रम बहुत ही आसी
था। वह बहुत न की। आँ: तत्काल से नोट में खाकट भरपूर नहीं कर रही थी।
उन्होंने यहाँ के सभी राजनीतिकों के मिल कर उनके प्रभावित कर दिया था। बहुत
से दलों के उम्मीदवार के बीच चराई-बगाई होना बहुत तारामंडली बात थी।
मालती का अक्षमात्मक छापा जोर से दौरा करने भी गई थी। और इस प्रकार मालती ने
पूरा सम्बोधन प्राप्त कर लिया था। एक दिन मालती के दरिद्र तथा मालती के
जगनी बाबू के संवेदनों को इसके अनुभुत पर पटक गई थी। इस दौरा के मालती के तमामों
की लिखित प्रतीक्षा तीन पहले नहीं थी और उन्होंने अपनी बेटी की चुनावों में भी
घर आने के लिए मना कर दिया था। वे नहीं थानों के रहे किसी पर इन सब
बातों का प्रभाव पड़ा।

एक दिन मालती के जगनी बाबू का घर पूरा उनके काम में ना पड़ने।
इस बात की तो किसी का कोई उम्मीद नहीं थी, लेकिन मालती ने अपनी जाति
की महत्व प्रदर्शन की। मालती ने अपने पर लोग उस प्रकार पर रहे थे।
आँख वांछित प्रमत्व समाप्त हो गया। मालती का सत्य क्षण नोटों
के जीत गई थी। अगले दिन शाम बोधपाल समय होते में शहर के नागरिकों ने
मालातिजी के लिए अभिनव तमारोह का आयोजन किया था। अभिनव तमारोह में लिखी ने भी मालातिजी के ओड़ीग्राम लिए थे। लेकिन मालातिजी की पता न कर सका कि वह उनकी ही बेटी लिखी है।

मालातिजी की दासिक जाने की तैयारी हो गई थी। अभाव मालातिजी की लिखी और जमगीबाबू की घिरने पड़ी। मालाती ने लिखी की बात मान सकते हैं, लेकिन लिखी कुछ भी समझ न पाई। मालाती ने जमगी बाबू के पूछा कि वह लिखी की केवल दिल्ली आ गई है। जमगी बाबू ने जवाब दिया कि उन्होंने जो अपने-अपने स्थान तप फिरा है, वे ढील हैं आँ-अब फर्याताप कैसा।

जमगी बाबू ने कहा दिया कि मालाती कह और वह नहीं है बल्कि लिखी लक्ष्य बन गई है और उसकी मुख्य अधिक तकनी होते जाने में ही है। इस लिए वह उनके साथ नहीं रह सकते। इसका तुरंत मालाती की सुप्तिया लौट गई।

मालाती रायनीति में प्रैक्टिश करती है और उसका प्रैक्टिश ही बहुत बड़ी सफलता देता है। इस क्षेत्र में प्रैक्टिश करने के प्रयास असफलता क्या है यह मालाती ने कभी जाना ही नहीं। जल्द क्षेत्र में उसने यहाँ डाला उसे यहाँ ही गिला। इससे संदेह नहीं कि यहा और सफलता की प्राप्ति करने के लिए उसने उस तरह सभ्य प्रयास किया और उस गार्थ के अपनाया। अपने वास्तव के बल पर मालाती सफलता के उच्च शिक्षा पर बहुत बड़ी पद्धति गयी। रायनीतिक जीवन में उस सफलता को लिखी दिन्फुस उस धार्मिक-वैभव में अपने बुद्धिमत्त साक्षात्कार का निवाह करने में असल हुई।

रायनीति में अनूठीदृष्टि सफलता प्राप्त करने वाली मालाती अपने ही धार्मिक जीवन में असल ही जारी है। तामाराजिक या प्रैक्टिश और कीर्तिकी की व्यक्ति उसे अपने परिवार से ही तोड़ दिया। उसे अपनी बेटी और बेटे से भी अलग होना पड़ा।

उसकी रायनीतिक भूमि ने उसके परवाह नहीं की किन्तु उसके ही अन्य क्षेत्र के लिए नितांत अहेकी रहती है, तब उसे अपने गुरु और पुत्र का सिद्धांत मालाक्ष लम्बा है।

लघु उपन्यास के विकासात्मक इतिहास में कमलवर्जी की रचनाओं का योद्धानंद हर दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण है। उन्होंने जल्द विचार का नया आयाम और अभाव लो दिया है, ताही ही तात्कालिक तत्काल विषय और शैली का तट है। क्या उन्होंने कहा शास्त्रों में तमाराजिक परिवर्तक को प्रस्तुत करने का प्रयास उनकी रचनाओं का केंद्र बना दृष्टिकोण है।
भक्तचर का यह नवीनतम लघु उपन्यास है। "काली अर्धी" और "आगामी अर्धी" एक तरह अलग हैं क्योंकि वे दोनों लघु उपन्यास निहि गये हैं। अग्नि की तामन्तवादी और पूर्वीवादी सामाजिक व्यवस्था की गलत और धारक तत्त्वों को अपनाकर, तथ्यता के गलिये हेतु इसका ज्ञात इस उपन्यास में हुआ है। इस लघु उपन्यास का नामकरण कमल जीता। अर्थात् उदासी और तद्दि गलत मानों को अपना कर अपूर्व योग का और बीती प्राप्त करने के पर्याप्त भी छुप ऐसा है जो कमल बादु की भीतर दी भीतर बयाजों रहता है, छुप लोग ऐसे हैं जो उन्हें धार-धार याद आते रहते हैं।

आधुनिक शहरों की नवीनता के स्वतंत्र विज्ञानी, इन शहरों में निवास करने वाले व्यक्तियों के हुये वर्ष ॥ उनकी आगा, आकाशों तथा निरागा, आधार और व्यथा सब छुए इस रचना में छूट ही त्वांमारक धरे रखे की फिजिशिया किया गया है। कल्पनार्थकी की इस रचना में देशातील सत्ता के तात्त्व अत्यन्त ऊँची और नोर राजा भी मानवों की तुलना अभिव्यक्ति के साथ खोला। मनुष्य के भीतर जलनी भी अत्यंत और बुरी बातें होती हैं। कहां और दृष्टि के दिन के दिन भी मानव होते हैं उन शहर की अत्यन्त तीव्र अभिव्यक्ति इस उपन्यास में परिषद नही। कल्पनार्थकी ने इस रचना में मानविकी तथा निःस्वाभाविक परिस्थित का विश्लेषण किया है। त्वांमारक प्राप्ति के बाद जीवन के परिवर्तनात्मक बदहृत ही तीजुलता के तात्त्व रंगीलित हुई है। यह उपन्यास जीवन के बदले यह सत्यों की उस पूंछ को प्रचुर बनता है।

"कल्पनार्थक" के उपन्यासों की कथा मूल जीवन के बारे में अपने वास्तविक रंग में विश्लेषित किया गया है। उनकी पत्थर भूमि स्थितियों और पात्रों के माध्यम से विश्वसनीय लाभ है, कहीं भी अवधारित नहीं होती। उपन्यासों का यह परिचय "वस्तु" के मूलक है। उन्होंने अपने तभी उपन्यासों में मानवीय पवन की संपत्ति के दर्शाते पर समझौता और बालकलक्ता को लपेट रहे है।"[१]

आगामी अर्थितें कल्पनार्थक के ने उन व्यक्तियों की पिनदों का अत्यन्त मान्यता दिन किया है, जिनकी आमतौर पर उपयोगी होती है। इस रचना

[१] "कल्पनार्थक" - अगुण हुर्या - प्रकट 2011.
को पढ़ने के पूर्वांत यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने उपयुक्त सहलते विवेक से स्पष्ट करे वाले पाठकों को मुहरित किया है। इस उपन्यास में आर्थिक शुरुआत नहीं करते हैं वैसे तो उन्होंने समाज द्वारा उपयुक्त वर्ग की आमतौर पर आमाओं भरी विवेक से इस उपन्यास में साहित्य विश्व जगत है।

"कमलबीस अपने अब्बासी अंतर्दिवस में कभी की देखावाओं की विनियम से अन्तत्त्व तूलनात्मक वैचारिक विवेक से प्रकट किया है। उनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण विनियम बदल आ गयी है। लेखक ने सहज और उपयुक्त विवेक करके उनकी दास्ताएँ तथा व्यक्तिगत परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है, जो उनकी भावना के ही स्पष्ट हो जाता है।"

कमलबीस अपने तत्त्व उपाधी के बदल व्यक्ति को समाज के तम्मुख परिवेश के साथ अभिभावक किया है। वादकांने के लघु में बिल नारायण पात्र का विवेक कमलबीस ने किया है वह प्रशंसनीय है।

इस उपन्यास का विषय सार यह है- कमलबीस अपनी मां के साथ धार्मिक संबंध में रहते थे। उन्होंने बधाई वर्तमान एवं बढ़ते कपिलाधिकारियों में बीता था। मां ने बड़े मुसिकल स्टाइल एवं अनुभव से प्रकट किया की उन्हीं हैं सब से बड़ी। लेकिन उनकी मां अपनी महत्व का परिवर्तन देखने से पड़े वैवी को बड़ी थी। डॉक्टर की परिप्रेक्ष्य का केवलाराज करने के लिए कमल जनकता के दार्शनिक आया था। ज्यादा दिन उसके पैर में बौछार आ गई थी। उसने बढ़ी हुई अपने वापसी तथा एवं पाल्ला का इलाज करवाया। इसी वैवी उनका परिवर्तन था। वैवी की रूप में बदल गई। दोनों ने एक साथ जीने की प्रारंभ की। कमल ने लोकों के लिए डॉक्टर के वापस करने का उत्साह था। कमल ने 70 प्रक्षाल अंत में फेल डॉक्टर पात्र की। अंत तक बाहर उनके जीवन में अनेकों परिवर्तन आए। माँ की दैनिक रहते में कमलबीस तेजें उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जीवन के अनेक नये राधाकृष्ण दिवारे। कमल तब कूद पुराना पूरा गया। डॉक्टर के अनेक नये राधाकृष्ण दिवारे। कमल तब कूद पुराना पूरा गया। कमलबीस तेजें ने अपने बेटों निष्ठुर के विवाह का प्रस्ताव रखा। कमल बोले ने।

83: 15: 0
बहुत सफल व समृद्ध जीवन का सपना देखा। और विवाह हो गया। विवाह की
पार्टी में वन्दना मोहन के दोनों माताओं का संयोग कारोबार कमल बोस और
नित्यलाल को शादी की सौगात के स्थान पर देने की योजना की। कमल बोस का कार्य-
क्रम बहुत विस्तृत हो गया। और भयानक गड़बड़ गहराई की चिंता मूँ रही गई थी।
भौतिक चर्चा जाने का निर्णय लिया। कमल बोस ने दिनों को संभाला। नित्यलाल को संभाला।
अपनी तैयारी में बढ़ा दिया और आगे बढ़ा। गहराई का काम देखा। न आपले मार्गें दूरी पहुँचते,
विज्ञानों में द्वारिका पहुँचते, विद्वानों से हो रही नई जोड़ों की जानकारी रखते,
पैकिंग और रेपर की प्रशिक्षण देना। विफल का सारा कारोबार।

अब कमल बोस की जीवन केंद्र, कार्यक्षेत्र सब पूरा गया था। वेलिने
परिवारों एवं दोस्तों के साथ। देवी देवी के मार्ग सिर्फ आसान शीघ्रता जीवन
तकनी नहीं हो सका। दास्तांत्रिक जीवन उस घटना से समाप्त हो गया। जब
माताओं ने विवाह की चिंता नहीं की। तब देवी देवी ने शुरू की आरोपक लगा।
नित्यलाल को जानकारी कि कमल बोस वही उपयुक्त घटना के लिए पहुँच के नहीं होते।
वेलिने कमल बोस को भविष्य का प्रतीक बनाता। वे यह भी विचार करते हैं, पर
निपट के अपने प्रशासकों ने नहीं जाने दिया और निपटने के लिए तैयार रहना। वहाँ ओर
शादी की नीति की गोलीयाँ लगी और वह होमर के लिए गई।
इस घटना में कमल बोस तब गया। वे माताओं के फिल्म चलने नहीं रह गया। वे दो हरगीर
उसे बंद का प्रयास करते और उसे दिखाते 
वेलि अपने मिसाल प्रशिक्षण की लहर तत्काल तक की चंद्रा की
कृपा का आगाम करते लगे। चंद्रा के बारे में किसी ने बुझ बताया तो किसी ने
कुछ। नीति घाटी में पढ़ाकर उस्ने पता लगा कि चंद्रा लोग बाहर हुए पागल
होकर घर के बीच लगे थे। नीति ने पिता किसी दोनों चंद्रा का विवाह लंबे हैं, बेहतर
के लिए कर दिया। अब चंद्रा उसे उसे उसे उसे बुझ बुझ बताया था। नीति को
जानकार उसे उसे उसे उसे उसे निपट की चिंता की सार। देवी। तोंडों ने बताया तब वह अपनी बेटी
को देखकर नीति घाटी की गई थी। कमल बोस नीति घाटी की पहुँच। वहाँ
भविष्य का था कि चंद्रा लोग बाहर हुए अनाद छोड़कर घर के बीच लगे थे। नीति
बेटी की बहन भी पहुँच गई। अब कमल बोस के लिए वापसी लौटा था,
उन्हें कार्तिकान भांड़कर बोला आराम करना चाहिए । उन्हें गाड़ी छत्री कर फिर बाढ़े ते लेव बढ़े, तभी तामाने बाढ़े मार्गान ते उसने एक युवती को एक पुल बार पर 
कौट करते हुए देखा तब फिर बाढ़े ते उसे बताया कि यहाँ खेलार मरकर हैं ।

कमल बोस ने शेरांते उस युवती के लिए "यादनी" का संबोधन भी

dun ligha था । उनका तनाव और बढ़ गया । यादनी को झा हाल में देखकर उसे
बहुत कठिन हुआ । उसने यादनी को बेटी बनाकर रखने की बात सोची थी । फिर
यादनी भेजा रेल अपना शरीर में में रखने के लिए तैयार हो गई । कमल बोस ने
तोचा कि वह यादनी ते पूछा कि क्या यह उसकी बेटी बनकर नहीं रह सकती ।
यह यादनी ने धर की और धुंध, तो राहत में ही उससे यादनी मिली । उसके
हाथ में एक मुट्टी-मुट्टी तस्वीर थी । यह तस्वीर अच्छी थी, जो तंगा दे उसकी
स्थितियों से निकाल की थी । कमल बोस ने यादनी के पूछा कि क्या यह उसकी बेटी
बनकर उनका साथ रखेगी । यादनी ने उसका यह आरोह बड़ी निर्मिता से खुशा दिया ।

इस उपन्यास में कमलबाबू ने वासन के माध्यम से पूरी तात्त्विकता दिखाया का
पदार्पण किया है । वृत्तार्थक कारण के कारण के जाने कमल बोस दिखाई देखा बिन्दु
अंत में उसे इस बात का धुर भी है कि जहाँ वह पहुँची वहाँ पहुँचने की बहुत बड़ी
कीमत उसे पुजारी पहुँच । उसे अपनी ही नानान को धोना पड़ा । इसमें वापस आने
की उसकी भाव हैं पर धुर भी करने में असमर्थ है । धुरा और तंग में पूर्ण रूप
पात्र बहुत का देखने को मिला है ।

कमलबाबू ने हिन्दी उपन्यासों को नवी भाषा की निष्ठा अपना
मुक्तांकर है और अपनी अलग पहचान है । विश वादापी वीरान का विष उन्होंने
दिया है वह पाठकों को तदन ही अपना अनुभव हुआ । यही कमलबाबू के
उपन्यासों की अपनी निकी दीक्षिता है ।

हेंड तीसरा आदर्श ।

"तीसरा आदर्श" कमलबाबू का एक ऐसा लघु उपन्यास है जो विना
किसी बनावट के तत्क शैली में किया हुआ है । पति पत्नी के बीच विना "तीसरे
आदर्श" के आने के मध्यकालीन दिनांकों में एक तंग मात्र आपत्ति सम्बन्धों के बीच वैसे
निम्नांकण होता है इसका प्रभाव विना सृंग स्तोत्र किया गया है । यह उपन्यास मात्र
कहानी नहीं है अंतिम मध्यकालीय दाम्भाल की मात्रताओं का दस्तावेज बन पड़ा है। मध्यकालीय जीवन की कुंजटाओं का, रिसोब्वर्टाओं का तथा अवांकी का समाज का पिलं इस रचना में हुआ है। प्रारंभ मुख्य। "मैं" की है लिखा यह लघु उपन्यासों और रचनाओं के लिए दुहरा है। अकाल में लघु होते हुए भी अपने पिलकां और गुण धर्म में यह कृति विस्फोट है। यह कहने जा आदर्श महानगर में आने-आते-आते कॉम नुम करता है इसका सादृश्य चित्रण तेज़ ने इस रचना में किया है।

नरेश मध्यकालीय परिवार का सुपारा था। माता-पिता की आवकांड़ाओं के अनुसार उनका विवाह भारत ताधारण से परिवार की एक दुर्दारियों होता है। बारात में नरेश का मोरा भाई सुमन्ध भी गया था। अतः नरेश होने के कारण विवाह के दिन ही वह पिला यह पिला हो गया था। नरेश किला को अपने घर ने आया। अभी घर के मेहमान भी नहीं गए थे और सुमन्ध हर समय पिला के पास ही बनी रहता रहता था। नरेश की उसकी हर समय की उपर्युक्ति अवसर लिये। उसे वापस का यह व्यक्ति उसके दिल के पथ आया। नरेश की विकार के बाद मेहमान जो गए। सुमन्ध भी दिलाने का गया। नरेश अपने मायके ने नरेश को पता लिखने की। कभी-कभी उन पत्रों में तुम्ही देखता है कि तुम्हारा का पत्र आया था। किंतु अपनी परिवार देखता तुराल लोट आई। नरेश भी अपनी बाहर छोटी काले करा। उसे का ते यह झलकांबाद में अपनी दोस्तों को दूरी ने के लिए कहता बैठना जाने था। यह रेडियों देखता पर आस में बाधा था। एक बार सुमन्ध का पत्र आया। उसने नरेश की बाह ने के लिए कोई नए तलावा था। नरेश और उसके पिला दिली झकर बात की पक्की कर आए। वे और नरेश के दिली तबादले का काम भी हो गया था। नरेश दिली का गया। वह सुमन्ध के करीब में रहने लगा। कुछ बाद यह विकार की भी है आया। नरेश और तुम्हारे बाह में कुछ बात करने और तहाँ-तहाँ बात-पीते। तुम्हारे रूप फैल में काम करता था। उसने तुम्हारे दिला कि यदि विकार की अब करने लगा तो उसका काम भी बंद होगा और कुछ वैद्य भी बन जाए। तुम्हारा यह भी रोटां विकार की पहुँच आया। तुम्हारा पूरा-दिलिंग के लिए काम के आया। उसने नरेश की पूरा-दिलिंग का काम लिखा दिया। विकार उसके ताल में काम करने लगा। दोनों दोनों दोनों दोनों के तंबाकू में
अधिक निकलता बढ़ती गई। नरेश को अनुमोद करने का माजा था। लेकिन उस पर जल्दे अधिक आर्थिक दबाव वे कि वह दिल्ली पैसे बाँटते से अब मजाक लेकर रह नहीं लटकता था। वे तीनों सफ हो कर्ने में रहते थे। सुमन को उपरिवर्ती के कारण नरेश विद्या वे अपने मन की बात भी नहीं कह पाता था। इस प्रकार नरेश अभिव्यक्ति के अभाव में हुई होता गया। अब बार नरेश को अपने काम के तिलकिते में बाहर जाना पड़ा, लेकिन वह भी नहीं वापस था कि विद्या को सुमन के पास जोड़ा जा रहा था। प्रत्येक इतना पैसा भी उसके पास नहीं था कि विद्या को भी ताके ने जाया। उससे विद्या ने बात की तो विद्या ने कहा कि इस की बोर्ड बात नहीं है। वह अकेली भी रह तकरी है। सुमन जब घर आया तो उसे नरेश के बाहर जाने के पारे में पता चला। सुमन ने भी कहा कि वह भी लाल-लाल दिन के लिए आगरा जा रहा है और हो लटकता है कि उसके अधिक समय के लिए भी स्थान पड़ जाये। नरेश यह वात तुरंत निर्बल हो गया।

जब नरेश लौट उसे आया तो उसे शुष्क अत्मागात्मा-सा का। उसे कहा कि उसके पत्नी और उसके बीच शुष्क पैसा है। वह वह बातना नहीं वाकर। उसने पूछा कि क्या सुमन आगरा फाड़ गया था। विद्या ने बताया कि उसका कार्यक्षेत्र नहीं बन पाया। नरेश की परेशानी बढ़ गई। विद्या ने अपनी निःशरीरिता स्वप्न करते हुए बता दिया कि वह तो अंदर अकेली ही तोली की और सुमन बाहर गईं में लोटा था। नरेश को कहा कि विद्या अपनी निःशरीरिता का स्वप्न देखते ही सुमन को भी उसे गया था। सुमन के भी वहीं बात दोहरा दी। तब नरेश को शक हो गया कि शुष्क वात है। अब दिन उसने विद्या और सुमन को बनाया पैसा में साथ-साथ घुमने हुए भी देख लिया था। विद्या सुमन के कोई पर हाथ रखे नहीं कर रही ही। नरेश का मन अब इस तंबाकू के उपर गया था। वह विद्या को साथ-साथ शुष्क कह नहीं पाता था। उन्होंने दिनों विद्या गर्वित हो गई। नरेश परेशान रहने का। उसने विद्या के लिए दिया था कि विद्या परिवर्तित करें। उसने विद्या के लिए दिया था कि वह शुष्क है। नरेश को अपने आप देखकर घर बाहर उससे बहुत शुष्क हो गया। नरेश ने उससे बात की दिया कि वह मां बनाने वाली है। वह तुरंत परिवर्त के बाद पूरी तरह हो गए।
बहुत दिन झाकाहाक में ही बैठ गए। नरेश का मन करता था कि वह नौकरी छोड़ देता है तथा बाहर दिल्ली ही न जाए, लेकिन एक दिन उसके बाबा की स्थल ने पता आ गया कि वह गुस्सा आ जाए। नरेश दिल्ली नौट गया तथा वह अपने मित्र के घर जाता। दिना का घर जाने के लिए नरेश ने सुमन्त के पुत्र में जीत लिया। सुमन्त ने नरेश पर दोष मढ़ा तथा अपने भाईयों के बारे में बता दिया।

कुछ समय बाद दिना के पिता ने नरेश के कार्यालय के पास पर उसे पता देना कि दिना ने पुत्र को जन्म दिया है। नरेश को तनिष्क भी पुजन्ता न हुई। फिर भी अपने मन को उतना समझाया तथा सोश कि यह नए जीवन की शुभावस्त की जा सकती है।

सुंदरी तोड़ कर नरेश ने दिना को पता लिखकर बाहर लौट आने का आग्रह किया। आग्रह को स्वीकार कर दिना अपने बेटे के साथ नरेश के पास लौट आई। दिनाद्वी को भी नए पते की दिना की शुभावस्त की गई। शेष तीन व्रत व्यक्ति का व्यक्ति अपने बेटे के साथ नरेश के पास रहीं।

यही तोड़ के कारण नरेश तामाम जीवन नहीं जी पा रहा था। गुड़के बाने की कहानी गुड़के बना रहा। नरेश ने जीवन शुभ बना रहा।

स्थिति सुमन्त नरेश का तामाम पुढ़वाने आ गया। वह गुड़के के साथ ज्यादा मिल-मिल गया था। एक बार गुड़के बीमार हो गया। दिना ने नरेश को पता दिया। वह नहीं मिला। मिलने के बाद नरेश ने सुमन्त की कुछ निर्देश दिया। सुमन्त ने गुड़के को अस्त्यात्मा में नहीं करवा दिया। उसने गुड़के के लिए बहुत कारण कहा। कुछ दिन बाद गुड़के दिना होकर बाहर आ गया। जब सुमन्त ने दिना मिल गया था।

दिना दुश्मारा नरेश की। नरेश दुसरे बचे की जन्म देना नहीं चाहता था।

स्थिति बाहर तथा तिथियों का बीज होने में सक्षम नहीं था। नरेश तबाही करवा दिना दिने की मदद में करवा जाना था। नरेश ने पतना तबाही करवा दिया। दिना अपनी नौकरी छोड़कर आने की तैयार नहीं थी। नरेश पतना करवा गया। दिना-दिना तबीय बिखर गया। नरेश दुसरे के लिए उसे पतना बुझाने कारण नहीं दिया। अब फिर सुमन्त व दिना साथ-साथ रहने लगे।

यही दिन जरूर नरेश दिल्ली आया। सुमन्त ने कहा-- वह पतना रोकर पत्र पढ़वा। यह में दिना की। अब वह एक बेटी की सांस की वह गुड़के की।

सुंदर घर नहीं बाहर था। तापमान वह नरेश के कारण ही घर नहीं आया था। नरेश दिना के लिए पतना पढ़वा गया।
नरेश को बहुत तिन बाद पता चला कि सुमना फिर कभी भी नहीं लौटा। उसने होटल के कमरे में जाकर आत्महत्या कर ली थी। इस घटना के बाद नरेश को इस बात की खबर हुई। विचार ने भी उसे ऐसा अनुभव नहीं किया।

तारी पीढ़ियों उसने तव्य ही भी गोंड़ी। नरेश सोचता रहा कि पुलिस ने उसे बहुत लंबे काल खोजा। नरेश ने तो दिस था कि वो भांड़ अब आदमी उसके पास आ जायेगी।

तब फिर तो भी जीवन नहीं की सकते थे, क्योंकि तीसरा आदमी उनके दोष था।

इस उपन्यास का केंद्र पारिवारिक दिशा है। मध्यकालीन समाज में जीवन के सामने हुकुमदार प्राप्त करने की इच्छा ही संयुक्त परिवारों की संभा को लोट रही है। यहाँ भी परिवार एक लौंदकित झाँकी के लिए मृत्यु में उभरा है।

इस कहानी में साकार की ग्रंथि की उपस्थिति है। यदि नरेश के मन में सुमना को खेल गृंथ न बनी होती, तो नरेश और सुमना के संबंध इसने तलाव पूर्ण न होते। विचार के बाद ही सुमना की उपस्थिति नरेश की आँखों में प्रवर्तित हो गई। तमाम बीतने के तारह ही वह बातें बहुत गईं और इसके परिणाम सुनकट प्रकट हुए। सुमना ने भी समझाए इसी ग्रुप्ति के दाहिने होने के कारण आत्महत्या करती। इस उपन्यास में अधिक मानव जीवन की निराशाजन्य पताकन्याविदिता उभर कर तमाम आई है।

प्रथमाय मधुचर्या का कहना है कि-"सन्नातारी परिवार में जन्मे हर लोग का अपना स्वयं का स्वतंत्र अभिव्यक्ति नहीं होता है। उसके पूरे दर्शक तव्य के अन्तर्गत जारी है। यह चुप कर जाए तो वे जीवन में जीवन का जीवन का धरण उस दृश्य का स्वतंत्र अभिव्यक्ति नहीं होता है।"।

उत्तराखंड के शैली में और तात्कालिक भाषा में लिखा हुआ यह लघु उपन्यास कल्याणी और मध्यकालीन पुस्तकों की एक पृष्ठ है। इस कहानी के रूप में तमामे आता है। डिल्ली के विशाल काल्नार में जीवन के दूरदर्शी और बिखरे मृत्यु को यथार्थता ने फिर कही ही तुलाद अग्नि तस्तुत किया है। कपालबंधन के नहीं लघु उपन्यासों में तात्कालिकी और संयुक्त-शैली के कारण तीसरा आदमी एक लघु उपन्यास लघु उपन्यास माना जाता है।

हिन्दी लघु उपन्यास - प्रथमाय मधु - पृष्ठ 70.
पति पत्नी के तंबेदङ्क इस इतिहास के होते हैं कि उनके बीच तीसरा आदमी आने के लिए इस निर्माण के निर्माण का अभियान हो जाता है। वे उसे लहर नहीं कर पाते, तीसरे के आने के जीवन में अर्थशास्त्री नहीं देते हो जाता है। मनुष्य के जीवन में यह क्यों होता है इसका माध्यमिक विनिमय कम्प्लेक्सरी ने इस रचना में किया है। "तीसरा आदमी" के लिए लेख का यह लघु उपन्यास वार्तालाग्न आर्थिक और तामाराजिक परिस्थितियों के अध्ययन पर मध्यकालीन व्यक्ति की पेशकश के दल का विचार है।

लसूत: यह स्थिति किसी व्यक्ति का परिवार की नहीं है। अनिश्चित आज के निःशुल्कता तथा मध्यकालीन समाज की ही है। कम्प्लेक्सरी ने इसी कारण मध्यकालीन पारिवारिक जीवन का यह उनकी समस्याओं का पिंचा किया है।

समाजनीय जीवन के विभेदित और विचित्र लघु की तरह अभिव्यक्ति मिली है। जीवन का खुद संघ अनेक तत्त्वों पर इस रचना में विनिमय हुआ है और यह इसकी विवेकता है।

तमुड़ में बीया हुआ आदमी :-

"तीसरा आदमी" की तरह इस लघु उपन्यास में भी कम्प्लेक्सरी ने शहरी जीवन के विवरण के द्वारा और दूर की अभिव्यक्ति किया है। क्योंकि शहरी जीवन का मूलाधार अब है और मौका का नीति अब मूलु कुल है। सामाजिक आदमी के जीवन के संबंध का उनके आयामों का परिचय इस रचना में और भी अधिक प्रभावी हुआ है। इस लघु उपन्यास का पुस्तक वाला प्रत्यय संज्ञान है। जब आयामों के लिए हुआ वह वेतन आर्थिक और सामाजिक जीवन की तलाश में है। "स्वतंत्रता के बाद लेख दूरदूर लेखकों के लघु उपन्यासों में भूमि कोई नगर लघु उपन्यास दिलवाई नहीं देता किसी परिवार के उनके पुरातनों के आंतरिक या बाह्य संबंध को पूर्णता विस्तार और गहराई के पिंचा किया जा तक हो और जो इसना प्रभावी भी हो पिंचा कि "तमुड़ में बीया हुआ आदमी"।"

विलिपरिवार और परिवार के जीवन संबंध का पिंचा इस लघु उपन्यास में हुआ है वह मात्र दिलवाई का ही नहीं है अथवा यह भरत का कोई भी नगर हो

[8] डॉ० वीरेन्द्र तांकेना - "कम्प्लेक्सर" - नंबर-110.
[8] डॉ० वीरेन्द्र तांकेना - "कम्प्लेक्सर" - नंबर-190.
तक्ता है। इस उपन्यास में श्यामलाल अपनी पत्नी व बच्चों के साथ दिनली में रहते थे। वे सिंधी के द्वरारोपण कंपनी में काम करते थे। एक दिन रोड पर सातारा की घोरी गई। इसी कारण श्यामलाल को दूर रहने की दिन नौकरी ते बरकार कर दिया गया। इस समय उन्होंने दो बेटियाँ तारा व समीरा व एक पुत्र बीरेन भी थे। जब तक श्यामलाल को नौकरी से निकाल दिया गया था, तब तक उन्होंने आर्थिक हालात दिन प्रति दिन बढ़ाती होती गई। मफान का क्रियात्मक कुछने के लिए उनके पास तुरंत भी नहीं था। धीरे-धीरे मफान का क्रियात्मक बढ़ता हो गया। इससे दिनों हरबंक नामक पुकारा आना-जाना शुरू हुआ। हरबंक मिलाये, चादरों, ताड़ियों व अन्य कपड़ों पर पूरा-पूरा हुआ करने का काम करता था। तारा व समीरा उसके बाहर बाहर थीं। लेकिन श्यामलाल को अपनी बेटियों का व्यक्तित्व तथा हरबंक का आना-जाना अच्छा नहीं काटता था। बड़ी दिनों बाद तारा हरबंक की हकीम में उल्लेख स्थायी प्रति माह पर काम करने लगती है। धीरे-धीरे घर की छोटी-मोटी बरसात तारा ही ताने लगी। और ज्यादा पुकार श्यामलाल तारा को चालीस स्थायी देने पाने और ज्यादा के साथ केवल देता है। “ऐसे घर को सीधी चालीस स्थायी माह में देता है। धीरे-धीरे पुकार नहीं जा तकता सीधी बदास्त फिरिया चा लेता है। जिले तहा भी नहीं जाता सीधी होने को महसूस किया जाता है।”

श्यामलाल को यही आता था कि बीरेन कुछ कामि से लेना तो घर की हालत सुधार जासे। बीरेन तारे घर का केंद्र सिंधु था। घर के सभी प्राप्तियों की सिग्नेशियाँ उस पर ही ठिकी थीं। एक दिन बीरेन नीतिना में पुनः फिरवा गया और वह अपनी नौकरी के लिए सबूत पर लगे गया। बीरेन के कोई जाने पर घर में तनावत-सा छा गया। हर महीने बीरेन पिता के नाम मनीजादर कर देता था। तारे ऐसे सीधे आठ-दस दिन में दी करत देते थे। एक बार श्यामलाल घर में न दोनों के लाभ डाकिर ने मनीजादर किसी और को देने से मना कर दिया था। तब तक श्यामलाल ने बीरेन को पता लिखकर मनीजादर मार्ग के नाम ते देने के लिए झूठ तक बैठे आया पूरा समय ब्यूटी भते के थे। लेकिन उसका बयान

“समूद्र में बीयाँ हुई आदमी” — कमलेश्वर — पुष्टि-13.
यह ठंगा अधिक दिन नहीं जल तका।

तारा ने हरबंस ते स्पष्ट कर लिया। बीरन को भी दक्षिण ध्वनि अभियान दल में शामिल कर लिया गया था। तारा के जाने के बाद आमदनी में बहुत कमी आ गयी थी। बीरन के मनीजामर भी आने बंद हो गए थे। बीरन पत्र में लिखी हुई तारीख व गाड़ी से नहीं पहुंचा। तब घर में सभी परेशान हो गए थे कि बीरन कभी नहीं आया। पाँचों दिन उनके घर एक आदमी पहुंचा था। उसने बताया कि बीरन कभी चला गया था। उसकी घनगनी जहाज की रेसिप्स के पास पड़ी थी। वह जहाज में नहीं था। उसकी बहुत तलाश की गई, लेकिन उसका कुछ पता न काय। यह बात तुनकर घर में रोना-पीटना मच गया था। तारा और हरबंस को भी पता चला तो वे भी बहुत दु:खी हुए। बहुत दिनों तक बीरन की तलाश जारी थी, पर उसका कुछ पता न था। एक दिन सरकारी जाने की भी आ गया। हरबंस तकी समझाता रहा कि समृद्ध में लापता हुए लोग भी बससे बाद लौटकर आए हैं।

समी सदस्य पूर्वे बीरन के लिए प्रार्थनाएं करते थे। पुलिस बीरन की पूर्वावधि के लिए श्रमालाल के घर आने की। पुलिस लोगों ने बताया था कि नेवी वालों का ब्याख्या था कि बीरन नौकरी से जी चुराकर कहीं भाग गया है। श्रमालाल ने बीरन के लिए सरकारी दक्षताओं के बहुत चक्र काटे। धीरे-धीरे तब आगाम दस्तावेज हो गई थी। पुलिस अपना काम बल्कि कर पुलिस थी। नौकरों के अधिकारियों ने पत्रों बंद कर दिया। श्रमालाल ने एक फैक्टरी में दरवान की रात की नौकरी की लोग नहीं थी। रात को श्रमालाल झुकी घर बैठे थे। इससे समीरा और उसकी मां के बेदङ्गा मजबूर करने लगी थी। हरबंस ने समीरा को नहीं के कई बार में भस्मी होने के लिए तेज़ार कर लिया। हरबंस ने अपने तास-शूरु को समझाया कि वह बीरन को मृत मानें तथापि तर्क के उत्तर पता चला था। समीरा हॉस्पिटल में जाने की आई थी। तारा मां अंजी होने के कारण अपने घर न गई। हरबंस ने अर्ज़ी देकर फिर से कह बुलाया। बहुत दोहर धाम की किंतु कुछ नहीं हुआ। एक दिन पता
कहा कि बीरन ने अपनी दर्शन खुद यात्रा अभियान के पांच महीनों की तनावबाह नहीं ली थी। अब वह तनावबाह व बीरन का सामान मिलाते बाला था। फिर दिन तारा सामान मिला, उस दिन श्यामलाल की पत्नी बिलब-बिलब कर रो पड़ी और सभी ने समझा था कि जो लौट कर आरे वाला नहीं है, उसके लिए हुँक बोले फिर मार। यह तो कहार ही तब कर अपने-अपने कामों में मस्त हो गए।

बीरन के समूह में जो जाने है तारा परिवार ही मानों समूह में बो जाता है। हरबंड, श्यामलाल और रसिम को बीरन की मौत स्वीकार करने को कहता है जिसे उसका मुआवजा मिल लें।

इस कहानी उपन्यास में गहरी निम्न मध्यकालीन परिवार के विचार की कथा है। वह तमाम समान के बदले भ्रतितत, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप में इसमें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें न तो कोई आदर्श है और न ही कोई तमाम सप्ताह की दृष्टि से अभिव्यक्त किया है। और इस विचार में उनकी भावा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है जो समूह की स्थिति को पुनर्कर कर देती है। उसमें ताराकेतन, कुकु धार्मिकता, पूर्वाकालिक आदि खूब सध्य ही मिल जाते हैं।

इस कहानी में आर्थिक संध्य के कारण विवाद उपन्यास हुआ है।

आधुनिक परिवेश में आर्थिक दबाव परिवारों के शिकार में इसकी शादी संस्थायें तथा किंगसियां पैदा कर देते हैं कि व्यक्ति संबंधों के अंतर्क ही नहीं पहचान पाता तथा उसे लड़के चार्ट ही काला है। **"समूह में बोला हुआ आदर्श" एक शब्द में निम्न मध्यकालीन परिवार के विचार की कथा है।** यह बाद उस घुसों, परेशान होते और ट्रुटर के और विचार परिवार का प्रत्यक्ष प्रस्तुत करने और उसके माध्यम से वर्तमान समान में बदले हुए व्यक्तित्व पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप में रखने का प्रयास करती है। अब उस मध्यकाली का दृष्टि फुटार अपनी अधिकता बोरी आधुनिक समय की भीड़ के एक महत्वपूर्ण ओर में स्पष्टता होता जा रहा है।

---

1. "कमलेशवर" - कुण्ड बुड डिया - पृष्ठ 217.
इन उपन्यास में नारीकरण की भ्रामकला, महंगाई, आर्थिक दबावों
की असहनीयता, अंतरजातीय विवाह, लड़कियों का नौकरी करना, माता-पिता
का बच्चों पर आर्थिक रहना, प्रभावन की तनिकम्पता, ताल की जीवनशैली के पिता-
पुत्र के संबंध की सार्थिकता खेल आर्थिक रूप से अधिक गंभीर है। इसके बाद:
इन उपन्यास में आदमी का समुद्र में बो जाने का प्रतीकाय आर्थिक दुर्भागा-मेरे महान-
नागरिक जीवन में मानवीय तरीकार ही नहीं पारिस्थितिक तरीकार तब का बी
जाना है।

लौटे हुए मुसाफिर

देश के विवाहानुष्ठान को लेकर फिरा गया क्योंकि तरीका का यह प्रमुख लघु
उपन्यास है जिसमें अर्थधर्म की भ्रामकला और बुन खाने का यथायोग लघु में प्रविष्ट
हो गया है। यह एक दूसरी रचना है जिसमें निम्नवर्ग और छहरी जिन्दरी की
प्रविष्ट किया गया है। ये लोग जो आजादी की लड़ाई में पाथ वह बटवा हो ते
एक दूसरे के हुमन हो गये थे। इन उपन्यास में लघु का विवाहानुष्ठान के संबंधित है।

एक बस्ती थी, जहां हिंदू और मुसलमान भिन्न कर रहे थे। लोग
समुद्र थे और चारों तरफ प्रेम भिक्षु व शांति का वातावरण था। जब आज़ादी
की लड़ाई कर जाती वही ना, तभी एक बाँड़ आया। उसमें आग भी हो। उसी
आग में जल कर यह बस्ती बरबाद हो गया।

जब इन बस्ती में नसीबन और जुम्मात ताई हो बचाने वो थे। पलटे
जब यह बस्ती भरी-पूरी थी, तो जुम्मात ताई का घर बस्ती का केंद्र था। वह
गाँव का आध्यात्मिक आदर का महा जाता था। वह उसके क्षेत्र में लड़ाई-शांत की निपटाता
था। उसके घर में लोगों की बीड़ लगी रहती थी। नसीबन विश्वास थी। अपने
बच्चों का हैं। बच्चों का बच्चों का पालन कर रही थी। बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की बच्चों की
वाने तांडे जुम्मा तथा अणु अन्य लोगों ने उसे जहां भला-पुरा कहा, लेकिन वह अपने मानव धर्म ते नहीं हटी। धर्म-धीरे लाखवत्ता की आग इतनी बढ़ गई कि हिंदू संग्रह बन गए और मुसलमान भी हिंदूओं के बबटर हुमान हो गए। समझे के पति मकबूल के ताब आप यासीन मिया ने ही मुसलमानों को धुकाया।
आजादी के ताब ही देखा का पिचायन हो गया। लोग पाकिस्तान को गये।
बस्ती उज्जाद हो गई। बस्ती में सिर्फ नसीबन व तांडे ही रह गए थे। बस्ती का तानी वाला इंसान जी-कभी बस्ती देखने आता था। वही नसीबन को सब लोगों की खबर देता था।

इस दिन बीतते जा रहे थे। तांडे को कहता अगर नसीबन भी बस्ती छोड़कर चली गई तो वह अकेला ही रह जायगा। नसीबन ने उसे सोचा कि वह इस भिडित को हांड़ कर बचाई नहीं जा सकी। उस दिन कुछ नसीबन आये दिखाई दिए। उन नाज़िकाओं के जुम्मा तांडे की बोयार के बारे में पूछा। उन नाज़िकाओं के बताया कि उन्हें पाताल लोई कुंड की बुदाई का काम मिला है और वे इस रोजगार के मिलने पर अपने रहने का प्रयास करना चाहते हैं। नसीबन उन्हें पहचान गई थी। उन नाज़िकाओं बच्चे के बेटे थे। उन्हें उज्जादी बस्ती में छुप गए। उनके मकान दिखाया। फिर उसे कहा कि तुम्हारे इन लोगों को रहने के साफ बना केना और उसने रात का अपने घर से ज्यों-पूर्व मातीया दरियां व बोरे उन नाज़ीकाओं को खोने के लिए खेड़े के नीचे बिखरा दिए और वह तुम्हारे की रात कर गई। बस्ती में कोई रहने आया था। इसलिए नसीबन की पूरकीया पूरी हो गई थी।

पिचायन की नाचदी मे फुआ इस उपन्यास में आपसीता का पहला तूफान आये। आजादी के बाद हुआ आयोगीकरण इस बस्ती के इलाज लीजिने मुस्लिम हो गए। वाक़ी लग गई थी और समाज में नए कर्म बन गई थी, "कुछ होट-होटी महिलाओं शहर में आई। दर्द-उद्धर कुक-कुक करनेवाली धक्काया का गई और हर दरार माती। ताहब लोगों का काम करनेवाली चाहूरा जाति का। यह ख़बर और बढ़ गई। वह तब का अपने-अपने घरों पर हिंदू मुसलमान या लेकिन ताहब के साथ में सिर्फ नौकर था।"।


dd  "लौटे हुए मुस्ताफ़िर" - कमलेश्वर - पृष्ठ-2 - प्रकाशन-1978.
साध-साध असतारावरी मध्यकर्ण के उदय और तांत्रिकता के विषय से स्म आध्यात्मिकता पुनः हुई है | यद्य पर साधारण जन मानस के मानसिकता पर स्म प्रकाश डाला गया है | धर्म के नाम पर गलत प्रवार करने वाले लोग साधारण लोगों की अनुसन्धान में पंजं कर गुमराह करते हैं | वस्ती के सीधे-साधे लोग जो हिंदू मूलभुत मूल मूल कर रहे हैं, लेखिक तत्त्व के पाठ के तात्त्व अद्वैत पातित्त तथा हिंदूओं के संगी कार्यकारिणों ने हिंदूओं व मूलभुतारों के बीच दरार पैदा करने का परा प्रवार किया और वे तक भी हुए | सत्तार पर स्म यातीन के मामले का आर हुआ | पकड़े तो सर्व लोग अन्यरूपों के फ़ूसटो होकर नज़ारे हुए थे लेखिक भड़ताने वाले मामले के साथ स्मता में शीर्ष भी हुए | कर्म जिसे होने के अन्तर को ही स्म बनाता है, तथा अन्य हिंदूओं के साथ भिड़कर अन्यरूपों को मारने में मदद कर दें । धर्म की आड़ में राजनीतिक अन्ये उद्देश्य पूरे करते हैं | 

इस तब के बाकू भी एक है का कर्म भी था जो यह सोचता था कि पाकिस्तान बनाने के बाद उन्हें कर्म लाभ होगा | यह सोचता था कि उभारी तो यह यहाँ भी शुल हो获得感, पाकिस्तान बनाने के बाद भी उन्हें उभारी ही शेल्श्न पड़ेगी।

इस गाव नाम का प्रभाव पूरे मातामातर पर पड़ा | लोगों के दिलों में दक्षा भर गई थी, “माने पढ़ाने लोगों के मुद्दा चेते जा रहे थे वे जिन्हें देखकर अभी तक जीता आया था जिन्हें धारा और असांवत था | यह तब कहा हुआ है । लोगों ने एकार दे चढ़े उतार कर क्यों प्रेम दिया है चूँकि कहा है!”

इस कहानी प्रदर्शन के व्यापार अन्तर्गतित में व्यापार अन्तर्गतित में हुआ प्रभाव भी स्फुट लम्बे तक उभरा है | धर्म पुरूष के दारोगा की रिष्टा देता है अलेक्स के तब भी उनका पेट नहीं भरता और वह बार-बार धर्म की घोरी के केल में पंजा देता है । इसके अतिरिक्त वह मध्य शराब का वैद्य काम करता है लेकिन यह काम यह मध्यी पुरूष को साधारण तरह से ही करता है तथा उन्हें शराब भी देता है और रिष्टा भी, लेकिन रिष्टे भी वे लोग उसे बार-बार फिर करते रहते हैं।

आजादी के पूर्व विभाग के तलक खत तौर पर सर्वी पर द्वारा हुई

धी किंतु गारूणिकान्ता जानने ते सबको बड़ा झटका लगा। लोटे हुए मुसाफिर के रूप में आजतारी के बाद जली या बेहोश हुई पीठी में ते कुछ ने अपने-अपने चिनाने खोज लिए और अधिकतर भट्ट गए। यह मृतक नयी पीठी की फिरतात में हासिल हुई। इस रचना के अन्त में लेख ने कहा है—"नसीबन कुही से रो पड़ी थी। वे तब बसी, बाकर रमजान कोरत ज्वान होकर लौट आये थे। नसीबन उन्हें अपने तार ले गयी थी—उन निमानों के साथ जो उस भी बाजी थी।"। ।।
कमलेश्वर के महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में ते यह एक है। डॉ सिन्हा के शब्दों में—
"लोटे हुए मुसाफिर में आस्था, आत्मस्वीकार, चक्कवारण, केंद्रीय मार्ग, दाशील्म स्वरूप विचार निर्देश का जो उन्होंने महान तन्द्रा दिया है वह आज के पत्रिकाएं में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस लिए ज्ञ पीठी के व्यक्तित्व उपन्यासों में कमलेश्वर का यह उपन्यास विशेष उल्लेखनीय हो जाता है।"। ।।
भाषा की तटस्थता ते यह एक अत्यन्त सौदकरण तथा साहित्यिक सफल लोट उपन्यास है। जिसमें कमलेश्वर जी ने आम आदमी की भाषा को प्रयोग किया है। "वस्तुतः कमलेश्वर लोटे हुए मुसाफिर में उन आश्वासनों की बाधा को आयार बनाया है जो केवल अपनी लोकी रोटी के लिए संबंधित थे, परन्तु सांग्राह्यकारिता की नहर में वह गए और यही आदर स्थाय नह हुआ तो और न न ही लौट कर वापस आ ले। अन्त में जो लोग लौट कर आये वे मजबूर बनकर आये।"। ।।
इस उपन्यास में दलित राजनीति का अंतर तेज़ विचार है, जो हिंदु सांग्राह्यकारिता से संबंधित और मुसलिम सांग्राह्यकारिता के पुरातन का विरोध करता है।

8। वही बातः—

कमलेश्वर द्वारा लिखित "वही बात" उपन्यास उनकी एक तत्त्व, तत्त्व व सांग्राह्यकारिता कृति है। इस उपन्यास में घटनाएं एक सांग्राह्यकारिता कृति में घटित होती जाती है। इस उपन्यास में सफलता प्राप्त करने जाने की मानवीय प्रश्नता का सफल निवृत्त हुआ है। आधुनिक चरित्र जीवन में नाम कमाना, सफलता प्राप्त—

8। पृष्ठांक — पृष्ठ-109।
8। डॉ सिन्हा - "हिंदी उपन्यास उद्धव और विकास" — पृष्ठ-558।
8। "कमलेश्वर" — कृष्ण कुडूडिया — पृष्ठ-208।
करना तथा उत्पादक पद को प्राप्त करना ही अपने जीवन का उद्देश्य त्वरित कर लेता है। इस दौरान में वह जीवन को महत्वपूर्ण आदा दावा करना देता है तथा स्वाभाविक रूप से पारिवारिक तंत्र में की और अद्वितीय ध्यान नहीं दे पाता। इसके कारण अंकलापन बदता है और यह अंकलापन आक्रमण कर जाता है तथा पारिवारिक तंत्र दूर जाता है। इस उपन्यास का नायक प्रासांत भी महत्वपूर्ण है तथा सफलता प्राप्त करना चाहता है।

इस उपन्यास का कथानाट हेतु प्रासांत है—

प्रथम इंजीनियर प्रासांत अपनी पत्नी तमिररा को बनमई से बहुत दूर तक पहाड़ी प्रदेश पर एक बाधा बनाने के लिए अपने साथ ले जाता है। इंजीनियर तमिर ने उनके राजन का प्रबंध चार इंजीनियरों में करवाया दिया था। प्रासांत ने बांट दी हुई प्रक्रिया काम पूरा कर दिया था। जब बहुत दूर सूर्योदय होने की कगार ते समीरा का मन भी बड़ा लग गया था। खुश-खुश में तो वह भी प्रासांत के साथ करी जाती थी। परंतु धीरे-धीरे काम बदता ही गया और प्रासांत को बाधा पर काम के लिए देर तक झुकना पड़ने लगा। बाधा बनाने के लिए यह बहुत दूर जाता समस्या आ रही थी कि उस स्थान में वह हुए आदिवासियों के गांव प्रोजेक्ट पर करोड़ों सप्तय बर्ष किता जा चुके थे, पर उन आदिवासी लोगों ने गांव बांटी करने से झंकार कर दिया था। आदिवासी गांव बांटी करने को जरा भी तैयार नहीं थे। प्रासांत ने नमूना को आदिवासियों को समझाने का काम दिया गया था। इन तब मामलों को लेकर राज्यपाल व ताइट के बीच प्रासांत के चक्कर शूरु हो गये थे। समस्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी यहाँ तक कि यह खरा भी फैल गई थी कि आदिवासी अपने हिस्सियों में लेकर हीन बाधा काटती थी। धारा को है।

प्रासांत पर विभेदारियाँ बांटने के कारण तमिर्या धीरे-धीरे शूरु होती जा रही थी वह तारा दिन शूरु में रहती। शूरु के दिनों में तो वह प्रासांत से पौने पर बांट कर बते था प्रासांत पौने कर देता पर फिर प्रासांत की रोशनी ही देर हो जाने लगती थी। यह प्रासांत को भी यह अनुभव होने लगा था कि उससे विरोध रहने लगी है।
नकुल ने अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाई और बहुत लघु प्रयासों के बाद आदिवासियों को गांव खाली कर देने के लिए राजी कर लिया था। इस तरह दौरान संभवतः उसके कई वोटे आई थी, पर सब समय से तुलना गई थी। इस तरह प्रारंभ के कदमों को डेढ़ने वाले नकुल ने समीरा के हृदय में अपनी जगह बना ली थी।

प्रारंभ ने रिपोर्ट द्वारा सभी अधिकारियों को प्रसन्न कर लिया था। नकुल की जगह तारे कार्य का तेज़ उसने अपने सिर पर लेना था। इसी दौरान नकुल के तहत ग्रांथ में एक बहुत बड़े मार्ग में स्थान पाने की प्रारंभ की लागता आया था और इस सब की प्राप्ति करने के लिए वह समीरा की इच्छा न देखने के बाक्कुद भी दिल्ली से रवाना हो गया।

प्रारंभ के दिन ह्यू स्लेपन में समीरा ने नकुल से अपनापन प्राप्त कर लिया था। दिन बीतते जा रहे थे। प्रारंभ नया स्थान प्राप्त करने की पूरी कोशिश में जुटा था और समीरा धीरे-धीरे नकुल के निकट आती जा रही थी। और एक दिन समीरा ने स्तंबे बाँधों में प्रारंभ से कह दिया कि अब वह नकुल की हो चुकी है। नकुल को उसी दिन नरी नौकरी में नियुक्ति मिल गई थी। और प्रारंभ का जाना भी निरंतर हो गया। प्रारंभ समीरा को नए जीवन की शुभकारणों के साथ छोड़ कर विदेश जा गया। प्रारंभ अपना घर व घरों के लिए छोड़ कर चला गया।

नकुल व समीरा ने शादी के बाद अपना पुराना घर भी बदल लिया। क्योंकि समीरा का बधाई का अतिरिक्त व्यक्ति रहता था, लेकिन नए घर में आने के बाद भी उसका मन नष्ट होता था। नकुल की व्यवसायिकों के कारण उसके जीवन का ओबिलियम भी बदला जा रहा था। जगह बदल लेने से भांत संदर्भी भी कभी बदल नहीं होती है। वह विदेशी की जीनों की वजह से सिर्फ तभी रही थी।

उन्होंने दिनों प्रारंभ को दोनों ताबिक पर जाकर देने के लिए भ्राेना गया। प्रारंभ जब आ रहा था तब उसने समीरा को देखा था। समीरा ने भी उसे देख निया था। प्रारंभ निरंरुष करके शीघ्र ही वापस लौटना यात्रा था। प्रारंभ नकुल के घर के आगे से खुश रहा था। समीरा गेट पर खडी थी। प्रारंभ
ने समीरा का बाल पूछा और अपने संगीने पर आ गया। बाइट लीटर प्रागांत यही लोकता रहा कि उन्हें समीरा से बात क्यों की। नकल ने प्रागांत को शाम के बाद पर बुझाया। अगले दिन प्रागांत वापस घर रहा था तव समीरा और नकल की आते हुए देखा। वह हैरान हो गया। समीरा उसके लिए रात्रि की खाना बनाकर लाई थी। उस तरह समीरा ने प्रागांत का बनाया और उसे खिला करते वका नकल और समीरा की आख़िर नम थी।

आंधमित्त सम्पत्ति ने संसूर वातावरण में ही अपने बनावटीपन घोषित दिया है। मनुष्य को क्षीण प्रागांत में भी जीवन का स्वप्न अनुभव नहीं होता। फिर निविद्ध बारदारी पर मानव जीवन की। मानव जीवन को देखने के लिए विभिन्न भारतीय प्रागांत का तहारा लेकर जी रहा है। जीवन में उस समय होते जो रहे रखते को कमीसर ने बहुत हो सहज अभिव्यक्ति दी है- "कंगाली कहाँ के संबंध से बंदनवार की तरह लक्षे तारामंडल में यहां यहां कमाया हुए पीली मरियाम रोजीन्स के बच्चे बिबाह के संकाल को शिक्षा रखे हुए थे।"

यह जबानी लिखी भारतीय जीवन के ऐतिहासिक के पिछ देखकर है। बांध बनाना मानव की उपलब्धि है। उसके लिए निर्दयता से प्रागांत का स्वचालन रूप को लोकता पहुंचा है। शंघय प्रागांत भी मानव है बदले ले लेती है। उसका घर लोकस्थ और परिवार की टिकानी भाग है। उसका घर लोकस्थ और परिवार को हर वातावरण में आपसिक बौद्ध तलाश और परिवार के नए सामाजिक सूत्रों से उदित होता है और अपना उत्तरक प्रभाव करता है। भारतीय समाज का यह विश्वक जीवन संरेख देख है कि वह न ही असामान रह पर रहा है और न ही व्यापार की पहचान अतिरिक्त के प्रागांत नापाली और व्यापार के प्रति सांस्कृतिक और भाषाओं के प्रति प्रेमिकानुष्ठान से लक्षित होती है। समीरा प्रागांत को छोड़कर नकल के फास आ जाती है देखने पूरी तरह प्रागांत को नून भी नहीं पाती। रोमांटिका और व्यापार के बीच की रिश्ते समीरा के वरिस्त के द्वारा व्यक्त हुई है। इस दृष्टि से पर्याप्त भारतीय नारी ही रह पाई है। इस दृष्टि से आवरण की बहुत बाहर को जीवन-संबंधों ने भी बढ़ाया है और अपने जीवन को बदलकर देने की जी-तोह की स्थिति में की प्रागांत।

"बहु बात" - कमलेश चन्द - प्रकाशन-1982 - पृष्ठ-5.
और समीरा के संदर्भ में भी इस कर्मिता को दोहराया है। समीरा घर में
सार्थकता बोलना यादती है और प्रशांत अपनी नौकरी में अधिकारिक आगे बढ़ना
चाहते हैं। दोनों को इस वेताशी में दाम्पत्य-संबंधों को यथार्थ लेते हैं। अधिकारिक
जीवन की यह सामान्य परातिथिक विषयों में घटनादीदृश्य है और विघटन की
यह पीड़ा पूरा उपन्यास में बहुत गहराई में व्याप्त हो गई है।

[19] तुच्छ दोषबर गाम्य:

इस उपन्यास का कथानक परामीति भारतीय पत्रिका की कहानी है।
उस समय के समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक
परिस्थितियों का चित्रण इस उपन्यास में दिया गया है। धीरें भारत को अपना उपनिषादिक
वन बूक थे। तत्त्व जनरल के लिए अत्याचार बहुत बढ़ गए थे तथा अपनी
तुलिया के लिए आयोजनों ने भारत में रेल का आरंभ किया था। रेल के आरंभ होने
ते भारतीय जनजाति में अच्छी मंज़ी थी। भारत के लिए रेल एक अन्य तो थी,
लेकिन दाताएँ की कीमत मन में बढ़ती गई थी, जिसका किरण इस
उपन्यास में दिया है।

जलवाता एक ग्रामीण परिवार का बेटा था। जलवाता को गंगा में
रेलगाड़ी जा देने की नौकरी मिली थी। रेलगाड़ी पड़ती बार गूँदा गई थी। आँ:
जलवाता की दादी को बहुत आरोप लगाया था कि रेलगाड़ी का क्या दोषी होगी?
कौन होगी? उन्हें क्या था कि यदि जलवाता रेलगाड़ी जा देने जाया तो
अस्तित्व की यह उपाधियाँ हो व्यक्त। दादी नहीं खुशी थी कि जलवाता रेलगाड़ी
बजाने पड़ा। जलवाता तब तक से अपनी दादी को समझाने का प्रयत्न करता था,
कि रेलगाड़ी की नौकरी लेने से उसे बहुत अच्छा वेतन प्राप्त होगा। दादी मां
को लगता जलवाता अभिभावक के लिए करने जा रहा है। जलवाता को इस बात का
आरोप लगा कि दादी मां अपने नाती बहू की तरह हुए भी अभिभावकों
और उनकी लाभतिक होती है कि दादी मां से तो लोगी दी नहीं है। जलवाता अपनी
दादी की लाभमात्रा में समझता
था। उसे पता था कि उसके दादा १८५७ ई. में राजा साहब को बचाते हुए
तहत हो गए थे। जलवाता की बुझ कलातिता का पति भी अभिभावक का गुलाम बन
गया था। अब तब से दादी ने अपनी बेटी कलातिता से गुलाम किया था।
दादी सीखती थी कि उसकी बेटी व दादानन्द ने गद्दारी की है। पति की मृत्यु के दुःख से और बेटी के हाथ से निकल जाने पर दादी के हृदय में गाठ बन गई थी। अंधेरा झुकाया से वह बदला लेना पार करने थी और उसे दिखाया था कि उसका बेटा कभी न बनी जबर बदला लेना। लेकिन उसके बेटे से तो दुःख न फिरा। जब दादी को अपने पोते जाना से बहुत आशर्य थी लेकिन उसने जब रेलगाड़ी की नौकरी करने का हाथ फिरा तो दादी का मन दुख गया। और जवाब अपनी नौकरी पर काम गया। जलवत की तात्कालिक बेटी शांता पर इस सारे घटनाक्रम का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था।

कुछ दिन अवाक दादी घर से गई गई। बहुत बोझकर रहने पर भी दादी का खुश पता नहीं किया। जलवत और उसकी पत्नी गहर में रहते थे। जलवत की बेटी शांता उसके साथ जाने को तैयार नहीं हुई वह अपनी दादी के पास रह गई। जब तो दादी गुम हुई थीं, शांता भी उदास रहती थी। जलवत बेटी को ले जाना वांछता था लेकिन शांता अपनी बड़ी दादी अब्बा की पूरीकार में वापस नहीं गई। कुछ दिनों बाद जलवत की मां ने शांता को शहर भेज दिया था।

कुछ दिनों बाद वह लघों भी शहर आ गई थीं। शहर में जंगल के हावारे ने बारा फूल के बुद्धिमत्ता को देखा है। शांपद वह जलवत की दादी है। जलवत की मां ने हावारे को माना फिरा था कि वह उनके साथ जंगल में दादी को बैठने को। हावारे बहुत मुरभित के माना था। जलवत की मां, बापु, पत्नी, उसकी बेटी संग तथा जलवत हावारे के साथ जंगल पहुँचे। जंगल में बहुत झुक झाक दादी दिखाई दी। वह समाधिपथ होकर बहुत से वानरों में घिरी बैठी थी। तब दादी के पैरों तरफ बैठ गई। दादी को आँखें खुली तो वह उसको देखकर ममता से भर गई। सबने बहुत आंखू फिरा कि घर वापस जाने पर तूफ़ू दादी नहीं मानी। ऑंटा: जंगल में ही दिवाली-पूजन किया गया। तब दादी दिखाई दी। दादी वापस आने को तैयार हो गई और घर लौट आई। कुछ दिन बाद दादी ने प्रारंभ तयार दिया।

शांता और गुरुज साथ-साथ गुड़िया गुड़े का ब्याह रचाते-रचाते बड़े हो गए थे। गुरुज ने लोक्या था कि वह शांता को दुल्लुन बना कर ले आया।
निमित्त के विवाद का यह तपास स्पष्ट न था। शांता की शादी प्रवृत्ति से हो गई। प्रवृत्ति और शांता की विवाद हो रही थी कि एक अजीब पुलिस अफसर गौरिया का आमला हुआ पर में दाखिल हुआ। प्रवृत्ति के तीनों पर पिल्लैंग रखकर वह प्रवृत्ति के भाई नवीन के बारे में पुलिस लगा। प्रवृत्ति ने कहा नवीन नहीं आया। नवीन स्वारंभ तेजस्वी के सुपे में शामिल हो गया था। ज्ञानिते पुलिस उसके पीछे टहली थी। पुलिस के जाने के बाद शांता की विवाद की तैयारी आरंभ हुई। बारात की वापसी का प्रकोप रेल द्वारा किया गया। तब लोग रेल में बैठ गए थे। रेल के एक कामे में शांता और उसकी नन्दा सुधू यात्री थीं। सुधू यात्री उसके पास आ पहुँची। तभी एक हाथ में शांता का पैर पुकारा। मई के नवीन को पहचान गई थी। शांता ने उसे आदरियां दिया। नवीन को अपने स्टेटन पर उतरता था। शांता ने बाहर जाकर देखा तो पुलिस लगा दिखी थी। उसके नवीन को कहा कि पुलिस बाहर बड़ी थी। नवीन के चलांग लगा दी। शांता ने अपने हाथ की युद्धी भी तथा की पेंक कर दे दी। नवीन तो हाय निकला, लेकिन कैसे ही युद्धी सके गार्ड रेल में फुट गई। शांता ने पुलिस से बहुत मिठा होकर बात की। तब हैरान हो गए कि बहुत कितनी निरन्तर है?

शांता जब तसराव पुराना तब बहुत जोरदार स्वागत हुआ। एक ही दिन में शांता अपने स्वारण से छुड़ गई। प्रवृत्ति ने शांता को कहा कि नवीन चाहे ताला बाद पहली बार घर आया था। सुधु दिवारा की उम्र होने लगी। घर विश्वास तथा पहली की स्थिता सुधु दिवारा के लिए आई थी। शांता को घर की स्थिताएं ने बताया था कि पुराने की दीवार वाली होती थी। घर की थ़की बहुत कहने वाली थी। उसका आरोप में भी सृजन का र था। घर की बहुत महिलाओं के आपराधिक कर्म कर वापसित गई। उसी दिन सृजन की तारीख थी। वह सृजन में जीत हुई की। बुधवार से बाद शांता को मायके घर कर दी। उसी दिन सृजन के भारी मठ में रहने आ गए थे। नवीन की कहानी में पुलिस शांता की विवादी की तैयारी कर रही थी। प्रवृत्ति बात की था कि नवीन से तंबूने तोड़ लिए जाएं, तभी शांता ने निर्देश दी कहकर कि बुधवार भी बैठे जाएं, लेकिन नवीन जहां विभेद का तदस्तव बन कर रहे। बुधवार से बाद शांता अपने मायके गई। उसने एक वेट की जन्म
दिया। तब नवीन अपनाक अपनी भांडी को मिलाने आ पहुँचा। शांता ने नवीन
ते वादा दिया कि वह होली केलने अँगे घर में जहर आएगा। होली का पत्र
आ गया परेंगू नवीन न आया। एक-एक करके पांच बरस निकल गए थे। शांता
ने भी होली नहीं केली थी। उठी होली पर भी शांता नवीन की पृष्ठीया कर
रही थी कि तभी वह आ पहुँचा। तब ने मिलकर होली की पृष्ठा की तथा होली
केली। अगर वे लोग होली केल दे रहे थे कि औजू अफसर आपहुँचा। बात ही
बात में शांता ने नवीन को भगा दिया। रंगों में पूछे देहरे के बीच औजू अफसर
नवीन को पहुँचाने नहीं पाया। नवीन के पिता तथा भाई को ध्याने बुलाया गया।
पुकिता ने पुष्पिन्धर को बहुत पीटा। गार महान न होने पर पुष्पिन्धर ने
नवीन के दिक्काने के बारे में सब कुछ बता दिया। घर पर अफसर पुष्पिन्धर ने स्पष्ट
भव से कह दिया था कि अब वह नवीन का साथ नहीं दे सकता है। यह तुरंत
अपना ने भी पुष्पिन्धर का साथ दिया और कहा कि अब नवीन से सारा वित्त
समाप्त कर दिया जाए। उधर नवीन-के दिक्काने पर खबरी मदद थी। उनके तारी
उससे कह रहे थे कि उनके भाई ने ही गद्दारी की है। नवीन को इन बात का
विवाद नहीं हो रहा था कि क्या उसका कुछ भाई पुष्पिन्धर कर तकता है।
नवीन यह बात स्पष्ट करने के लिए जान होली पर रक्षक घर पहुँचा था। उसी
समय पुकिता ने भी झमा बोल दिया। शांता नवीन का छाया पड़ाकर उसे दो
पर ले गई। औजू अफसर ने गार दो गोली चलाने का हुमा दे दिया। लिंदुसानी
सिपाही आगे बढ़ने लगे। शांता को कुछ भूख नहीं रहा था। अपना उसने अपने
बस्त बोलने गुहा कर दिया और लिंदुसानी सिपाहियों को कहा कि यदि उन्होंने
कुछ किया तो वह अपनी देह के बयान उतार देगी। तब क्या वह अपनी बहन
को नंगा देख पाएगा! अपना लिंदुसानी सिपाहियों के संस्कार जान गए और
उन्होंने बंदूकें के केंद्र। अपसर ने सिपाहियों ने वह दिया कि वे उनका आदेश
नहीं मानेंगे। यह तुरंत अफसर ने अपनी पिस्तौल सिपाहियों की ओर तान ली।
अपने एक सब्जी की ओर अफसर धरती पर फिर गया।
इस उपन्यास का व्याख्यान पराधीन भारतीय परिवेश की कहानी है।
आधुनिकता के प्रवाह में ही समाज में अंगे सिद्धांत समाप्ततार बढ़त हुई है।
बड़ी दादी तो सोचती है कि स्वर्ग नरख कुछ नहीं होता। शांता बार-बार याद करती है कि दादी कहा करती थी, "यारी आती मुक्ति बढ़ती है......यारी मुक्ति स्वर्ग-नरख में नहीं है...... वह जीवी धरती पर है।" दादी की यह बात शांता के मन में कोशिश के अर्थ यह विचार धारा पीढ़ी के पिता और भाईयों पर वोट लेना था। प्रभावी गुणवत्ता के पिता और भाईयों के बदल तरी की स्थापना करते हैं। यही आपूर्तिकार की तबते बड़ी पहचान है। वह होली के पीछे मिला तरी भी स्पष्ट करते हैं। धार्मिक पारंपरिक पर भी कहीरा व्यंग्य खिया गया है।

नारीकरण के पूर्वार्ध ते उत्पन्न हुई पीढ़ा का विचार भी इस उपन्यास में अंकित किया गया है। नारीकरण के पूर्वार्ध ते वातावरण के महत्त्व प्रमाण गई थी। अत्यंत मानवों के वातावरण की ताज़ीत बाकी न रही थी। व्यक्ति इस परिवर्तन को अनुभव करते थे। "उसके शरीर की होता धारा की पौधों वाली लक्ष बढ़ी गई। शरीर में जो मिट्टी की गरमी समायी रहती थी, वह लोटी की ठंडक में केवल बदल गई।... मन में जो रेत की मदद भरी रहती थी, उसकी जागरूकता की उपेक्षा कैसे समायी गई।" वातावरण का परिवर्तन तो हुआ था। लेकिन इसके साथ मानवीय शिक्षित तथा मानसिकता भी बदल गई थी। भ्रूणिकरण ने मानवीय शिक्षितों को समाप्त कर दिया था। आदर्श स्व-पूर्ति की महत्त्व प्रदान नहीं कर रहे थे। "किसी के तन से एक खुद कुछ निकलता था तो मन में कैदी दया और रूप उम्मीद थी...... पर आज रेल से कई आदर्श की देखकर दया के तथाकथित दिन भी आती है...... जो पहले कभी नहीं आई। अब पड़तों पर कैदी कुछ देखकर मन तड़काना नहीं...... केवल हर दाच पैर जलदी-जलदी उठाना कर गाढ़ी के बर्वत से रहमान कर देने की जलदी पड़ने रहती है।" व्यक्ति में आपूर्तिकार तत्त्व पैदा हो गया है। संबंधों में वह जुड़वा नहीं है, जो पहले होता था। मानव-संबंधों में संबंध निकल कर न जाने कुछ बो गई है। इस प्रकार इस उपन्यास में मानव समाज में विकसित हुई आपूर्तिकारिता की भाषा का सूक्ष्म रूप ते

1. "सुविधा दोपहर गाम" - क्लेसर - पृष्ठ-156.
2. "क्लेसर" - पुस्तक - पृष्ठ-130.
3. "क्लेसर" - पुस्तक - पृष्ठ-130.
फ़िल्म का सफल प्रदर्शन किया गया है। इसके साथ ही इस नक्षत्रागरण ने साधारण भारतीय चित्रकला को भी प्रभावित किया है। इस उपन्यास की सेवनना तात्माज्ञान के उतार और ज्ञान के उमार पर टिकी हुई है। ॠणियों का शासन तात्माज्ञान का प्रतीक है। बीव-बीव में तर्क बुद्धि के उदय की अभिव्यक्ति से यथार्थ बोध को भी उमारा गया है।
कहानी :-

कथित रूप से निम्नलिखित कहानी संग्रह :-

1. जिंदा गुंडे
2. बयान तथा अन्य कहानियाँ
3. केवल कहानियाँ
4. गलत का दरिया
5. मेरी ग्रिफ़ कहानियाँ
6. बोईँ हुई दिसारे
7. राजा निरंजनस्वाय
8. कल्याण का आदमी

9. जिंदा मूर्ति :-

कथितः निम्नलिखित कहानी संग्रह में विभिन्न प्रकार की कहानियाँ संग्रहित हैं। ये कहानियाँ प्रकार की परिस्थितियों से उत्पन्न घटनाओं का सजीव विवरण देती हैं। यथा प्राकृतिक मृत्यु तथा अन्य घटनाएँ जैसे कि विभिन्न परिस्थितियों में मानव संवेदनशीलता, धर्म तत्त्वों का विवरण रूपांतरण, परिवर्तित तात्त्विक मान-संस्कार तथा अन्य घटनाएँ कोई भी समस्याओं का पथर्पत्र वर्णन कथितः निम्नलिखित कहानी संग्रह में देखा जा सकता है।

कथा संग्रह की कहानियाँ :-

1. जार्ज़ पंचक की नाके
2. स्मारक
3. नाव
4. शरीफ़ आदमी
5. अत्मा अपर है
6. ब्रांच लालच का अफसर
7. अपने देश के लोग
8. नया फिलान
9. मेरे-पूरे अद्वैत
e. अपने अज्ञात देश में
9. जिंदा गुंडे
हाँ, जार्ज पंक्म की नाक :-

यह कहानी संपूर्ण की पहली कहानी है। "जार्ज पंक्म की नाक" उस समय की बात है जब झोलेढ़ की रानी राजिबाबू और उनके पति के यहाँ हिन्दुस्तान की यात्रा पर आने वाली थी। रानी आनेवाली हैं यह तुम्हारे अभियारों में, पृष्ठ में नज़र होने लगी थी। रानी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे के दरम्यान उसे कुछ पहलें यह टेलीविज़न बनने लगा। झोलेढ़ के अभियार में चौदी-सी खर छपी थी कि रानी ने एक हज़ार नीले रंग का सूट पहना है उसका बर्फ़ 400 पॉइंड आया। अभियार में रानी की जन्म पत्रिका छपी थी - "प्रिया" फिलिप के बारे में कहते, और तो और उनके फोटो, व्यक्तियों, बाणसमय, अंग्रेज़ों की पूरी की जीवनियाँ देखने के लिए आई। यहाँ महल में रहने और पलने वाले छुट्टी तक की तस्वीरें अभियार में छप गईं।

राजपत्री में तड़का मगा हुआ था। रानी 5000 स्पेन का सूट पहनकर पाक के हवाई अड़े पर आनेवाली हैं यह तोफ़कर दिल्ली में धूम मची थी। खिड़की से पुराँचल आ गई। इंडिया गेट के तमाम वाली जार्ज पंक्म की लाट की नाक गायब हो गई थी। अंततः तब राजपत्री वाले ने तब किया कि जो मूर्तिकार को बुलाकर नाक बनवा की जाए। मूर्तिकार तो आ गया। मूर्तिकार बाँधना चाहता था किंतु लाट कब और कहाँ बनी थी? इस लाट के लिए पत्थर कहाँ से लाया गया था? धूर इंद्राजी विभाग की फाइलों से यह जाकर ग्राहाय बनाने का प्रयत्न किया गया, परंतु प्रयत्न द्वितीय गया। फाइलों में सुध भी पता नहीं पड़ा। मूर्तिकार ने देश के सभी पत्रिकों का दौरा किया, लेकिन उस फ़िल्म का पत्थर कहाँ नहीं पड़ा। तब मूर्तिकार ने इंद्राजी किया कि देश में लगी नेताओं की मूर्तियों में से फिकि की नाक उतारकर लगी दी जाए, लेकिन मूर्तिकार का यह प्रयत्न भी असफल हो गया, क्योंकि तम्भी नेताओं की नाक बढ़ी फिल्टर। तब की आशाओं पर पताका फिर गया था। अब तो जार्ज पंक्म की मूर्ति नाक दोबारा लग पाने की कोई उम्मीद ही नहीं बनी थी। अवस्था मूर्तिकार के दिग्गज में एक बात आई कि क्यों न किसी व्यक्ति की फिल्टर नाक ही लगा दी जाए। लेकिन यह काम कठिन था। परंतु मूर्तिकार ने
इस काम को करने का उत्तरदायित्व स्वयं से लिया। मूर्तिकार की यह काम करने की इजाजत दे दी गई। अब उनमें छोप गया कि नाक का मस्तान हल हो गया है तथा जार्ज पंक्ल की नाक लगाई जा रही है। एक विशेष दिन लाट पर नाक का गई। यह वह थी कि जार्ज पंक्ल के चिप्पा नाक लगाई गई है। यानि उसी नाक जो कराई पत्थर की नहीं लगती।

यह कहानी कुछ राजतंत्र, सरकारी कामकाज की दालू नीति, लाज फीतापुरी के बीच संबंध करते हुए व्यक्ति का घिरन प्रस्तुत करती है। इस कहानी में सरकारी काम काज की नीति, दफ्तरी दुनिया का महीना पिचित किया गया है। किसी विदेशी विचारित अन्तर्भूक्त को लेकर भारतीय मान्यताका पर व्यंग्य किया गया है। इस कहानी में आधुनिक शासनवल्लो के प्रौढ़कर्मक रूप में पिचित किया गया है। लाज पिस्तापुरी की विकार फाड़ू में गई शासन व्यवस्था सम्पूर्ण बना देने में कुलवृत्तता आदि आज के प्रशासन की विदेशियताएं है। "अपने देश में विदेशी सम्पत्ति दीवन के तौर पर तरीक़े आदि के अन्य जाने पर अध्ययन के नाम पर हो रहा परिवर्तन की स्थिति पर कहानीकार ने बहुत संभाल व्यंग्य किया है: "तथा-पति ने देश में आकर कहा- लानत है आपकी अक्ल पर। विदेशी की तारी चीजें हम अपना छुके हैं- दिल दिमागः, तौर तरीके औररतन सहन जब विद्वस्तर में बाल डांस तक मिल जाता है तो पत्थर बन्यों नहीं मिल सकता।"

प्रशासन तंत्र की आक्षेपणा व विविधतापर व्यंग्य के माध्यम में इस कहानी में करारी चोट की गई है और इस पुकार व्यवस्था के प्रति पत्थर के मोह भस्म को अभिचरित किया गया है।

"जार्ज पंक्ल की नाक" कहानी में राजनीतिक तार पर स्याहों का कैसा व्यंग्य होता है यह लोकप्रिय रूप से देखी जा रही है। इस कहानी का उद्देश्य तिस्रा इतना है कि राजनीतिक तारों द्वारा जार्ज पंक्ल की लाट पर नाक फिर से पुकार लगानी है। क्योंकि इन्द्रियों की नाक नहीं तो हमारी भी नाक नहीं है।

"समर्पण कहानी का संदेश" - पुप्पपाल सिंह - पुष्ट-37.
तमारकः

“तत्सरे” इत्यं हनुमानस्वतिर कहानी है। एक निरंतर ताहित्यकार की मृत्यु हो गई। अपने जीवन में उसने अपने परिवार के भरण-पोषण हेतु कठिनाई से किया था तथा अपने जीवन के अंतिम दिनों में अर्थभाव के कारण बीमारी में काटे थे। मृत्यु ते पूर्व उसकी अवस्था हेतु दयनीय हो गई थी। अंत में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद शहर भर में लोग शोक सम्भा के लिए ढूंढ़। शोक-सभा में शोक पुष्ट करने के लाभ-साधन अपने धुपों का गान भी करते जा रहे थे। धुपमार्गी, एक ब्रह्मदर्शिका नेता, प्रकाश महोदय, बिहारी बाबा व भ्रमनेवाली ने शोक संदेहा के भाषण दिए। उन्होंने तत्काल साधन ने उनके अंतिम वाक्य पढ़कर सुनाया कि—

“और तब तुम मेरी लाल को कह से निकलकर तमांग फिन्दाओंगे। मुझे यहां भी भारारप्रति ते सोने नहीं देगो। तुमने मुझे बिंदपी-श्रम परेसान किया। मैं अपने बच्चों के पेट की खातिर एक-एक दुखे के लिए मारा-मारा फिरता रहा। जब मैंने तत्काल बात करीं तब तुमने मुझे चेत के तीक्षों के शीतर झेल दिया। मृत्यु पर मुझमें क्लाफ और मेरे जीना मुरीक कर दिया। और मौत की बर्बर पाकर हम तबीरे करोगे। चकितयाल के आंतु बाहाओंगे और मेरी यादनाओं खड़ी करने की बातें करोगे। लेकिन मैं तुम्हें जानता हूं। हम मेरे चेत ते लो। हम दिन में बेहतरी का एक खंड और मारोगे...”

यह सुनकर तभी मेरे लोगों के दिल भर आए, पलकों और गर्दन बुझी हुई थी। उन्होंने फिंदों तक सतना भाया रहा। बाद में तबीर ने अपने भाषणों में हुआ का ही खाना करना शुभ किया कि उन्होंने फित प्रकाश मर्दूम ताहित्यकार की सहायता की। तबीर लोग अपनी प्रतिक्रिया ही करते रहे।

अंत में दु:खी ताहितिकाओं का प्रस्ताव आया कि स्वायत्ति लेख की स्थिति में ऐसे स्मारक की स्थापना की जाए। विहारीजी में भी अपने ताहितिकारों को याद रखने की रेखी की परंपरा है। तब विहारीजी ने भी यही चुनाव दिया कि वह अपना महान स्मारक निधि को दान दे देंगे। तब ने अपना-अपना चंदा लिखाया और शोक सम्भा भंग हो गई।

“तमारक” — दृष्टि-
लोग कहने के लिए उत्तर दे कि विहारी बाबू ने वाय-पान का आग्रह किया तुरंत ही समझ का स्वाभाविक बदल गया। पता नहीं कि रहा था कि अभी ही यहाँ कोई शोक समझ हुआ है। कुछ दिन बाद वह मकान स्मरक मिठि के लिए दान दिया गया था उस पर बोर्ड लगा हुआ था — “मकान किराये के लिए खाली है।”

यह कहानी आज के समाज के बोझोपन और विद्वस्तता को प्रभावित करती है। हर व्यक्ति यह अपनी ही प्रतिष्ठा बनाने का अक्षर बोजता है। फिर वह चाहे कोई शोक समझ की क्या हो। निर्विवाद तथा प्रतिरोधागारी लेख की मूर्ति पर शोक लेखन के लिए कार्य द्वारा लोग भी अक्षर का नाम लेने से नहीं इनको। सब इसी अक्षर की तलाश में बैठे है कि के बात कोई कि उसे ही उस साहित्यकार की किताब तड़ागता की।

लेकिन इन बातों में सर्वाधिक का प्रतिष्ठा कितना होगा, यह इस बात के तःद हो जाता है कि स्मारक मिठि का पेला जमा होने के बाद स्मारक मिठि के लिए दान दे दिए मकान के बाहर “किराये के लिए खाली” का बोर्ड लगा होता है।

कर्मचारी भाविक व्यवस्था में साहित्यकार का संगम आम जनता की दमनीय अवधार के प्रति के रूप में उभारा गया है। इस पुकार आधुनिक कहानियों को खोज कर साहित्य-सर्वनाश करने वाले समाज को समाज किताब उपेय निर्देश करता है, इसका विवरण भी इस कहानी में सूचना है। यह कहानी भी व्यवस्था की विद्वस्तता को प्रकट करती है, हमारे साहित्यकार यथार्थ को प्रकट करती है तथा हमारा मोह मंग भरती है। इस कहानी का उद्देश्य तस्क झता है कि फिरी महाकाव्य आल्मा का नाम वंदा बढ़ाता करना और कोई मकान दान में दे कर उसे किराये पर उठाकर अपनी त्यारी तिष्ठत कर लेना है। "स्मारक" में साहित्यकार की निर्मितियों का कार्य है।

हृदेन संपादन

यह कहानी इस संघू की तीसरी कहानी है। "नाम" एक बहुत ही वक्ताने-सी कहानी है। यह कहानी व्यंग्यात्मक कहानी है। भिक्कु किताब.
चंद्रकांत की स्टेनो थी। लिख चंद्रकांत से प्रेम करती थी। उसका विवाह लिखी और के साथ तय हो गया था। चंद्रकांत को यह बात पता थी कि वह लिखी के हुए में सब छुट तह लेता था।

एक दिन लिखी के समय दो सवा दिन मनाने के लिए आ रहे थे। लिखी ने पाठ का आयोजन किया। चंद्रकांत ने बारे की सफल बनाने के लिए तब काम किया। चंद्रकांत ने ज्ञान तब काम कर दिया था किंतु जब भी लिखी से बिछू ने का काम आरती ही वह उदास हो जाता है। चंद्रकांत को बहुत दुःख था कि उसे लिखी का मान समय गया नहीं हो सका। चंद्रकांत जब तैयार होकर पाठ के पहले तब लिखी अपने पति के साथ लौट रही थी। यह देखकर चंद्रकांत का मन बैठ गया था किंतु उसे लिखी की एक बात याद आई थी कि विवाह के बाद उसके संबंध और अने हो जातीं। यह तो होकर वह भोजन का होता था। हां हुआ बाद में सब लोग चिन्हसम्र द्री वाले स्व में गये उस द्री में तब के नाम के उपयोग रखे हुए थे। चंद्रकांत को नजर एक नीश्च मिशर के पर अस्तकी थी। जब चंद्रकांत की बारह आई तब चंद्रकांत ने लिखी को एक बार मुझे फिर लिखाया पर अपना नाम पढ़ने और बढ़ते दिल ते धोख बाला। उस लिखते में जान पाठ का फिर उसमें लिखा था "फलीप एक्सेंड टू इट - लिखी।"

प्रेम के नाम पर अक्षरवादिता का साधारण उदाहरण इस कहानी की आधुनिकता को उजागर करता है। प्रेम में स्पष्ट नामक तत्त्व समाप्त हो गया है। अब प्रेम के माध्यम से अपने स्वार्थ पूर्ण करने के प्रदर्शन उभर जाने आई है। आज के लोग स्वार्थ्य स्वभावित के हो गये हैं। आधुनिक मानव बहुत भौतिकवादी है। प्रेम में सभी उपकरणों की ग्राहिता को प्रेम करता जाता है। प्रेम लंबित का बदला हुआ यथार्थ इस कहानी में मूल तत्काल प्रेम करता है। मानवीय सरोकार की जगह स्वार्थ और लाभ की मनोवृत्ति ने से ली है। यह बदलाव की आधुनिकता को प्रतिपादित करता है।

शार्डि आपदी:-

यह इस संदर्भ की योग्यता कहानी है। रामान्द्र नामक तुलसीदास और ओडी निहित में बैठक साउथ इंडिया जाता है। रामान्द्र की ओडी निहित वाले से
कहाई हो जाती है। रामानंद शराब्बा और तुम्हारी तरफ से आवश्यकता का आवरण उतराकर ओटोरिफा वाले से कहाई के लिए उतार हो जाता है।

अन्तः व्यक्तित्व का दोहरा। सब इसे इस कहानी के दृश्य के मूलकों के मिलते हैं। व्यक्तित्व के अंदर से बुनी हुई स्मृति उपरी संस्कृति मूलकों को बोलती है, यही इस्तेमाल इस कहानी की संवेदना में स्थापत्ता। उसी और इसी दृष्टि में इस कहानी के उपरी मानवीय सरोकार का गायब हो गया है। मानव-सूचनाओं के द्वारा को इस कहानी में उपजार किया गया है। "शरीरी आदर" ने बहुत ही कहानी कहा है जिलदेते दिलीप के ओटोरिफा वालों से एक संदेह पोषा सम्मर जो वाले बाहु के व्यवहार की परवर्ती है।"31"

31 आत्मा अमर है।

इस कहानी में कल्प जीवन का व्यंग्यात्मक वर्णन है। यह कहानी संघर्ष का पार्थिव कहानी है। कल्प में पार्थिव का रही थी और कल्प परमार्थ मिली वातावरण को बुनी नजर से देख रहा था। दो मूलक हो जा गए और उन्होंने अपने जाटी तो परमार्थ की नाक नीची की। धीरे-धीरे सार होना आरंभ हो गया। मिस्टर वातावरण ने खुद हीकर आत्मा पर भाषण देना आरंभ किया, तथा कहा कि कल्प परमार्थ की आत्मा मर रही है इसी कारण उन्हें यह क्षण उठाना पड़ा है। ताकि उनकी आत्मा को बताया जा सके कि संस्कृति और व्रतींता का क्यों है। कल्प में केवल अन्या जाता जाता है तथा एक तथ्यात्मक महत्व के ताकि जैतु व्यवहार किया जाता है। इसके बाद परमार्थ भी उठे और उन्होंने कहा कि जब आत्मा अमर है व जीवन है न बता िा न काटे जा सकती है तब ऐसे में आत्मा पर मिस्टर वातावरण की इस कृत्य का क्या प्रभाव होगा। तथापि उन्होंने यह भी जानना चाहा कि नाक का आत्मा के विषय संबंध है और मिस्टर परमार्थ ने कहा कि ये उसके नाक को लीटा दें। लेकिन इस व्यवहार हुआ और मिस्टर वातावरण को से नाक उठाना बापु हो तो बोले ने काटा वापस मांगा। पति का जीवन समझकर मिली वातावरण ने परमार्थ की नाक स्मृति में रख ली तथा ऐसे कहा कि यह परमार्थ के पास पहुंची तथा उन्हें परमार्थ की नाक पिका दी। यह इस प्रकार आवासश्रीय मनोरंजन बनाई।

31 "कल्पन्तेर कहानी का संदर्भ" - कुप्पलाल तिव्य - गृह-68.
आधुनिकता की तरह में कहाँ की अनीतिताओं की समस्या का नाम दिया जाने लगा है। यह प्रूफ़ेट भी ही परिचालन से ही ग्राह बन गया है। इसके साथ ही देखे में अभी भी ऐसे तत्त्व देखने को मिलते हैं जो इस अनीतिताओं का निरोध करते हैं।

वातावरण में आधुनिकता के नाम पर ऐसी वेदनाओं का समस्या के लिए अभिव्यक्त है।

यहीं इस कहानी की लेखना है। अब तभी की लेखनी नैतिकताओं तथा जीवन होती जा रही है। यह कहानी भी तत्त्व को प्रूफ़ीथाथिक करती है।

666  ख़ूब लाइन का तकर क़र :–

यह कहानी उसम तन्त्रिकायों और उनके द्वारा ऐसे जारे रहे नैतिक कार्य-धाराओं का पदार्थ खिंचा दिया गया है। ख़ूब लाइन की गाथौं में कल्याण भी नहीं थी। आग़-दंड मुसलिम लुधीया ढ़हर-उधर आराम ते लेंते या बैठे थे। यह स्थानीय से हिंसक हिंसक, व्याख्यान कर रहे थे तथा बाहर के बाहर में पूरे रहे थे। स्थानीयों को उन यादियों के व्यवहार पर धौं आ रहा था।

गाथी खाने के साथ ख़ीब बाबू गाथी में आ गया था। उसने तब ख़ीब देखने पूरे किये। स्थानीय का भी ख़ीब देखा। यह व्यापारी ने ख़ीब बाबू का आँख के बाहर देखे और तेज़ हो गया। ख़ीब बाबू जब बाहर खाने लगे तो स्थानीय ने उसे रोकना बाधा। बाहर में तो एक घरीली में गाना। अब मो दो जनानी गिरीरियां तथा तो रोशनी के दहले निकले। स्थानीय ने पूछने पर बताया कि वह तारा समान यह माननी का है। तथा वह दरिद्र में दान करने के वेद हो गए हैं। स्थानीय ने पूछताछ बुलाई तो कहीं उनके हुए इश्के में एक लोक-राज यह है। वह लड़ी उत्तर कर आई। तथा उसने बताया कि उसे व्यापारी में तीन तो स्थानों में बैठो। तथा जो भी दिया है।

यह बात तुम्हारे दोनों व्यापारी फिर अलग बाते करने लगे। लड़ी ने बताया कि वह उसे आगर याद की यहाँ रहने जा रहे हैं। वह तुम्हारे व्यापारी ने कहा कि हारम समय दें। पूछत ने उन्हें अपार्क कैद दिया। तब ने लीया कि "इन बुद्धार्यों जो खाने को जन्म दिया है और व्यापारी ने इन्हें खि-डाड़ रखा है। और इन बुद्धार्यों तथा व्यापारियों के कई स्तर तथा दर्शन है।" 666 666  "खार्ज पूँछ की नाक"–"ख़ूब लाइन का तकर"– कमलेश्वर, पूंछ-52.
इस कहानी में व्यापारियों तथा कदम तनावियों के वरिष्ठ की फिदा वाट और अमेरिका को उभारा गया है। इस कहानी में नारी का प्रोफ़ारिज कि पुस्तक होता है यह देखने को मिलता है। पाँचवी साधु व्यापारियों के भी अद्वित शोक और उन्मादी होते हैं। और संत साधु उन्हीं को सपनाप करके छेड़छाड़ते हैं। यह इस कहानी का कथ्य है।

777 अपने देश के लोग :-

इस कहानी में डिली भैते महानाग के स्थायित्व कल्प के जीवन की बांटी है। इस कहानी का शब्द तार यह है: फ़िल बहुत से लोग फ़िलिये। उनके गले में पट्टे पड़े हुए हैं। जिन्होंने उनका नाम तथा उनकी लिखा हुआ था। वे सब लोग कार्रवाई के गतिविधियों के लिए है। लेकर जब वहाँ पहुँचकर कार्रवाई के अंतर्विकल अधिकारी से मिले, तब अधिकारी ने बताया कि कर्मचारियों को अनुगतत प्रिंट बनाने के लिए एक नया विभाग बोला गया है। उस विभाग में उन सब लोगों की मर्म 'हे-होए' के बारे में फ़िलिये की जा रही है। उस चरित्र को बुलाया गया जिसे लोगों को देखना चाहते थे। उसके प्रति होने का कारण तीन जहां होना था कि उसने अपनी देश के पूरे दर्शकों को देखने के कारण अन्य लिखा।

उसके ज्यादा अधकार व्यक्त शब्द कपड़े गई थी। "दोलकरों ने हिसाब लगाया, बाल्क मर्म की नौकरी में उसकी तनावाद में हुई एक ती दस अन्य बढ़ा था। पता में उनसे है नौकरी शुल्क की थी और अब एक ती प्रचारियों पर रहा था।" और उसके अंतर फ़िल फ़िलियों के साथ रोल निकल सकते थे। उसके लोगों की ज़मीन लंबी, न बता होने वाली रोल है जिसे लोकों को काटना पड़ा। इस रोल में उसके तारे आपूर्ति लोगों की तस्वीरें हैं। अथवे टक्के दुकानों की किसी हुई दुकानों के जीवनों में रंग-रंग साड़ीयों लक्खी होने थी। कमरों, पेड़ों की भी तस्वीरें थीं। जूतों के भी और अपने होते थे। भेंटमाल बच्चों और उनके कपड़े की थी।" 727

"जिन्दा मुर्ति - अपने देश के लोग" - कमलेश्वर - पृष्ठ-63.
727 पूर्वी - पृष्ठ-64.
यह कहानी बहुत कुछुरती ते तामायन्य कई के हृदय-दर्द भरे जीवन को तारात लगात है।

तब लोग आंतोष ते भरे हुए हैं। उन्हें इतने कम साधन-उपलब्ध हैं कि उन्हें उन्होंने जीवन भावनापूर्ण बन गया है। जिन कहानियों में वर्तमान समय के मध्याधिकार जीवन की विवाहितियों का विषय किया गया है। दूसरी ओर तरकार द्वारा किये जाने वाले तहतयता उपायों के व्यवहार को भी उत्तरागर किया गया है।

88] [या फिलान :-

यह कहानी तंगी की आठवीं कहानी है। इसका कथातार इस प्रकार है: शहर के पुराने जग्गादर मराठे के तक बहे लड़के कुंघर्षण युग: अपनी होनेवाली परिस्थिती के दौभाग की व्याप्त करते रहते थे। वे लोग दूसरों की बातों में आ जाते थे। वे ही भ्रम अपनी अवस्था में ही बातें करते तथा टीकों पर बुझा रोब झाड़ते थे। कभी कोई लोगों की व्याप्त करते निचों की सीमाएं तो कभी होटल बोलने का प्रवार करते। कभी-कभी योजना बनाते कि किही का व्याप्त किया जाए। उन्होंने एक बार किसी दीवार की खराब प्रक्षा करते की बात लोग। कभी कोई उन्हें बताता था कि वे अपनी कंधे पड़ी कमी में ईटों का भट्टा बोल लें। और मुखिया ने ललाह दी कि वे फार्म बोल लें।

उन्हें मुखिया की ललाह बहुत पसंद आई। बाद में उन्होंने फार्म बोल किया था। वे तीन महीने तक दिखाई नहीं दिये। एक दिन वे गाँव के डाक बाले की ओर आ रहे थे। लोगों ने यूथा कि डाकबाले करों जा रहे हैं। तब उन्होंने बताया कि कुछ संघर्षी पुलसों की बी-फी. फी. लेने गए थे। कुंघर्षण ने बताया कि उन्होंने फार्म में एक कमरे बना किया है। वे कुछ ट्रेकर जाते हैं तथा उन्होंने फार्म को बाँस पचौसी हिस्सों में वांट दिया है। गेहूँ, कब्जाव, चना, गांव, धन, आलू, खाना, मद, जवार तथा बाजार की खेती कर रहे हैं। यह तुम्हारा एक व्यक्ति ने यूथा कि क्या रक्षा व व्यवस्था हो दोनों की पसंद लगाई है। तब खुदरा सत्तह जो कि नए-नए फिलान बने थे उन्होंने उत्तर दिया कि क्या पचौसी पसंद लगाई है।
यहां वित्तावधि व ज्ञानात्मक स्थिति में उभरा है। ज्ञानीयों के
विकासकीय निर्देशक प्रमुख तथा भाषक को व्यक्ति कर रहे हैं जो कि एक
विकासकीय राष्ट्र के लिए हानिकारक है। यहीं इस कहानी कि मूल संदर्भ है।
ज्ञानीयों परिवार, सामाजिक परिवार की झांकूनीता, पूर्व वैभव संपन्नता के आधार
पर भारतीय समाज के भूमिका की अत्यधिकता के वर्ण समाज
के ध्यानुष्ठान कर पर चुट की गई है।

इस कहानी में सामाजिक आदर्श के जीवन के दुःख-दर्द को वाणी दी
गई है। इसमें न हो जीवन के अभावों की ओर लक्ष्य करते हैं तो दूतारी और कुछ
ऐसे त्वचित पूरे होते दिखाई गई हैं जो जीवन की आक्षेपतांत्रों के बदले में बरी-बरी
जाते हैं।

जयपुराणा बाबू ने मोटर-तारीख करीब नहीं। उनके बाद उनके घर में
मोटर-तारीख की कहानी घर में रोने का आ जाती है। अब उनकी पत्नी ज्यादा
तक हर शाम नाचती है तथा बच्चों को संरक्षण कर रहती है। फिर दिन मोटर-
तारीख कहीं धारा गई और जयपुराणा बाबू को धौर लगी। एक्सीडेंट होने पर
बच उसकी समस्ता का कंबा-पौड़ा खाया बताया जाता है तब वह आठ साल से स्नात
में वेच दी जाती हैं। उनकी दौरे में तो रेडियो बरी-बरी गया। उनकी पत्नी रेडियों
के आजने तो प्रजान थी। एक दिन रेडियो बच्चों ने फिर दिखाई। बाद में पाँच साल
स्थायि रह जाते हैं, तादे घर से रेडियो आता है। फिर वह रेडियो फिर दिन मोटर-
तारीख के समान ही झाली नाचा जाता है। फिर वह वैभव के समान ही झाली नाचा जाता है।
फिर पत्नी के समान ही झाली नाचा जाता है। इन द्वारा तो भी न हो बड़ी बड़ी बाबा नहीं है बाद में बेटी की
मांग पर लड़की के लिए दार्मिकता के आते हैं। बेटी की दिनों बाद बेटी का
भी मन भर जाता है। दार्मिकता को लपेट कर भेजे के नापे रख दिखाई गया।
कुछ दिनों बाद उसे बक्सी देखा तब उसी ने कुत्तर कर या गया था। उसे भी बाद
में सत्तर नाचे में बेच दिखाई गया। कुछ दिनों बाद उन स्थानों से अन बरी-बरी गई।
अपने अजनबी देस में:-

अति प्रकार यह कहानी मध्यकालिक भित्ति दिनदी की तही तस्वीर तामने आती है। वैसे अर्थात् कहानी में तंग्हु की अधिकांश कहानियों की तरह चित्रण का तीखा तेज वही है। इस कहानी में एक कर्म का जीवन किल प्रकार बीतता है उसका तौफूत वर्णन किया गया है। आधुनिकता के युग में एक तामाम वर्षा तीव्रता तामनों में फिल्मी वनिताजी से अपने परिवार के लिए टीवी चैनल जुटाता है। निम्न मध्यकालिक व्यक्ति के जीवन के सामाजिक और आर्थिक व्याख्या की इस कहानी में बहुत बारीकी से प्रशिक्षित किया गया है।

अपने अजनबी देस में:-

अति प्रकार व्यवस्था का पदरासाह हुआ है। चंदी लोगों ने देस को फ्राँस-टैंक के नाम पर फिल प्रकार बुटा-बसोटा है, इसका जीवांत विकास कहानी में प्रमाण होता है। इस लोकराज में सब कुछ जानकारी बात है और लोकराज में प्रत्येक व्यक्ति ने अपने निजी स्वरूप की पूर्ति के लिए अपने-अपने कार्य को लोक्तेवा बनाया है।

आचार्य के बाद इस्माइल देस में लोकांतर की स्थापना हो गई तथा जनता का अपना राज हो गया। लेकिन बस नहीं देस अपनी तामना लगा था। पहले रातों-रात तारे काम हो जाते तो लेकिन जब से जनता का राज हुआ तब काम जनता के तामशे होता है। इसलिए लोगों के बने में बसती लग जाते हैं। अंतिम तक काम में दिलाससी नहीं लेते। मुंगाफ़बोरी की पूर्विता बदली जा रही है। फिर मर जाते हैं, जब लोग सेवकों का परिवार है। यह के लिए बदल प्रकार दीवानधंकों एक मैकंटोर के माध्यम के। उनके बाई भवान-वंशजों कार्यपोषण के सदस्य थे। वह भी प्रत्येक मामले में हेरा-फेरी करते थे। इसके अन्य लोगों के काम भी करवते देता था। तथा स्वयं भी मुनाफ़ा कमाता था। लोकांतर के नाम पर हेरा-फेरी की जाती थी। इसके साथ ही लोक्तेवा का इंडा पीटा जाता था।
शाम को लेख का कहानी के घर जाते हैं। वह कहानी इस लोकतंत्र से बहुत दुःखी था। तथा बहुत वांछिता से वात काट रहा था। फिर भी उसने लोकतंत्र पर कोई रिपब्लिक नहीं की। वह सब सूरती के लिए टिप्पणी था। वह अपने भारत पर भरोसा करता था। उसे एक बुरी लट थी भारत पीने की। यह एक कहानी हो जाता भारत आत्मवाद हो आता है। जब कभी भारत नहीं मिलती तब वह एक विपसिवाह को प्रशंसा देकर भारत मंगाता लेता था। लेकिन लोकतंत्र की यह हालत देखते महादेह हुआ। लोकतंत्र की पुलिस भी हुए कामों में जुटी हुई है। उसे लगा कि यह देश उसका बड़ा है, उल्लक्ष देश अब आजाद हो गया है।

इस कहानी में आधुनिक समाज में व्यापक भ्रष्टाचार का विषय किया है। "अपने अजीब देश" में प्रायोजन पर बहुत अन्यों कविता है। प्रायोजन के नाम अनुसार की प्रतीति यह है कि "जो लोग रहा है वह काम नहीं कर रहा है और जो काम कर रहा है, वह तो काम नहीं कर रहा है।" इस प्रकार यह कहानी राष्ट्रीय जीवन में पैने व्यापक भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य करती है। स्थानीय भ्रष्टाचार, मुनाफेकारी तथा लाजपतीताश्चत की पुस्तिता के समाज को झुकी तरह के वक्ता नियाम है। जो लोग तत्तास्त है वे गलत काम करके सुनाफेकारी करते हैं और साथ ही लोक तेजा का हंगा पीटते हैं।। दूसरी और जो सावधान व्यक्ति है उन्हें गराबबाबी रे बधाई कर दिया है। इस भारत काम में पुस्तित उनकी मदद करती है। किंतु व्यापारिक स्थिति है कि पुलिस का काम होता है कि वह बुराई को निमित्त जब कि वहां पुलिसवाला बुरा एक काम को भारत की बोलता उपलब्ध करवाता है। कहानी के रूप में भारत जनता इस भ्रष्टाचार और कुस्तियों को मौज धारण कर लेती जा रही है और विद्रोह नहीं करती। भारत का प्रतीकुल विद्रोह ते विपश्चित की हो रहती है। व्यक्तियों के प्रति मोड़में इस कहानी की तपेदना का केंद्र बनाने प्रयत्न है।

हस्तिना मूद्ये:-

यह कहानी इस संग्रह की अंतिम कहानी है। यह कहानी भारत-पाकिस्तान मुद्दे की युगों मुख्य पर लिखी गई है।

. . . . . . . . . . . . . . . . . . .

"हस्तिना मूद्ये" - कविताओं - 450.
पाकिस्तान के तर्क अधूर थे। दिल्ली का दौरा करना वाले थे।
उनके दिल्ली के दौरे की कैपूरियाँ की जा रही थी। पाकिस्तान के तरकारी के फूड में भागदोल खान रही थी। अब्बासनवीलों को बातों में निर्देश दिया जा रहा था कि वे अब्बास को बताएँ कि फूड रिपोर्ट दें। इसके बाद शायरों को बुलाया गया। उन्हें दौरे के लिए नज़रों और नर्मों के लिए तैयार करने का काम था।
उन्हें कहा गया था कि नज़रों और नर्मों को पहले ही संघर्ष में। यह भी कहा गया कि इन नज़रों और नर्मों के लिए उन्हें महत्तात्मा भी दिया जाता था। शायरों के बाद बैंड वालों को इसका दिया गया कि खैफ कांग्रेस जिन नर्मों को बुलाने, उनकी पूर्वें तैयार करने होगी। उन्हें यह भी निर्देश दिया गया कि बाज़ारों में दौल को अधिक महत्व प्रदान करें और दूसरों बाज़ारों का प्रयोग न किया जाए।
बैंड वालों के बाद कोटोग्राफरों को बुलाया गया। उन्हें कहा गया कि वे अब्बास नवीलों के हाथ बटार्ने तथा पाकिस्तानी फौज के अंदर जोड़ देने की साधनी की बाज़ारों तैयार करें। यह भी आदेश दिया गया कि कुछ खिताब नवीलों की बाज़ारों में तैयार की जाएं। उन्हें पाकिस्तान का बांडा हिंदुस्तान की इमारतों पर पहुँच रहा था। क्योंकि ब्रिटेन और अमरिका के अब्बास नवीलों को मांग रहे थे। अतः ये तस्वीरों तदर के दौरे से पहले ही तैयार हो जानी चाहिए।
संघर्ष सब तैयार हो गई। अदालत तीव्र-तीव्र राक्षसपिंडी में दौल जमाना शुरु हो गया। तदर दौरे पर जाने की कैपूरिया थी। अब्बास नवीलों दूल फैक्टरी में। शायर लोग नर्मों और नज़रों पड़ रहे थे। वहाँ पर पिछले उपस्थित नहीं थे।
कुछ ही देर बाद पता लगा कि भारतीय फौजों ने बजाती हमला किया है। तथा उनकी फौजें लगातार आगे बढ़ रही हैं। इसके बाद नामक, नया भारतीय फौजें बढ़ आईं और वहाँ जमकर युद्ध हुआ था। पाकिस्तानी कमांड का मिश्रित, बाहर गई थी और वहाँ समय युद्ध हुआ था। पाकिस्तानी इमारत का टिकौड़ीय बाज़ार गया। हिंदुस्तानी फौजों ने उनकी लाप तंबाकू कर रख ली।
फौज वालों ने नास्ता का अंतिम संस्कार करने के लिए उनके फौकोटोग्राफर को दूला। यह अपनी फौजों
की वीरता की चर्चा करता रहा। उन्हें अपने फिल्मैडियर की लाश की जोती खूंटी और फिर अपने में ही मस्त हो गए।

इस कहानी में व्यवस्था के भूमिकायार में किस प्रकार संलिप होकर बुझिखीरी, कलाकार अपनी आत्मा की आंताजू को दबाकर अनुश्रवित से दूरस्थ पुष्करात्मक कार्य करते हैं, यह इस कहानी का केंद्र विद्वांस है। हुम करने वालों के आगे इस जीवित होते हुए भी मृत के समान है, क्योंकि इस उनके तकियों पर नाचते जा जाते हैं। जहां हमें विरोध करता थाहिंदे, इस विरोध नहीं करते, जहाँ तत्पर कहाना पार्थिव, हम तत्पर भी नहीं कह पाते। इस तात्त्विक हीतता का उदाहरण इस कहानी में किया गया है। इस कहानी का नाबिकेन्द्र व्यवस्था का खोजनापत्र है और जनता के वोटमंग को इस कहानी में लेखकीय आकांक्षा बनकर पेश किया गया है।

"विद्वान मृत्" अपनी कहानियाँ अपना एक तत्त्व रखती है। और इसी न किसी स्पष्ट तात्त्विक विविधताओं का प्रदर्शन करती है, और यह एक भक्ति-दिनाली है कि कलाकार अपने परिवर्ते के प्रति निरंतर संपर्क है। इन कहानियों में संवेदनात्मक गहराई का आवाज और तीव्र-विवाह की प्रमुखता लक्षित होती है।

22. व्यवहार तथा अन्य कहानियाँ:

इस कहानी लंबट में जीवन के विविध क्षेत्रों के पहलुओं पर विवाह किया गया है। व्यवस्था के खोजनापत्र का विकास किया गया है। नारी स्वातंत्र्य, नए नैतिक मूल्यों की स्थापना का वात की गई है।

व्यवहार कहानी लंबट के अन्य कहानियः इस प्रकार है:-

1. नागमणि
2. लाल
3. प्या कुछ और
4. अकाल
5. मेरी प्रेमिका


|| नागमणि :-

यह कहानी इस लंघन की पहली कहानी है। "नागमणि" कमलेश्वर की तीसरी दौर की प्रसिद्ध और समक्ष कहानी है। इस कहानी में सिवानाथ नामक युवक हिंदी पुराण का गंभीर कथा का मुख्य विषय है। गांधी जी ने इस पुस्तक का ही अपना जीवन विचार दिया था। हिंदी पुराण ही उसका धर्म था। सिवानाथ ने हिंदी विषय के लिए क्या-क्या लघु नहीं किया था। सुमिता जैसी भामी की गांधी के दिन ही रेल के दिशे में तरह-तरह ते उसे प्रेमनिवेदन मिला था जितने वह उस सबको छोड़, अपनी "नागमणि" को छोड़ कालीकट-कोचीन-हैदराबाद आदि के लिए कर गए था। किंतु उसकी इस निकटा का क्या लघु है? उसने तब लघु पता था: "अपनी भाषा अपना देता है। अपना राजा अपना देता है।" किंतु जब वह अपने शहर लौटकर आया तब उसका यह स्वर्ग टूटा मिला: कहां है हिंदी? इतने बर्मी
के बाद भी हिंदी कहीं नहीं थी। देश में हिंदी प्रृचार-पुस्तक के नाम पर यही तो हुआ कि हिंदी प्रृचार पूरी तरह अधिकारित हो गया। उसने हिंदी प्रृचार के लिए एक कार्यालय स्थापित करने का विचार बनाया। उसका उद्घाटन तिल्ला किया गया। द्वारा करवाना चाहता था परंतु उसे कमिक्स पर मिलने भी न दिया गया। इसी से बहुत आघात हो गया। एक दिन गर्जावश्यक में उसे हिंदी भवन से निकाला गया। एक दिन अपने रिश्ते के बारे में गया। उसकी पत्नी सुमिला ने विवाहार्ग की बताया कि पहले उसकी गार्दी विवाहार्ग तो ही करना चाहते थे। यह दुनिया विवाहार्ग की भटक बढ़ गई। विवाहार्ग की लाग न हो उसकी रिवाज सर्वथा वैज्ञानिक है और वह ताप की तरह ही अपनी बाल धूलकर पागल हो गया था। उसे लांकना कि नागमग बाले ताप की तरह वह अकेला ही रह गया। ऐसे सिक्करावन लोगों की स्थिति अंजाम में ही तमाम होती है, जिन्हें रिवाज पर उपवास रखकर वह कहानी आधुनिक जीवन के दर्द का रचास्त कवितात्मक लघु में कराती है।

यह कहानी नवग्रंथ "भाषयुग" के स्त्राधिकरण विशेषक, 17 अगस्त 1963 के मूलभूत। इसमें "भाषयुग" भी विभाग के रूप में लिखा गया है कि इन्हें कभी भाषा देश में हिंदी की व्यापक गति हुई। भाषण के लिए लोगों का विवाहार्ग विवाहार्ग, बाकी मृत्यु और सुमिला अपने-अपने घर की तलाश में है। इन लोगों के यह वेदान्त वपन कहानी में बहुत अग्री तरह से उभरा गया है। सुमिला का विवाहार्ग के लिए तंत्र दृष्ट यदि कहानी में अभिनवतित के हुआ होता तो प्रभावित होकर ती थी। उस लघु में कहानी की जीवन याद देखने के जबान प्रभाव के बदलें देखें। यह प्रभाव के कहानी की रिवाजी में सुमिला प्रशंसा के लिए एक से स्थान न होते हुए भी उसे बेठा दिया गया है। इन कहानियों में हुसूम करने वालों के अगर भी जीवित होते हुए भी मृत के तमाम हैं, क्योंकि हम उनके लिए पर नापते चले आते हैं। जहां हमें विरोध करना घाटिप, हम विरोध नहीं करते, जहां तत्त्व कहाना घाटिप, हम तत्त्व भी नहीं कह पाते। इस तांहाजीत ना का उद्घाटन इस कहानी में किया गया है।
यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है। "लाश" देस की राजनीतिक स्थिति पर कठिन करने वाली एक समाज कहानी है।

शहर में प्रदर्शन कारिगरों का जुड़वाने वाला था। जुड़वान के नेता भी शहर में पहुँच पकड़े थे। इस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए बाहर तंग भी व्यतीत थे। स्थिति को ठीक तरह से समझने के लिए पुलिस जी-जान से जुटी थी। पुलिस कमिश्नर मुख्यमंत्री को लारे अंतराम की सूचना देने पहुंचा, तब उसने देखा कि मुख्यमंत्री तथा मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री निकलते बैठे हैं। कमिश्नर पूरे प्रयास के अंतिम में बला रहा था, लेकिन मुख्यमंत्री तथा मुख्यमंत्री जरा भी दिलचस्पी नहीं ले रहे थे।

चार बजे मौजूद आरोपी होकर भांगते से अबर की तरफ आगे सरकता जा रहा था।

तभी अंदाज़ मुख के अगले हिस्से में भगदड़ गया गई। पुलिस ने गोली फांसी आरोपी कर दी। चारों तरफ आग, धुआं और चीख ही चीख थीं।

तब उसे जुंग, चप्पल, खेड़े एवं धंतियां आदि की बैठे रह गए थे। धावक आदमी जल्दी तक में भागी रह दिए गए। गुंडों को तो पहले ही पकड़ लिया गया था।

पता की नहीं चला ये सब कैसे घटा। बहुत आरोपक की वात थी कि इतने खेड़े देने के बाद भी एक ही आदमी मरा था। उस लाश को देखने पहुंचे। उन्होंने कहा कि वह लाश उनकी नहीं है। तों पिंड़ यह लाश खिलकर है? यह लाश आज के भूमित्व के रूप में बुझ जाने वाली उस बुझी लड़ाई की है जिसमें विरोधी या सत्ताधारियों में अब कोई अंतर नहीं रह गया है।

देस की राजनीतिक व्यवस्था में सरकार और विरोधियों पक्ष अपने न्याय समाजलेखी स्वाधीनता की पूर्ति में से हुए हैं— सामान्य जनता के हित की पिटा किती को नहीं है। तारी व्यवस्था ने जीवन मूल्यों की हालत कर दी है और तरकार था।
विपश्च का कोई भी नेता उत्का विमेदार नहीं बनना चाहता। सभी तामांच मानदो हो लाप की स्थिति में लाने के दायित्व के कुछ बाटो हैं। इस लाप को चाहे जित रूप में नबारा जाये लेकिन लाप, लाप है और वह फिरहे है यह भी अब दिया नहीं है।

"लाप" अपनी सफेदीकात के बाक्कुड़ इस देश के तमाम राजनेतिक प्रशंस को बेकाबू कर देने में सम्भव है। तत्ता प्रतिष्ठानों में जीनबाले मजिखा-नेताओं तथा यूनेस्को विद्यु ता ता का तेवर अनाकर शांदार शूलुक का आयोजन कर व्यवस्था के विलय देखने वाले विधेय नेताओं में व्या आज कोई प्रतिश-सालिक उत्तर रह गया है। यूनेस्को विद्यु का तेवर भी आज तत्ता में आते ही लंग पड़ जाता है, इसे अब कोन नहीं जानता 1 और तो जनता भी जानने कोई है। जनता छोटे-बड़े सभी नेताओं के द्वारा इलेक्ट्रो दी रही है, इसे आज नहीं लेख भी जानता है।

"लाप" देश की राजनेतिक स्थिति पर कदाच सर्वात लक्ष्य कहाँ है।" इसकी हमारी तामांची व प्रमाणन स्थिति का विचार है। राजनेतिक दलों की मिली भाषा भी खुलकर तामाने आई है। व्यवस्था के प्रति मोटाम इस कहानी की केंद्रित स्वर्णांत है।

"या कुछ और" :-

इस कहानी का पात्र रामनाथ एक कवित के तामान कार्य कर्ता था। इस बार शुभेन्दु नामक पत्री का मुख्यदर्म कवित काहिग के पांच आया। शरदीला विश्वा थी। उसके पाठिदार संगतित के लिए बहुत ताम करते थे। इस मुख्यदर्म के कारण रामनाथ को शुभेन्दु के पांच आया जाना पड़ता था। भीरे-भीरे रामनाथ शुभेन्दु के ताम थुलिमिन गया। वह उसके दल-पार युवा उसके पांच भी चला जाता था। रामनाथ की पत्नी को इस बात का पता चल गया था। इस लिए रामनाथ को जली कटौती तनाव रहती थी। रामनाथ का गन गृहस्थी में नहीं।

"डॉ. पुषपपाल सिंह": "कमलेश्वर कहानी का संदर्भ" - गृह-81.
लगता था। उसकी पत्नी का व्यवहार बहुत उपेक्षामय हो गया था। रामनाथ ने अपनी बेटी का विवाह तय किया। वह विवाह की तैयारियों में लग गया, जब की उसकी पत्नी हैं कि माँका मिलेगी हर उन्हें जली-कटी सुनाने कारण।

मेलान घर में आए गए। रामनाथ ने पत्नी से पूछा शहीदला के यहाँ बुलाया भिक्षा दिया था या नहीं। उसकी पत्नी की बोली वही कि शहीदला उसके घर में नहीं आयी। रामनाथ बोहरी की देव बाद शहीदला के यहाँ पहुंची।

वहाँ जाकर आमंत्रण में बाट पर लेत गया। उसे बुलाने के लिए घर से झाँसे दो बार आ कुंज था। उसके बिंदु थी कि वह अकेला नहीं आया, शहीदला भी साथ आयी। तीतरी बार जब झाँसे आया तब रामनाथ ने कहा कि अम्मा से जाकर कहता कि शहीदला आयी और आरती का न्यायदाता लेनी। झाँसे ने कहा कि अम्मा ने पूछा कि क्या वह स्वयं आकर उसे ले जाते। वह भी वापस था फिर शहीदला भी उसके घर आए। वह करना नहीं कहा कि रामनाथ तीतरी के साथ नहीं शहीदला के पास अम्मा का बुद्धि लेना की सेवा करें। वह मारता है वह तब भी उसे नहीं देखा और अम्मा देखता है। शहीदला झाँसे के साथ करता गई। वह भी पीठ-पीठ पर पहुंचे। रामनाथ की पत्नी ने शहीदला की बड़े लेट केंद्र प्रेम से त्यागत किया।

"क्या कुछ और" में रामनाथ के साथम तस्कित के निरंजन, कमानी, जीवन में तार्किता की तलाश मिलना है। वह जीवन से ध्वस्त भाग जाने की उम्मीदें लिख गया। उसे अपनी जीवन निरंजन काव्य है। वह जीवन दूसरी की शरीर पर जीता है। "जो अपने बैठे हैं उनके पास भी कोई बास शरीर कहीं है। शरीर का प्रेम है।" रामनाथ घर के माटों से ध्वस्त शहीदला के पास शरीर लेना छोड़ दिया है। शहीदला के उसके यह लाव प्रेम की संख्या है या कुछ और.......

वस्तुतः यह एक अनाम अक्षर्ष है जो पश्चात कस्ती प्रेम रामनाथ को शहीदला के बाहर है। यह कहानी तस्कित की निकी स्थानत्व और उसके प्रयास कलात्मक की तार्किता की अनुमूल्यता को अभिव्यक्त करती है।

"यह कुछ और...." कहानी में नर-नारी संबंधों को यौन की एक मान भुराना से दी परखा जाता है, इसी पथर्य को यह कहानी में दर्शाया गया है।

न्यायदाता वैश्विक परंपराओं का अंतरह्मार्थक अन्यथाका की भी यहाँ रेखांकित किया गया है।

"न्याय तथा अन्य कहानियाँ" - किशोरकर - पृष्ठ 106.
अवधि :-

यह इस लंब्राण की चौथी कहानी है। रघुनंदनलाल अपने किसी संबंधी विवाद को दायत में जाने के लिए ताफ-सोये होकर बच्चों को साथ में ले जाते हैं। ताफ़क बच्चे भी दायत का स्वाद यह लक्ष नहीं कर सकते हैं। निर्धारता के कारण वे अपने बच्चों को अच्छा खाना और अच्छे कपड़े नहीं दे सकते थे। दायत में पहुँचकर बच्चों ने खाना ले धारण किया रघुनंदनलाल का पोपला मुख में शरीफ़ बना दिया तथा घर वापिस आकर पत्नी ने खाना मांगा।

आर्थिक आवश्यकताओं के अनुसार अपने बच्चों में स्वादिष्ट भोजन भी प्राप्त नहीं कर सकता। उसके बच्चों में एक इम्या रह जाती है तथा जैसे ही कभी विवाद में जाने का अवसर प्राप्त होता है तब वह अपने पति की भी भाव बताते हैं। ताफ़क बच्चे भी दायत का आनंद उठा लेते हैं। लेकिन दायतों में खाने-पान के उपलब्ध आयुष्य न होने के कारण तुरंत या ठंडी पूर्णिया नहीं हो पाती। वर्तमान में निर्धारित व्यवस्था के जीवन की ये स्थितियां बहुत कार्यक्षम हैं।

इस कहानी में आर्थिक अवधि में पिता रहे भारतीय जनता के उस व्यवस्था को बोलता गया है, जिसमें बच्चों और बूढ़ों को दिन वाह होता तक भर पेट नहीं हो पाता। व्यवस्था की निर्देशितता को उद्धार भरने वाली यह यथार्थ बोध की कहानी है।

मेरी प्रेमिका :-

शांता ने लेख को पत्र लिखकर कहा कि उसके नारी पत्र बहुत कम्यून के वे आत्म इत्यादि कर लेता हैं। उसके लेख को बताया कि तुरुकणानाथ नामक लेखक ने विवाहित होते हुए भी उसके छल किया है। डेवु नामक तारिखत्वार की आन्तिक संभंध स्थापित करना चाहता है और पति बंकटा कृतिका को होने के कारण उसे परेशान करता है। शांता ने पत्र लिखकर उसे कहा कि यह बहुत आत्महत्या कर लेंगी। परंतु विधिविधा उसे गरमे नहीं देती।
अधिकार एक दिन रात को शान्ता ने लेख का दरवाजा बनाया। लेख उसे देखते हैं तो गया। उसने शान्ता से पूछा कि उसने तो आत्महत्या कर ली थी। शान्ता ने बताया कि वातावरण में उसने आत्महत्या नहीं की। वह लेख के सिरे के पास के जिा नहीं थी, अतः वह उससे मिलने चाहता था।

"मैरी प्रेमिका" कहानी में उल्लखित दूरी-दूरी, डीडी-डीडी लेखनार है।

वैज्ञानिक वैज्ञानिक के साथ युक्त नारी स्त्रियों को सीधाता का पात्र नहीं बनाना पाया। आत्महत्या को ग्राहकीय सघनता है। हूँ: धीर, धीर, पीड़ा ती बलने का उपाय बोलती रहती है। कहानी लेख की अनुभव में पत्र-पत्र के बीच लिख गये पत्रों के माध्यम से सीधी है अन्ततः साक्षताकार भी होता है।

अपने पत्रों में शान्ता ने पुस्तक अधिकार बांधना, छोड़कर आयु तथा अन्य को पराजित कर देने की भावना के अधि को धारण किया है। "अधिकार दिन पूर्वक बेख शान्तीन और कौम तोहता है पर अधिकार प्राप्त करते ही वह भावना और वर्ण ही जाता है। पत्रों के तर्क-फक उक्त पैरे चारों और छोड़ हो गए और अब इन पत्रों से मैं काली पड़ गयी हूँ। वे एकी यादी की जानी- अन्या जगहों पर नील पड़े हुए है।" 111. 11

अपने पत्र द्वारा फिर गग जलायापार झड़ा तक सह सकती है, सहाय है, अंतः अंतराल बहुत जाती है। सीधाता के पत्र होते हुए भी निगरिका के प्रति अघिमत है। "मैं जलने आत्मी से मरना नहीं चाहती और और मरना नहीं खाला वह मर भी नहीं सकता। बलों में क्या भी मैंने इतना कथा किया है कि मर जाना? आब तो जिन्ता रहने की तमन्ना और बदलती जाती है।" 112. 11

इस कहानी में शौकिक को जानने तथा लेख की रूपक रचनाओं से किस प्रकार उक्त करते हैं। विवाहित होने पर भी प्रेम का नाटक रहते हैं। ऐसे लोगों का धर्म किया है जो पारिसारिक विवरण के तनाव के ब्रह्म होकर अपनी कुंडा की प्रतिपूर्ति वाणिज्य द्वारा करते हैं। देखिए ऐसे ही कहानी का पूर्ववर्तिन निधि है।

111. "मैरी प्रेमिका" - "बयान और शैल्य कहानियाँ" - पृष्ठ-87.
112. पृष्ठक - पृष्ठ-88.
यह दोहरा व्यक्तित्व खोला है। बाहर उत्तरदायी भाई की भूमिका निभाता है। लेकिन भीतर ही शांता की अपनी यातना का विकार बनाना चाहता है। शांता के पिढ़ीक में से उसकी बदनामी करता है। इतनी नीचता पूर्ण व्यक्तित्व स्वांतता के बाद ही इतना तमाज़ में पनाह है।

रुख़ी: जोखिम:

यह कहानी आर्थिक कठोरों से जूझते, कहाँ पनाह पाने की नाकाम कोविदा है। जोखिम का नायक आर्थिक दबावों से गृह्थ है। कबीर से बंधे अभी महात्माग्न में जीविका की बीज में आये व्यक्ति का दोहरा पद्म विपिन विति है। युवा नायक बेहोशःगार था। उसे भीतरी काम मिल जाता था। जब काम उसके पास नहीं होता तब उसका वक्ता तंगताली में कटता था। या रैतन स्थिरता जो तिरक न दुःख की है, न दुःख की, सिर्फ एक ठहराव की। दोनों अर्थव्यवस्था के कड़े शिक्षत की। या बेकारी से परेशान उस युवक की जितने आगे प्रदेश है। उसे तक्तरों को देखने की कलम थी। थीरे-थीरे वह इतना कालागय होती गई। बहुत धन कमाते हैं। इतना इतना का पूर्ण करने के लिए वह समय के तट पर निश्चितता रहनी थी। उसकी मां के खत आते हैं। हर पत्र में अग्रें होता कि वह गाँव सीटाक्रान। एक बार पत्र आया उसमें मां बीमार है रेखा लिखा था। नायक के पास इसने ऐसे नहीं थे कि वह अपनी बीमार मां को देखने जा चेत। बाद में वह मां को देखने पहुंचा तब मां बहुत बीमार थी। वह बदनाम जा रहा था। उसकी मां बीमारी में भी चिंतित थी कि बाहर दिन-प्रतिदिन मद्यमा क्यों होता जा रहा है।

नायक की मां मृत: प्रायः हो गुकी थी। नायक बहुत परेशान था कि अब उनके भविष्य का क्या होगा। नायक ने विलम्बी मोरारजी देसाई को पत्र लिखा। विलम्बी उसकी बीमार मां को देखने आए। वह नायक की बातें तुकदर बीढ़ गए तथा वास्तव को गई। नायक की मां का शहीद और भी पता गया था। मां मर गई। मां के पत्रों पर विलम्बी शांती है। लेकिन उसकी उन्नति व्यवस्था को घेरता अभी भी लेख की अंदाज़ों के आगे से नहीं हटता।
इस कहानी के कथानक के माध्यम से यहाँ देखा के हर मामूली आदमी की तत्तावीक को जुड़वाने के लिए गई है यहिदु देश का विलासनी भी इस तामाम्य जन की मूर्तियाँ को हल नहीं कर पाता है, यह स्थिति का बुरा चरण है। इस प्रकार की कहानी आज के मुख्य की विभिन्न की जोखिम भरा आलेख है। डॉ. विनय के अनुसार: "सबसे बड़ा कदम तथा इस कहानी में उभरा है कि समानसेत हमादारी का जीवन सोचने की लाज़ा लिए भी आदमी भटकता है और दूसरी स्थिति में भी उनका भटकाव बल्कि नहीं होता।" डॉ. रामदरा मिश्र को इस कहानी में मोराशी देवारी की उपस्थिति के लिए शिक्षा से एक देवी मधुबारा का लगाया है जिसे "कहानी एक मजाक तो लाने कमरुदी है।" इस कहानी में अक्से नारीलाल का रंग रंग है जहाँ "तामाम्य जन" या "मामूली आदमी" के आश्चर्यः कहानी में कई बार हुई है। इसे लाने का लगाया है कि "समांतर" कहानी आंदोलन का कथानकार इस शब्द का बार-बार ला रहा है।

आधुनिकता में व्यक्ति ऐसे पैदा गया है कि उनके पास जल्दा भी धन नहीं है जिसे अपने जीवन के अनिवार्य आवश्यकताओं को पूर्ति कर सके। वह अपने बीमार माँ को देखने भी नहीं पा पाता। आर्थिक तनावों के उसे जल्दा दुःखित कर दिया है। वह तत्काली की बोझ में समुद्र तट पर भटकता है। लोगों की रहता है कि उसे धन कैसे प्राप्त हो। यह भारी स्तंभ व आधुनिक जीवन की तबसे बड़ी शास्त्री रचना है कि वे सिखाये देने के लिए अभ्यास के हमारा युवा का दुःखित दोकर रह गया है। इस प्रकार निर्धारता और आर्थिक आभास के विरोधी क्षेत्र पर कुशलता और आर्थिक आभास को रखकर समाजीय यथार्थ को उद्देश्यित किया है।

न्याय ऊँचा:

राज्यकाल : 29 जून, 1962 निजी और बाहरी संदर्भ के ऐसे ही रिसर्च की कहानी है। यह कहानी स्तंभन्यता से पिंडा रहने की इधर रहनेवाले एक तही व्यक्ति पर धरारि तरफ से पहुँचने वाले कुछ सामाजिक दबावों की कहानी है।

डॉ. विनय, "समाजीय कहानी" - पृष्ठ 96.

"कपल्लवर" [सं. मुक्तरसिंधु] "कपल्लवर की कुछ कहानियाँ" - पृष्ठ 30.
इत सहानी का नामक फोटोग्राफर है, वह दिल्ली का था। उसने आत्महत्या की। आत्महत्या की आराधना माना जाता है। इस कारण मृत फोटोग्राफर की पत्नी को कानून ने अदालत के कदमों तक की जाय निर्देश। फोटोग्राफर की आत्महत्या के प्रमाण प्राप्त नहीं हो पर रहे थे इसलिए तिल्ला तरह तरह दर्शाए गए कानून के दावों में आरण की वजह का आरंभिक सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। उस व्यक्ति तर्कसंगत पत्रिका में फोटोग्राफर था। उसने प्रेम इनकारण के खुराक में पारस किया तक क्राह किया। उसने करीब छः सात साल एक तर्कसंगत पत्रिका में फिर साधे चार साल एक विज्ञापन कंपनी में काम किया था।

अदालत में स्त्री की व्यक्तित्व जिकरी का इतिहास बार-बार दोहराया गया है। यह प्रयास किया गया कि उसके पूरे जीवन में बहुत न कहीं इस आत्महत्या के कारणों के बीच प्राप्त हो जाएं। इसी कारण बादश वर्ष पहले के विकास नामक पुस्तक की घड़ी की हुई। कानून ने तीनों तरह लगाया कि विकास नामक यह पुस्तक इस स्त्री की जिकरी में दोबारा लौट आया होगा, और इसी कारण उस स्त्री के अपने पति की हत्या कर दी होगी। लेकिन इसका कोई निर्णय नहीं था, उस स्त्री ने कहा था कि वह अपने पति के बादश प्रेम करती थी और उसका पति भी उसे उनका ही प्यार करता था। गादी से पहले की घटना का सुनौत पड़ते रहे। उन्होंने अपने जीवन का पता लगाया था और रहा है वह इस तारी ऐतिहासिक के समय रही है। वह कहती है कि— "उन्होंने मुझे ख़ुशी उतारने को कहा था। मैं थोड़ा उसका वर्ग थे। दिन का वक्त था। वे निरंतर लिखी बैठे थे। अब उन्होंने मुझे वापस की बीच समय पहले को कहा था। मुझे तरह-तरह से बैठाया और निकाला था और तस्वीरों की थी। उस वक्त उनकी वह आँख पहले की तरह भारी रही थी। मैं समझ गया हो था, मैं तीन मुझे देख रहे थे। उस वक्त जब दे तम्मत के... जो, प्यारी अपने में दूर के हुए थे, तब भी आठ-सात बार उनकी आँखें में बुले के कतरे टपके थे।" यह कहते हैं कि उसे बादश बार-बार गलत सलाह करते देखते रहे। इसमें वह अदालत से कह देता है कि गलत और व्यर्थ के प्राप्तों के ढीक निर्णय तक नहीं पहुंचा जा सकता। वह तारी ऐतिहासिक स्पष्ट करती है कि उस दोनों में कोई इच्छानुि की नहीं था कि किसी बात के प्रकाश ने न हो भी आत्महत्या की है। वह बताती है कि जब तर्कसंगत
पत्रिका में नौकरी करता था तब उसके पति के साथ एक ऐसी घटना घटित हुई थी कि उस घटना के कारण ही पति की मिलतीयां व तनाव उत्पन्न हुए, उससे लंबा आकर ही उसके पति ने आलमहत्या की।

इस कहानी में मथ्युर का नौकरी-पेशा व्यक्ति इतना व्यवस्था में किया प्रर्दशित है। इसका प्रमाण इस कहानी का फोटोग्राफ़ उसकी पत्नी है।

न्याय व्यवस्था की पृष्ठला सिखा संस्थाओं की गैर-इमानदारी, पतियों की सस्ती पक्षारिता ऐसे बिन्दु हैं जिनके विकार हमारी व्यवस्था के ठोंकरण को निषेध करते हैं। व्यवस्था के ग़ूँत मोहब्बत इस कहानी की संदर्भ का नामित है।

एक इमानदार और लेखक में व्यक्ति का आलमहत्या इमानदार शंकितों के अलावा दर्शक भी आतंकवादी की दुर्दम जंग दर्शाता है। यह कहानी पूरी तरह समकालीन घटनाओं को उजागर करती है।

"पैसा........ कुछ तो होगा ही। और वह "व्यक्ति के खिलाफ ही ही सज्जा है। बी, व्यक्ति माने अकेला आदमी, ऐसे अकेले हैं........ या आप।"\\n\\nकहानी का यह अंतिम बाक्य किसी भी पाठक को तख्ता सतनामे में छोड़ देता है और इत व्यवस्था में की रहे लोगों की नियात पर बार-बार तोड़ने को मजबूर भी कर देता है।

---

कृपया देखें और नीला लोग :-

इस कहानी का कथातार यह है: श्रीमती सरीन और पांडा क्षेमीर में ऐसे कॉटेज में लिखी हुई थी। श्रीमती सरीन विकास की और शांता तैलिका।

ज्यदेव गड्डों का बचाव था। अपने बचाव के खिलाफ थे। क्या उसे आगे जाना था। वैसे भी यह इन महिलाओं के बीच टटटटा मजबूत कर रहा था। उसने श्रीमती सरीन को बता दिया था कि उसे वापसी के बाद भी ऐसे महीने के लिए क्षेमीर में दूर ठहरना है। श्रीमती सरीन ने उसे निन्मलय दिया था कि वह उसके साथ ही ठहरें। शांता तो वापस नहीं गई थी। श्रीमती सरीन के साथ दो

---

कमलेश्वर "व्यापार" - पृष्ठ 106.
क्रमांक और \[ =: 65 := \]
क्रमांक और वे \[ =: 65 := \]। एक कमला नामक पुलिस को रातों का काम करता था दूसरा
अक्का तिपाही भाई। वह रात में बौकींडारी करता था। क्रमांक सरकार के
इस लोगों पर विचार ही दस्तावेज़ होता था। उन्हें न तो कमला की ईमानदारी पर
विचार था और न ही तिपाही के चरित्र पर। क्रमांक सरकार दिन बनाने में
व्यस्त रहती थी। जयदेव भी अपना काम निपटाकर वापस लौट आया था, तथा
क्रमांक सरकार के साथ ही रह रहा था। एक दिन क्रमांक सरकार ने तिपाही को
निकाल दिया। उन्हें संदेह हो गया था कि वह रात को उसके कमरे में फूल आता
था। लेकिन कमला सरकार के बाहर ही शब्दुल्ला के गेट के पेड़ के नीचे तो जाता था। तुम्हारे
तो वह कला आता था। एक दिन क्रमांक ने कमला को सामान बरीदें देने केजाके।
उसने उसे कहा कि वह तुम्हारे बाप को बुला लाए ताकि वह उसका दिलास करें।
उन्होंने उसे कहा कि वह आपके बाप को बुला लाए ताकि वह उसका दिलास करें।
वह तो तिपाही लुढ़े आया कि उन्होंने उसके भाई को घर क्यों बड़ा। उसके
बाद वह चला गया। रात हो गई थी। जयदेव भी ली गया। थोड़ी देर बाद
ही जयदेव को गर्दन पर गर्म तांतियों का स्पर्श हुआ। उसने कभी कहा नहीं आया जाती
हुई। उसने मोमबत्ती जलाई तो हैरान रह गया। क्रमांक सरकार
के िज़ी का केतनी का फूल फ़सा पर पड़ा था।

थोड़ी देर बाद ही क्रमांक सरकार दरबार पाइ। थोड़ा
उठा, और उसने कहा कि तिपाही जंग में फिटिकटात हुआ संघर्ष क्रमांक बड़ा
था। भिकिव तात्र यह रहती थी कि वह किसी बात करवाने के लिए आया था।
िज़ी देर पहले वह उसके कभी के दरवाज़े पर बड़ा था। लेकिन तिपाही ने बताया
कि वह तात्र वाले संबंध ही तो होने के कारण वह
भग गया तथा यहाँ आ गया। जयदेव तात्र को बंदर ले आया। उसने तिपाही
को भी भी नुसा फूला लिया। क्रमांक सरकार ने उसके कमजोर लेने के लिए कहा।
कमजोर लेने सामग्री तिपाही ने फ़स्ल पर पड़ा फूल लाकर पर रब दिया। तुम्हारे
तो क्रमांक का बाप आया था। तात्र ने वापस दोनों को काम पर रब लिया था।

इस कहानी में अमीर और गरीब वर्ण के सामाजिक वर्ण-दैवत्मा को
उद्धारित किया गया है। श्रीमली तरीको, शांता और जबदेव फहे वर्ण को
अभिव्यक्त करते हैं जो भवाद्य है। दूसरे वर्ण में क्षमता, समाहार है, जो निर्देश
वर्ण है। भमकर गरीबी के मारे का वरण वे पानी में बीजते हैं और रात भर पेड़
के नीचे पड़े रहते हैं। इस पर उनकी घोर और अविश्वासनीय समझ जाता है।
इस कहानी के यथार्थ बोध के दो आयाम हैं। एक आयाम आर्थिक संदर्भ का है
और दूसरा आयाम आध्यात्मिक संदर्भ का है।

पैसला:

इस कहानी बयान नामक कहानी -संगी से ग्रामरी कहानी है।

इस कहानी ज्यकरन और तुरकमन के बीच की कहानी है। ज्यकरन
बहुत दिनों के बाद कोई खरीदने आया था। उसी तरह इकने के नज़दे पर
तुरकमन लेंटा-लेंटा मालिक करवा रहा था। ज्यकरन को देखते ही उनके आयाम
दी - "मालिक"। तुरकमन ज्यकरन के दान-पान पूजन करता है। बाद में हिकाब
निपटा ने की बात करता है। ज्यकरन कहता है जब बादों तब निपटा ने।
तुरकमन मंगल का दिन तय करते है। और वही मूर्ख के वेदान्त में। उस मंगल की
dोपहर को इकने की कबुल नहीं माने ने खानीकोटा तोढ़ दी थी।
तुरकमन के दसमी आदमी वेदान्त में थे। ज्यकरन आने आदमी के साथ कुछ देर बाद पहुँच था।
बड़े बोले दिये गये थे। इकने तोली की तरह दिखा हुआ था। तबके तब आदमी गोल
लाठी बारे बढ़ा दिये हो गये। लाठियाँ इकने के तवारे दिखी हुईं थीं। तब की नज़रें
कुछ-दूसरे में कुछ टटोल रही थी। ज्यकरन ने आने दसमी को इस गारा किया।
दोनों गोल ऋण-अर्जन हो गये थे। तबने लाठियाँ उठा की थी। "होशियार"
कहते पर तबने हथियारों को भूल ही गिटा करके लाठियाँ कबूल की थी। "बौल
करारबली की जय" कहके लाठियाँ चमक उठी थी। पाँच मिनट में ही ताल-आठ
रह गये थे। दो के और गिर जाने पर लाठियाँ कबूल की थी। दोनों गोल के
आदमी को तबके इकने में भर कर अपने अपने रास्ते पर को गये।
तुरकमन को टांग पर ज्यादा घोट आयी थी। ज्यकरन उसकी टांग को तवी करने में लगा
था। दोनों दियार बाण रहे थे कि इसे पैसला तो नहीं हुआ। तुरकमन ने कहा
फैसला : गुलाबों पर छोड़ दो। गुलाबों एक खेला है और दोनों उसके पास जाते हैं। फैसला गुलाबों पर छोड़कर दोनों निश्चित तो जाते हैं।

इस कहानी में फैसला तो होता नहीं, फिर दुनिया पर छोड़ दिया जाता है। इस कहानी में गाँव के पहलवान व्यक्तियों का वर्णन किया है।

विनोद नामक

वह कहानी भेजकर युवकों की गंभीर स्थिति को प्रस्तुत करती है।

इस कहानी में तुजाता विनोद दोनों भाई-बहन दोनों एक ही कमरे में रहते हैं। बसते ही लोग दोनों के बारे में बातें बनाना मुश्किल कर देते हैं।

तुजाता भी आधिकारिक के कुछ मद्दत लोगों की हरकतों से परेशान होती है लेकिन विनोद उसे समझाता रहता है कि वह सब तो होता ही रहता है। वह लोगों को बताता है कि वह तुजाता से पैदा हुई नदी किस राज्य में होती है। वह सारा दिन नौरूज़ के लिए बेटनी रहता है।

लेफ्टिनेंट हीरांग भर लौटता है। लोग उसे तुजा-तुजाता बारे में बताते हैं। उन्हें भाई-बहन के संबंधों पर भी विचार नहीं होता। विनोद उसके लिए कि तुजाता शादी कर ले। तुजाता जो लगता है कि शादी के बाद वह भाई का अधिक ध्यान नहीं रखेगी।

धीरेधीरे कुछ समय के बाद तुजाता धीरेन्द्र नामक युवक के संघर्ष में आई। दोनों के संबंध आगे बढ़ते लगे। धीरेन्द्र को लगा कि वह फालतू की बीच बनता जा रहा है। धीरेन्द्र जब भी आता था तब विनोद घर से बाहर बाहर जाता। उसके लिए यह स्थिति असुरक्षित हो कुछ थी, पर उसे कहीं भी काम नहीं मिल रहा था। एक दिन धीरेन्द्र और तुजाता कोईं में जाकर फिसला कर लेते हैं।

धीरेन्द्र भी अब तुजाता के घर में रहने लगा। विनोद को अभी तक कहीं नीली नहीं मिली थी। अतः वह स्वयं को दोनों पर भार समझता था। वह अपने ही भीतर एक विचारक अपगम व अनाहार मद्दत करता था। उसे अपने ही भीतर अपनी उपेक्षा का अहंकार होता रहता था। कुछ दिन बाद बसताने का मौसम आ गया। रात को विनोद गली में लौटा था कि कर्क्ष होने लगी। विनोद ने उपर जाकर
दरवाजा बतबटाया लेकिन वे गहरी नींद में तो रहे थे। अतः उन्होंने दरवाजा नहीं बूला। विनोद रात भर घायल था पर वादर लपेट-बैठा रहा और भीमता रहा। सुजाता से भाई की यह हालत देखी नहीं गई। वह प्यार व ज्ञानहट्ट में बह रही थी कि उन्हें दरवाजा बन्ना नहीं कुलकाया। विनोद उसे समझाया रहा कि उन्हें उसके लिए कितनी जोशिया की थी। फिर व्यावहारिक सुजता ने कहा कि बाथ के तो नहीं तो सदृश लगाया। विनोद ने बाय के साथ-साथ आँधु भी पीए।

विनोद ध्वास-ध्वास में बेरोज़गार युवकों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। जो दृष्टिकोन के कारण दूर दूर तक बनकर रहता है। वह अपनी बेकारी के कारण अपने अथाम, उपेक्षा व दृष्टिकोन को फेल रहते हैं। भारतीय समाज उसी बहुत फर्क-फर्काती है। इसी कारण पुख्त सत्ता वाले समाज में भाई-बहन के आदर्श पर की रहता है, तो उसे बहुत खिलिया समझ जाता है। लोगों की मानसिकता कितनी गंभीर है कि वे उनके भाई-बहन होने पर लोग करते हैं।

यह कहानी बेकार युवकों की गंभीर स्थिति को प्रतिरोध करती है। बेकारी के कारण युवक किंतु निरासा ते भर गया है। बेकार युवक गलत मूल्यों को अपना रहा है। अथाम सद हर भी उसे जीना पड़ता है और बताता ही नहीं, इस लगातार की बेरोज़गारी ने सिर्फ विनोद को ही नहीं भारतीय युवा समाज के भी कई वर्षों को निर्देशित बना दिया है और इस निर्देशिता के वह स्वरूप के उच्च नहीं पता। यह स्थिति भारतीय युवा दर्शन ने जिस बहुत धार्मिक सिद्ध हो रही है।

महानगरीय वार्तालाप की कहानी में आधुनिकता के कई संदर्भ हैं, जैसे- प्रेम विवाह, महानगरीय आधुनिक समय, कार्यकालों की लिंडी, भाई-बहन का निर्देश, बेकारी और युवकों की मानसिकता, पछत तथा संदर्भ आदि। इन्हें संदर्भों से इस कहानी का परिपथ जीवन और यथार्थ बना है।

रातः ।-

इस कहानी में पूर्वीवाद की नंगी तत्परता ने किया गया है जो अर्थ या पूर्वी के बल पर तीन-तीन दिशाओं का साहित्य बदल कर भोगने में समर्थ है। इस
कहानी में बेटाओं का जीवन कुम अभिव्यक्त हुआ है। शारदाबाई भी बेखाय थी। उनकी बेटी तुंडीबाई भी बेखाय थी। उनकी बेटी ताराबाई भी बेखाय थी। यहाँ तीन पीढियाँ की लेकिन ग्राम नहीं बदला था। समस्त देश तथा दिवस में शताब्दियों महत्त्वपूर्ण घटनाएं घटती हैं। “क्या माता की लड़ाई से लेकर विदाई के पूर्ण या जलाभिंवला ध्वनिकांड से लेकर आजादी तक या अजुबा परिश्रम, दीनियाँ विरसयुक्त, बांध कमलम, वियतनाम की लड़ाई तथा युद्धकाल की बाढ़ तक, लेकिन मनमाल भालाल दानिक लगातार शारदाबाई, तुंडीबाई, ताराबाई कूमा, बेटी तथा पोती के साथ तुड़ाते रहते थे। उनकी “रातें” खरीद लेने की रिहांत में है। जानिए कि उनके दृष्टिकोण, महत्त्वपूर्ण घटनाएं, निर्देशयंत्र के बड़े भूमिकांक के पीछे आज भी विवाह तथा तथा देश में विश्वरूप है, इसकी सुधिया या तकलीफ में कोई परिवर्तन नहीं। आया है। इस प्रकार कुंडीमाता का विवाह सुहाय सब घरियों को अपने में समेत करता है। हूं यह कहानी दृष्टिकोण नहीं है। पर यदि देखा जाए कहानियों का यह भी अनायास अपकी अर्थ कुले लगते हैं।

इस कहानी के द्वारा यह भी ल्याय गिरता है कि भारतीय समाज में कहीं भी कोई रेता कालखंड नहीं गुजरा जब समाज में देखा नहीं रही हो। इस कर्म के अन्तर्लक्षण के लिए धनी कर्म मुख्य रूप से उत्तरदायी है। धरोहर के द्वारा पीरी-दर पीरी नारी का अपनी धार्मिक-मूल्य में उच्च अंशांति तर्कशिल्प के अवसरों को दूरिया करता है। नारी गुरुत्व के इस पूरा-संघर्ष में देरपार्श्वीतिक के तुन ते बुझ गई। इस कहानी में धरोहर की मानसिक बुखार और उनके भिंतिने सब को उदारता किया है।

इस अवसर नहीं। इस कहानी का नामांक प्रकार है। वह शहर के विश्वसन कार्यक्रमों पर एकीकृत लिखने के लिए कार्यरत देखे जाता है। प्रथम रात को देर ते ही घर लौटता है। उनकी पत्नी को भी अह आदत हो गई है। उसके कुछ भिंतिया भी...
उसकी प्रतिक्रिया में सड़क की आड़ते लेते रहते हैं। आर्थिक स्थिति के कारण वह अपने बुढ़े पिता की आँखों की जांच नहीं करवा पाता। वह चाहता है कि उनके लिए कर्म करवा दे। एक दिन उसे आर्थिक में मनीआईड ग्राप्त हुआ तथा अपनी पहली ग्राफिक गीता का पत्र भी भित्ता। उसने पत्र में विवेकानन्द की दी कि वह उसे पत्र क्यों नहीं भित्ता। नायक चाहता था कि वह गीता से विवाद कर में। लेकिन गीता ही यह संबंध बद्धने के लिए आगे न बढ़ तकी। उसने तो यह कि इन मनीआईड के पैरों से वह कुछ फिक्रियाँ बरीद कर गीता को केंद्र गा तथा कुछ त्वरे पिताजी की आँखों की जांच करवाने तथा कर्म करवाने पर लगा जायें। उसने कुछ पिताजी बनाएसे। वह उन पिताजी का पार्सल करने डाक्बारे पहुँच था। 

डाक्बारे में ही उसका पुराना दोस्त मिल गया था जिसने आग्रह किया था कि वह उसे शाम को जल्दी मिले।

शेष समय पेज में ही पढ़े थे तथा वह दोस्त ने मिलने पहुँचा। दोस्त ने आग्रह किया था कि कुछ लक्ष्य भर्ता आ पढ़ा है अतः वह लघुने देखकर उसकी मदद कर दे। नायक को उसकी विवाहता पर करोध आया था। लेकिन उसने यह दोस्त को दे दिए तथा वह घर लौट आया। घर लौटकर वह तोप रहा था फिर एक बड़ा अनुभव दिन गुजरते-गुजरते रह गया।

महानराय जीवन की विकसितियाँ यहाँ बहुत कुछ कर सामने आई हैं।
तभी आयोजकों को यह विकेष फिता रक्षी है कि कहीं व्यक्ति कार्यकृत बनाए होने से पहले ही न करे जारी। लगभग यहाँ कुछ प्रतिदिन बजता है और वह रात को कहीं भी जल्दी घर नहीं पहुँच पाता।

उपर से आर्थिक आमान्त्रण झलने क्विकर है कि वेतन में तो वह झलने पैदे भी नहीं बना पाता कि पिता की आँख की जांच करवा लेता तथा उसके लिए कर्मा बनवा लेते। इस कहानी में आधुनिकता की बड़ी पसंद है— महानराय जीवन की यातनाहैं तथा नौकरी-पेशा मद्यपथिता कर्म की आर्थिक पीड़ा है। पिता के लिए भी कर्मा न बनवा पाना आर्थिक विवाहता की पराकाश का जीवन्त अख्तात है।
ह इतिहास का कथातार यह है : एक दिन बहुत दी अभिज्ञात रंगी पार्टी थी। पार्टी में शराब का दौर का उठा था तब मेजबान ने यह किसी सुनाया।

एक तारीख था। वे किसी पार्टी से लौटे थे। वह हर पार्टी में बहुत शराब पीते थे। जब तभी मेजबानों को उनसे घर तक पहुंचाने का कहते थे। वह पार्टी में बहुत शराब पीकर थे।

उन्होंने अपने पर की सीधी चढ़कर दरवाजे में चाकू का लगाई। पुलिस बाला गए लगा राह था। उसे कुछ ठीक हुआ तो यह उनके पास आया। पुलिस बाले ने उन तारीख के कहा कि वे अपने पर जाएं। इस पर उन्होंने पुलिस बाले को यकीन दिलवाने के लिए कहा कि यह मेरा ही घर है। उसके एक कमरे में किताबें पड़ीं हैं। एक तस्वीर पड़ी है। पुलिस बाले को भारतीय बुढ़ी उसने कहा ठीक है। दरवाजा बंद गया। कमरा देखकर उसने मुझे किया कि यह तस्वीर बीती करी की है। तारीख ने और लौट देने के लिए कहा कि वह एक और भरूं दे रहा है। यह कहकर उसने अपने शराब का दरवाजा बंद और कहा कि वह मेरी बीती है। परंतु पुलिस बाले ने कहा कि वह तो ठीक है पर तारीख लौट हुआ आदमी कीन है। शराब में पूछ हूँ तारीख ने जवाब दिया कि वह में ही हूँ।

इस कहानी में पुख्त कर्म अपने मद में व्यतित दिखाया गया है। शराब बीना उच्च स्तर का फैलन बन गया है। तारीख भी नैतिकता का आवरण उतारकर पौधे बुढ़ी है। इस पुख्तार इस कहानी में महानातीम बौद्ध से सात-साथ अनेक योग संबंधों तथा अभिज्ञात कर्म में आगत परिवर्तन कर्म की प्रकृति को अंतर्वर्तन पर उद्धारित किया गया है।

नुहूँद लौँटना गई।

इस कहानी में मध्यवर्तित कर्म की मात्रतिकता को प्रकृति किया है। यह इस लौँट की जोधवर्ण कहानी है। इसका कथातार यह है: सकिता एक
मध्यकालिक परिवार की बेटी थी। उसके तीन भाई थे और एक भाईं ने बेटा कैलाश भी उसके घर में ही रहता था। तत्त्वाद के पिता को आया था कि बेटों के दोनों में मिले भाग से तत्त्वाद का विवाह हो जायगा। लेकिन एक बेटा शादी के बाद अलग हो गया दुसरा घर जमाई बन गया। तीसरी बहू के मां-बाप ने दोनों का पैता अपनी लड़की के नाम बैक में डाल दिया। कैलाश भी तीनों भाई की शादी में आया था। उसकी पत्नी और बेटी भी उसके ताथ आई थी। विवाह की रेतमेल के वर्ष संतति की माँ कैलाश से बुलाकर बात भी नहीं कर पाई। आज वह भी जाने वाला था। संतति की माँ कैलाश की बहू की मुहल्ले में मिलाने ले गई थी। कैलाश ने संतति से यूर्फ़ा कि उसने अपनी त्या दाल बना रखी है। कैलाश ने यह भी पूछा कि उसने अपने विवाह के लिए भी तक खिलौना को पतझड़ा स्वयं नहीं किया। संतति को हैरानी भरा कि कैलाश त्या रह रहा है। तब कैलाश ने बताया कि भी उसने बारह सप्ताह पहले संतति के पिता से उसका डाल मांगा था। तब तो शायद संतति ने उसे नापसंद कर दिया था। संतति यह सुन कर उदास हो गई। लेकिन अब इन बातों से क्षु साधना था। कैलाश और उसकी पत्नी दाल को गए। लेकिन संतति साधना रह गई कि संतति अच्छा होता यदि बारह सप्ताह पहले कैलाश ने संतति से बात पूछी होती तो उसके जीवन की ताजवर ही कुछ और होती और वह अब तक अधिवासित न होती।

इस कहानी में विवाह, दोनों आदिद के संबंध में समकालीन यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी का नाजुक भूमिका अभाव है, जिसे अपने में और अन्यवादों रह गए विवाह के जीवन ते झोक देखा किया गया है। लड़की का वियाह अपने भाईयों पर आशीर्वाद रहता है। संतति के पिता को आया कि बेटों के दोनों में मिले भाग से संतति का विवाह हो जायगा। रचित सेता नहीं हुआ। यह एक मंदिर में जन्म भें वाली तरह पूर्वी की कहानी है।

\[15\] अपना स्क्रीन्स़ैटः

इस कहानी में "अपने भीतर ही भीतर दूसरे देखने की प्रक्रिया" में निरन्तर अभेले होते आदमी की यातना पुंजीत है। इस कहानी का "लोकल" बम्बई
कहानी नायक का एक मित्र था। उसका नाम था तोम।

वह लंबी की रहने वाली था किन्तु बमबई में बस गया था। तोम का परिवार बमबई की रहने वाली हैंगा से हुआ। हंसा काफिल में लाभार्थी थी। वह तोम से कई बार मिलने आती थी। हंसा ने विवाद कर लिया था लेकिन उसके सोम को नहीं बताया था। फिर भी तोम को यह बात का अनुमान लग गया था।

हंसा सब भी तोम से मिलने आती, तब वह मंगलमूत्र पहनकर नहीं आती थी।

लेकिन हंसा ने विवाद के बारे में न तो तोम न कभी पूछा और न ही हंसा ने बताया। एक दिन अपनी तोम की एक कार से दुकान ठहर गई। वह घटना स्थल पर ही कराहता रहा। बहुत मुरखी से वह अभी आपको अवतार तक लाया। उसकी हालत बहुत ही नाजुक थी। जब तक डॉक्टर अपरेंटिस के लिए आए, उसने दम ठोंग दिया था। उसकी लागत लेने भी कोई नहीं पढ़ा। अतः रवसाना के आदमी ने उसका अंतिम सिद्धांत किया।

तोम की मृत्यु के बाद एक दिन तोम का मित्र चौपाटी पर घूम रहा था। वहीं उसे हंसा मिल गई थी। तोम के मित्र ने हंसा को बताया कि तोम नहीं रहा। हंसा की यह तूफान गहरा धक्का लगा। हंसा ने तोम के मित्र ते शह घूम पूरा कि वह इतने कैसे हुआ था। हादसे के बारे में तुफान वह बहुत खारग व उदास हो गई थी। चौपाटी से वापसित जाते समय उसने अपना पता बोला और एक मला ती समुद्र में पड़ दी। नायक ने अनुमान किया कि वह मला जैसी वस्तु मंगलमूत्र के अधिकृत और क्या हो लगती है?

इस कहानी में व्यक्ति की भावना और स्वस्थ्य की मौत हो गयी है।

इस मौत के लिए कोई जिम्मेदार नहीं। उस कर्म अंतरी तत्त्व की मांगमांग और रोजमर्रा की जड़दंडक ने हमारे मीतरी मानवीय शक्तियों का नाश कर दिया तो नहीं घोट दिया है। तोम अपरिहित की तरह कर्म जीना चाहता है। क्यों "जीनें।"
उनके लिए तबसे दोहरा काम लगाता है? फिर एक छोटे-से हादसे से तब कुछ खत्म हो जाता है। यहां तक यह कहानी भी बाली शामूली कामती है। लेकिन फिर अन्ततः मांड़ि में सोम की लाश की मिलाबत में भटकता कहानी का "में", जिन-जिन सिध्दांतों से गुजरता है वे फिर एक व्यापक फैलने की तरह कामती हैं। शन का उठाव चलना, उसका सम्बन्ध के दृष्टांत में आना आदि। कहानी में बाहरी और भीतरी, तामाक्कू और अध्यात्म दुनिया में बासा अन्तर्विद्रोह है।

महानगरीय जीवन में दूरीया तथा समय की ममी व्यक्ति के जीवन को अल्प-व्याप्त बनाकर रख देती है। महानगर में साधारण व्यक्ति निवासी गुप्तामावी और अज्ञात्य जीवन शैली है।

फटे पाल की नाटक :-

इन कहानियों में धार्मिक और निर्याकर विद्वानों और संस्थाओं की खिली उड़ाई गई है। इसका कथाकाल यह है: कथाकाल नामक व्यक्ति गाँवीजी के आगुड़ पर स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में नृत पढ़े थे। अपनी युवावस्था में कदानद क्षण में एक उदाहरण वन गए थे। उनका शरीर गर्ता हुआ था। उनके अध्यात्म में एक ध्यान आज्ञा था। उन्होंने ब्रह्मविष्णु का पंक्ति किया था। यह निम्न ही उनकी रूपरेखा शिल्प का स्त्रोत था। भव सदाधिकार का महत्ता कम हो गई थी। भारत आज्ञा हो गया था। उनकी शिल्प में भावता आज्ञारहर पिता जाने के कारण उनके जीवन का महत्ता जाग उठी थी। आज्ञारहर के लिए काम करना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। उनका एक बेटा था। उसका नाम ब्रह्मांडुला रखा।

वह तब को ब्रह्मविष्णु का उपदेश देते थे। इसी ब्रह्मविष्णु कृत के कारण ही वह अपने पुत्र का विवाह भी हीं। उनके पति यह इच्छा लेने ही रवीं सियार गई थीं। उन्होंने अपने पति की इच्छा पूर्ण करने के लिए ब्रह्मांडुला का विवाह कर दिया था। इसी कारण वह हर हर तदांत्रं को ब्रह्मविष्णु का उपदेश पिलाते रहते थे। ब्रह्मांडुला अपने पिता को संपूर्ण रखने के लिए बड़े जोश से अपने काम में लगा रहता।
एक दिन अवाक सदानंद का सारा फिसवास ठूंग गया। उन्हें लगा कि बहु गरबवती है। उनके गम्भीर पर आनात हुआ था। सदानंद जी बहु भी उनके मायके छोड़ आए। थोड़ी दिन बाद सदानंद ने भी गेस्ट वस्त्र धारण कर लिए। सदानंद के बेटे ने ही उनका विवाह तोड़ दिया था और वह बहु गुस्से हो गए थे। उसके पिता ने उसके भी बात नहीं दुनी और वे घर छोड़ कर चले गए। पिता का पाण्डव उसके तटा नहीं गया और वह अंडे बृजकर्ता का प्रति के लेता है। और वैकल्पी की दयापर्याय क़ूट गया अपनी जवानी होम कर देता है।

ज्ञ कहानी में पूर्णे मूल्य में अग्रत, बदलाव, ग्रामीण लीडिंग की निसारात, बाल-बालवाद की शुरुआ तथा दमन के दुश्मानों से अभिखंडन असामान्य जीवन की विलासितियों को इस कहानी में प्रकट किया गया है।

"फैसला", "पटे पाल की नाव", "अजनकिया" के तंत्र में डॉ. विनय का यह कथन दुर्धर्म है: "उनमें अनुभव की समस्याओं और क्लियरवाद रचनाओं का उपेक्षायुक्त बना है, तथापि इस के तीव्रता की समस्या भी। फैसला लगाता है कि इसकी रचना के समय कल्प शेख के द्वार से रही हो।"

178 बायाई :-

यह कहानी तापालाक किंद्रुलास 12 मई, 1966 में छपी थी।

चारी की दुनिया यही है। तीमा पर चारी होती है। आदमी की कीमत वहाँ कुछ गौरीसिंह से उच्च नहीं है। अवस्था तीस हारा गौरीसिंह। याने कि वह लिखा अफ्ताब डॉक्टर रह गया है। उसकी मौत से दुनिया समझदार तो तन क्या होगी, वह जल्द छोटा, बेबर और "कुछ नहीं" डॉक्टर रह जाता है।

कहानी के नायक फिनी डॉक्टर को अभी पता नहीं किया था कि उसकी रेखीलेख फिल मुंड पर लख रही है तथा उसे कहा ने कहा जा रहा है। कुछ लड़खियाँ देश के। फिलियों के लिए कम कर रही थी। फिलियों को तरंग तरंग लिखकर उनके संबंधितों को अंदर रही थी। नायक तो चाहे लगा कि वे लड़खिया मौत के मुंड में लिखी हो।
चेय लोगों में उसे विवाह भर रही है। नायक को उसकी रेस्टोरेंट में केज दिया गया। वह मोंडे पर युद्ध में धांधल सिपाहियों को देखने का कारण था। जब उस कॉलेंटी से उसकी चेतन को देखी जाती है कि उसकी आख़िर वह उस लड़ाई में निकाल होगा तो वह क्षति उत्तरदायी। नायक लोकप्रिय रह गया कि उस लड़ाई में वह जीवन से बड़े होते हैं। जिमेडार की कारणा ने ही उसे ध्वनिराहट होने लगती। इसका कारण था कि वह अपने दो माझों में बीच के नंबर पर है। उन्हें एक बड़े भाई मन्त्री हैं: निम्नाध मन्त्री और झलकिए छोटा देखकर है। दोनों भाई जनता की तंत्र करते हैं। जनता की तंत्र करने के लिए ने भूमि वा कमाया था। बीच के अतिरिक्त आदमी की मध्यमा का आदमी समझ सकते हैं। उसने एक लड़ाई किया है लेकिन उसके बाद उसने देखा कि सबसे बड़ा बदल गया है। अब वह जी लड़ाई किया रहता है वह अभी रहता हैं। अंतर्क्षति वह लड़ाई अधिक निम्नाध और जीवन है। बड़े भाई निम्नाध मंत्री ने झरने के खाने के पुकार करने की मांग उठाई थी और उस पुकार को तमाम फ़्रांच धुआ। बड़े और छोटे भाई मिलकर ख्यातनामा करते हैं और खाना खाकर होता जाता है। तुरंत पहारने नहीं जाते, उन्होंने तिमेडारी और जानलेवा का मुख्तार जो लगा लिया है और वारों और, छूटियों की तात्कालिक में उन्हें भिड़े-बुझे लोग पैदा हो रहे हैं। आप खिले पकड़े 9 को हैं। यह लक्ष्य है कि तरक्की करने वाला वातावरण को है। आप खिले भाई कहीं और खिले दुमन 9 अधिकारियों ने गोरो को पकड़ ले के लिए खाने में जाल फिर दिया, ताकि जो भी आए, वह उस जाल में पक जाए। रात की जाल फिरा दिया गया। छोटा भाई नाम पहले देखा रहा और बड़ा भाई भीतर घूरे करने पहुँचा। भीतर जाते ही वह जाल में पंख गया। उसने तोहाद वह तुबह जब पकड़ आयेगा तब आमना अस्त रूपों। उसने छोटे भाई को नहीं दिया कि वह उसका सिर काट ले ताकि पता न करे। छोटे भाई ने तुबह दिया कि सिर काटने की आज्ञा दी नहीं है बल्कि कल तक वह उसकी गले छोड़े लीजिए आदमी पैदा कर देंगा और इसे में पता नहीं चलना कि वातावरण घर को है। डॉक्टर जब आया तब वह अपने भाईयों को भी पहचान नहीं पाता।
इस कहानी में सामाजिक भ्रष्टाचार का निषेध किया गया है। मंत्री लोग सत्ता का कितना हुआ योग करते हैं जब स्पष्ट रूप से पता चलता है। अन्य योग्य लोगों की यह आकांक्षा प्राप्त नहीं होती। राष्ट्रीय-रात्री अधिकार रहने का प्रयत्न भाई भारतचार को उजागर करता है। आर्थिक व्यवसाय और भ्रष्टाचार का क्रिया चिंता इस कहानी में होता गया है। हमारी भारतव्यवस्था पर इसके कारण योग की गई है तथा हमारे भारतवर्ष की विविधता को उजागर किया गया है। वस्तुतः आज कैसे हमने के कौन सा लोग झगड़ा है, वैसे ही "भ्रष्टाचार" हमारे द्वीप में रच-बन गया है।

आप गौर करें तो यह "त्याग" फिर व्यवस्था ते है। उल्लक भरी है। इसकी पूरा में युवा के आदि का खतरा कहीं कम है। युवा में हमने आमने-सामने होता है पर यहाँ तो सब कुछ गड़बड़ और अनियमित है।

188 अन्वेषित:-

इस कहानी में बताया गया है कि बमबई और बंदे शहर में यदि कोई व्यक्ति फिर स अभूत प्रर्दश पक्का पहुँच जाए तो उसे कितना दिखाई उठानी पड़ती है।

इस कहानी का नायक बेरोज़गार था। उसके एक मित्र ने बमबई में रहने वाले एक मित्र बताके के माध्यम से उसकी नौकरी का प्रबंध किया था। बताकर ने भी पता लिखकर उसे बुलाया था। नायक जब बमबई पहुँचा तो वह इमारतों का ठेका लेने वाले बताके बुले ने निकाला। एक स्थान पर बहुत सारी उंची इमारतों बन रही थी। बताकर का पता बुले ने के लिए उसने एक हाथ का द्वारा बड़कर एक मजबूत तथा मजबूर उसमें रहते थे। बहुत बोले ने पर भी बताकर का पता नहीं था। रात ही रही थी। मजबूर दंपति ने उसे तहरा दिया और उसे अपनी शराब भी मिलाई। तात्विक ही साथ वह अपने जीवन के बारे में भी बताते रहे। जहाँ-जहाँ इमारतों बनती हैं वहीं उनके जाना पड़ता है तथा वहीं के लोग अपना धर बना लेते हैं। फिर जब कांप बतम हो जाता है तब वह लोग आगे बढ़ जाते हैं। रात बहुत हो चुकी है। मजबूर दंपति ने उसे वहीं तो जाने को बह दिया और स्थवर भी वे दोनों निरीक्षण होकर गए।
कहानी समाधारण और दर्शन से लगती है। कहानी में महानरीय जीवन की विविधता धर्मी और निर्धन कर्म की अनुभूति को भी रेखांकित करते हुए नागरिकता के दुर्गमानों और घुटनों की अभीजताओं और आदाय दमों को विपन्न लिखा गया है।

हां, दुनिया बहुत बड़ी हैः —

इस कहानी की नाटिका अनुपूर्णे के गाँव में पहली बार दाकवाना खुला था। तालिकराम वहाँ के दाकबाबू के पता था। डाक से गाँव के लोगों को अपने दूर के संबंधियों से समाचार प्राप्त हो जाते थे। अनुपूर्ण भी डाकबाबू थे। अपने भाई के लिए पत्र लिखवानी थी। ऐसी-ऐसी दोनों निकट आ गए। एक दिन बहुत तादास्क कदम उठाकर दोनों ने आर्य ममाज मंदिर जाकर खाद रचा किया था। गाँव के लोगों ने इस बात का बहुत विरोध किया। अंततः तालिकराम को नौकरी छोड़ कर अपने गाँव छोड़ना पड़ा।

बाहर सतरुण में भी किसी ने उसे नहीं अपनाया। बाहर तालिकराम ने एक दुआना खोल ली। उसी के उसका बयां चलता था। गाँव में के श्रेष्ठ लोगों के वाले देखते हैं वहाँ तालिकराम का देखाया हो गया था। तब से तीस वर्ष तक वहाँ पर भी अनुपूर्ण का परिचार चलता था। तभी उसने अपने अपने व्यवहार बदल दिये।

वह बीमार हो गयी थी। उसकी देखभाल करने तक सबके ग्राम का घर बना दिया। उसके घर पर वह या नहीं आती थी। वह अपने घर न जाकर अपने गाँव गई। वह अपने घर के पास पहुँची तो घर भर में बदल चुका था। उसने अपने गांव के भाई के बेटे को पहचाना। वह एक रात घर रही। भाई के घर पर वह बात की अचानक थी। वह घर नहीं जाना चाहती थी। वह तो उसे भी बताने को विरह कर रही थी। वह घर के फिर सदस्य की इशारा में स्थित पर बैठी रह गई।

इस कहानी की मूल संकेतक रूप विद्वेषी नारी के अंशों के पिच्च करती है। उसे बुद्धिने में कहीं आक्रामक प्राप्त नहीं हो पाया। आज यह स्थितियाँ अपरिहार्य गई हैं। इस घर होते हुए शंघनों से उपन्यास कोशल आज की नाती का सैन्य यथार्थ है, जो बहुत ही कलात्मकता के ताथ इस कहानी में फूक बुक है।
उन रात वह मुंह बीच कैपड़ी पर सिती की और ताज़मुख की बात यह है कि दूसरी तुबह तुरंज परिवर्तन में निकला था :-

यह कहानी कलेवर का एक बड़ा वर्धित कहानी है। तर्क प्रथम जब वह कहानी "धर्मसूत्र" 16 अगस्त, 1970 ई. में पुस्तकित हुई थी उसका शीर्षक यही था जो “बयान” में दिया गया है : यह शीर्षक धार्मिक है, किंतु तीन छोटी पंक्तियों में अंदर वाला।

लेक ने रात के तनावों में बम्बई के समुद्र के किनारे बैठकर उस वातावरण का कितना बीच है। समुद्र के किनारे बैठकर पास की विख्यात ज्यादातर और उसकी विवेचनाएं, दरवाजे जो एक विशेष वातावरण की रचना को निर्धारित है। लेक के प्रकोप के दिन में बारिश मूंग हो गई है। बारिश के बुद्धा-बौद्ध में धरणे:- धरणे तब हुए नहीं आ रहा है। रात के अंदर उसमें मकान लंबे डाले हुए विख्यात ज्यादा की तरफ़ का रहे है। इन मकानों में छोटा हर लोगी से आ रही थी, मानो दृश्यान्त शुद्ध ही हो।

बीच कैपड़ी की खाली पहड़ी बेढ़ आइल्फिल की तरह बम्ब रही थी। समुद्र के किनारे पास की विख्यात ज्यादातर उस वातावरण में एक अच्छी तैयारी की थी। इसी समय एक टैंकर यातायात समुद्र के किनारे आकर लग गयी। उसके खाने की पद्धति से स्पष्ट था कि वह इस स्थान पर अनुशासन रोकी गई है। टैंकर के सकोट ही एक दरवाजा बुला और एक आदमी बस्तार को छुटे है उसमें से निकला। उसके बाद एक औरत निकली। वहां पर वे एक थे, वहां न कोई मकान था न होटल। तम्बू के किनारे स्कूम ऑले। इसी रात में उस पुछ्च व स्त्री का वहां उतरना संयमा�-surp ही का था। पुछ्च व स्त्री को जब बात की कोई पिंडता नहीं की। धार्मिक उन दोनों को छोड़ और जाना था पर वे छोड़ उतर गए। आत्मप्राण का वातावरण धार्मिक से भरा रहता था। आदमी और औरत किनारे पर पड़े एक बैंच पर बैठे गए। वे दोनों समुद्र को देखने रहे। तभी छोटी छोटी पर समुद्र में तीन नाचे किनारे आ लगी। बारिश बह भी हो रही थी और वे दोनों अभी भी बैठे बैठे रहे थे। नाचे किनारे पर आ लगी। एक नाच में वे हुए उतरता जा रहता था। वह एक औरत की लाभ की थी। नाच में
कमलेश्वर के अतिरिक्त यदि किसी अन्य नए लेखक ने अपनी किसी कहानी को यह शीर्षक दिया होता तो क्या वह कहानी प्रकाशन का अवसर नहीं पाती । कहानी का शीर्षक वक्तव्य उम्मीद है कि ये दिखाया जाए हो गया है । मन्द्र पुस्तक पापड़े के ""वह का पत्र कमलेश्वर के नाम" शीर्षक लेख में इस कहानी को एक स्टेट मात्र माना जिसमें कहानीकार ने यह त्युट्ट करने के साथ दिखाया करने का प्रयास किया कि उनकी कहानी का तौर एक नई फिल्म के ही उपचार है ।""\[1\]

कहानी के ताल "धर्मयुग" सापाड़क की दिप्पी के रूप में इस कहानी की बदलाव के देने का आदार दिया । चित्र कहानीकार कहानी में दुख कहने के बजाय वैण्ड्रा प्राप्त है । इसीलिए कहारी दृष्टि में इस एक अत्यंत सामान्य-सर कहानी है । डॉ. विवाक्षाराय उपाध्याय भी इस कहानी के तालाब में सेवा की सोच उनके द्वारा: "कमलेश्वर की प्रतिभा रेखाखिलात्मक है, आ: यह कहानी भी तर्फ रेखित बनकर रह जाती है । कहानी बनाने के लिए लेखक ने यह तौर पर अनुमित किया जिससे वरना यथार्थता अथवा प्राप्त के सीघ को फैलाव देना याहिए था, पर रूप से नहीं हो सका।"\[2\]

\[1\] "दृष्टिकोण" तद्देश 6 फरवरी 1971.
\[2\] समकालीन सिद्धांत और साहित्य 218.
ढ़ढ़ कहानियाँ :-

इस संग्रह की कहानियों में जीवन की घिरावटों का कठू वर्तमान
पिंडित हुआ है। इस संग्रह में वैधानिक व्यक्ति का उत्कृष्ट हुआ है। विभाजन
की विभिन्नता तथा राजनीति के स्वार्थ व्यक्तित्व पेटना जागृत करते हैं। त्रिभुक्त
का क्षेत्र की रिस्पिसेशन का यथार्थ विचार किया गया है। दांपत्य संबंध का विचार
किया गया है:

1. इसीं आज़ादी दिन
2. व्यक्ति है, व्यक्ति का आदर नहीं है
3. कहां रहते पाकिस्तान
4. मानसरोवर के द्वार
5. जार्ज पंगम की नाक
6. अधूरी दुनिया
7. लॉप
8. भारत
9. तलाश
10. उपर उठता हुआ मकान
11. नागमणि
12. लाश
13. यह छुट और
14. जोधिम
15. क्षेत्र
16. रातें
हठी अच्छे दिन :-

यह कहानी: अकाल और घुड़सवार क्या के जीवन का "बुध" भयावह और भास्कर पदार्थ है।

बाला और कमली भाई-बहन थे। बाला चीनी की मिलों के लिए हड़दियों दु:खाता था। घुड़ हड़दियाँ तौलता था। वह कमली से प्रेम भी करता था। तथा उसके विवाह करने पर बताना पाता था। अवधार अकाल पड़ गया। कितने तो हड़दियों निकाल कर बाला के अनिरंत्र जीवित कराने के अनिरंत्र कोई उपाय भी नहीं बना। तब हड़दियों के पीछे क्या होने कार्यी। "बाला" जब कोई भी क्रांति नहीं पाता है तो पेट की आग उसे हड़दियों को आपाती बना देती है। अवधार उसके लिए स्वतंत्र बाला और टोर-ताॅरों लेणियों की हड़दियों के आत्म वृत्तान्त बन जाती है। ऐसी चित्रण पर कितना नृत्य व्यंजन है कि वहीन हवा उनके दिम, गूंटकों को दह देते अभिक उनकी हड़दियों अभिक वृत्तान्त बन जाती है। इसीलिए बाला कमला की हड़दियों की रक्षाली पर पहुँच गया था।

उसी दिन रात को बेहतर सिस्का खिंड़कर कमला की उठा ले जाता है। बाला लोप आ तो यह तब ठीक ही बुझा नहीं तो बाला अच्छे दिन कटा तो आते। बाला के माँ-बाप, दादा-दादी सब मर गए।कमली ने वहाँ देख एकाथ आरंब कर दिया था। कमली भी बांट-बांत घर बना लेती है। एक-तास स्थान बाहर मर हड़दियों का भिल बाता है। बाला इस वित्त पर बहुत भुज और तूफ यह।

पीढ़ी-पीढ़ी हड़दियों नामांक होते जा रही थी। अंतः: वह दादी की हड़दियों का पिंजरे ही बाहर में भर कर ले आया था। बोरा उसके सिरदाने ही रोक था।

बोरे से बहुत सुरू आ रही थी। इसके कारण बाला को नीद नहीं आ रही थी।

वह बात कहकर उलक कमली को बता दें कि बोरे में दादी की हड़दियों है।

लेकिन कमली बात के काल का फिर कमला दादी की हड़दियों नहीं पर जाकर पानी में सिरा दे। उसके पीछे बुड़े दिन होते तब तो और बाला थी, तब वह बांटे गोदाम में भी दे आता। बाला की भी बाला हलांक आई थी और उसने हड़दियों नदी में सिरा दी थी।
"इतने अद्य सिंह" कहानी हमारी समाज व्यवस्था और अर्थव्यवस्था पर जबरजस्त प्रभाव करती हुई अकाल और सूखाग्रस्त क्षेत्र में शृंखल द्वारा मानवीय धर्म के लीलावत जाने का यथार्थ घटना करती है।

इस कहानी में यह भी स्पष्ट रहा गया है कि अकाल में सरकार की योजनाएँ खिलौना केंद्र की गति से रेंग-रेंग कर आने बढ़ती हैं। योजनाएँ बनती हैं और कागज़ पर दी रहती हैं। आयुष्मान योजना के बोल्डोन की पोल भी इसमें बोल्डोन गई है।

इसके अतिरिक्त हमारे समाज का आर्थिक कर-खेड़म भी तामाख आया है। अच्छी जाति के लोग सबूत हैं। अकाल भी पढ़े तो भी, उन्हें कठिनाई नहीं होती, "अकाल तो हम लोगों के लिए पड़ता है, बाकी सबके पास तो वर्तन के लिए दाना है।"।

यदि हमारे पिताने का फक्त अकाल न होकर समस्त बदलता, तो हमारे बालों में सुधारित नज़र आएगा। राजनीति का फूल जीवन में कम नास्त घटनाओं ने हमी जीवन को अर्थ दिया। इस कहानी की आधुनिकता के मूल में यही लीकदना है।

हवा है हवा की आवाज नहीं है: -

इसका नायक रिक्सलशॉक के एक कम्यून में रह रहा है। कम्यून में दस
लोग रह रहे हैं - यार लड़कियाँ मारियाने, रीश, मार्टा, स्टीफकेयर और टु लुकु मान, आर्च, पियरे, स्लाव, कोरे और वर्नान। लेकिन इन लोगों के ताद
रह रहा है। लेकिन ने केवल में सब भाग दिया, उस भाग में उसके बंगला देस की
कृतियों की बात की थी। पुलिस को ये खास बारे में खास नहीं थी। पुलिस का
कहना था कि बंगला देस की कृति के माध्यम से यहाँ की सरकार के खिलाफ बात
की गई है। इसलिए पुलिस के बाहर कि पुलिस को रातदों रात फ्रांस की सीमा पर
छुट किया जा रहा। मारियाने, यहाँ बात करने के लिए पुलिस के पास आई थी।
उसने नायक को बताया कि पुलिस का ताज़वर्त उसे मिलने आ रहा है। मारियाने ने उसे
यह भी बताया था कि पियेर ने मामला भी बहुत गंभीर है। पियेर ने मिलिटरी
द्वींंग पर जाने से साफ़ इंकार कर दिया था। योग्य देव में तार्जेंट आ गया।
तार्जेंट ने नायक से कुछ नहीं कहा। योग्य देव बाद ही तार्जेंट और लोगों से बाते करने लगा। नायक ने देखा कि पियरे चिल्ला रहा था। मार्टी ने नायक को बताए कि पियरे इस बात के लिए जोर-जोर ते चिल्ला रहा है कि वह कपलरी मिलदरी ट्रैंगिंग के लिए कहीं नहीं जाना चाहता। उसके बाद बांधा मूल हो गया।
उस बांधे के दौरान तार्जेंट ने नायक से कहा कि उसने चेलेर गीतिंग में जो कुछ भी कहा था वह तथा वह उसके समझ है। लेकिन तार्जेंट ने बताए कि वह पुलिस में है हालांकि वह बुकर विक्टोर नहीं कर सकता। तार्जेंट ने रात को वापस जाते समय नायक से कहा था कि वह आराम दे उसके देस में रह सकता है।
जब बांधा नींद लगा तो वह लघु नायक को प्रांस की शीमा कर ली गई आश्चर्य। उसे चिल्ला जाते वह कहा था कि पियरे को समझाए जाए कि वह कपलरी मिलदरी ट्रैंगिंग पर कहा जाए। उसने समझाते हुए कहा कि मजबूतियों को टोगरे का काम भी आश्चर्य।
वह बांधा गए थे। नूबह चढ़ तो पियरे की बार हांसनी की।
पियरे बांधा से पूछे "स्वी कार" कह कर कहा गया था। पता नहीं वह कहा गया था ट्रैंगिंग पर गया था या ट्रैंगिंग से बांधने के लिए कहीं भाग गया था।

यह कहानी विचार के विभिन्न क्रैग वे से विभिन्न वातावरणों के मुद्गयों की मानकिकता का विचार करती है। सारे विचार के विभिन्न सच्चाहारी वर्ग अपने ही मद में घूम है। कानून बनाकर आर्मी लाइविंग जल्दी बना दी गई है।
लेकिन पियरे कहा है- "इस तरह हुई युगलस्वरोज और जंगबर सोतावली के लिए आर्मी ट्रैंगिंग लेने के बंध करता है।" यह विक्टोर व जागरूकता अपनी जड़ है वह यूरोपियन है या भारतीय। इस कहानी की आधुनिकता बहुत संयम रूप में तब प्रकट होती है जब पियरे अन्य मिलदरी ट्रैंगिंग न लेने की तजा की परवाह नहीं करता। इस प्रकार यदि विचार के प्रत्येक कोड में जागरूकता जा जाए तो विचार समाज में जागरूकता लाना कठिन काम नहीं है। इस कहानी में एक और व्यवस्था की जड़ दिखाई गई है, जिसमें मनुष्य की जागरूकता को बांधने के तक की पूड़ा नहीं है, दूसरी और बस्तवताएँ हुई ज्ञानिकारी शक्तियों को पुनर्विश्वास किया गया है। इस दोनों के बीच की रियात इस कहानी में पूड़ा हुई है। कहानी की जागरूकता की शादीनुत्स्वरूप क्षमता के प्रकाश में है।

फिलने पाकिस्तानः

इस कहानी में मानवीय दिलों के दूरने और बिखरने को बहुत अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है। भारत-पाक विभाजन की गुस्सामूही पर निहीन कमेश्वर की एक अच्छी कहानी है।

बन्नो के और मंगल बच्चन के तात्पर्य है। बन्नो मुसलमान थे और मंगल हिंदू था। उन्होंने दिनों पाकिस्तान बनने का आंदोलन किया। मार-काट गूहा हुई और हिंदू-मुसलमान एक दूसरे के दैरों में बन गए। बन्नो और मंगल की पितामाता को आंधार बनाने के लिए कहानियों का जानना लगा। मंगल के दादाजी ने इसी में हर में मंगल को संबंधित किया। मंगल की पूजा में नाकरी मिल गई थी।

इसी दिनों बाद उसके दादाजी भी भिंडियौ की नामकरण आ गए थे। बन्नो के पिता व मंगल के दादा की गहरी दोलसी थी। मंगल के पिता भी भिंडियौ के बील में जाए और उस दौरान में मंगल के दादा का दिना हो गया था। भी उस दौरान में मंगल के दादा का दिना हो गया था।

बन्नो के दादा की एक बाजू कट गई थी और उसे दुनार को लगे थे। उसने मंगल को दादा के घर चला जाने के लिए आनंद में बारे में जानने के लिए उसका साथ लिया। उसने अपना बिनबर छत पर बिछा लिया।

उसने अपने नामियों जानने में धीरे-धीरे देखा तो यह पता चला कि एक लड़की की हालत में नींद पड़ी है। उसका पति भी मारता जा रहा था। वह इस दूरक है।

उसके दिन बन्नो के पिता ने बताया कि दिन के तीन दिन पहले बन्नों के घर में भी आग लगी थी। जान बचाने के लिए बच्चे को दूसरी मंजिल से फेंका गया। बन्नो का बच्चा मर गया, जिसी कारण बन्नों की हालत काफी उत्तेजित हो गई थी। मंगल बच्चे के दिन में खुश जाता, दिन नहीं सकता। वह वापस बंबई चला गया।

पाँच महीने बाद वह अपने मित्र के पास बंबई आया। तभी मन बढ़ जाता। दोनों ने एक दिन घर में रहने पर। उसके बाद मंगल ने बन्नो को कैसे के घर में देखा तो उसके भीतर आग में जलता हुआ पाकिस्तान उभर आया।
और वह युवक वहाँ की सीधियां उतरता हुआ वापस आ गया।

विभाजन और दंगों ने आदमी-आदमी के बीच बहुत दुःख स्थापित कर दी। बच्चों की मैती को भी तारा दिखाता का विकास निकल गया। इन दंगों ने ही एक स्त्री की जीवन बरबाद किया। न कहा होता न उसका बच्चा गली में घर कर मरता और वह इस क्षेत्र अद्वितियों को बनाता वह उसका पति उसे पीटता जाता और उस सब ने ही उसे केवल बना दिया। कितनी घातक है दंगों की तात्विक।

कहानी:पात्रों- मंगल, बनो, "मरवरी-नाम" लिखें वाले डिल मास्टर और मंगल के दादा के माध्यम से पाकिस्तान बनाने के निर्देश को फिल्म के बेमानी और किया। भीमौलिक सीमाएं, इसाँची रिस्तों को नहीं बांट लिएं, मानविक विषय, दंगा, ममता को तारादेवीक तंग दीवारों में बैठकर सिंदूर-भूरों के बीच नहीं बंटा जा सकता। कहानी इन सब बातों को बहुत अच्छी तरह व्यक्त करती है। कहानी लीन छंटों में विभाजित होकर कस्बा और स्थान के लीन छायाओं को अपने में लोपटती हुई अपने कथा को स्पष्ट करती है। कथाकथनी इन प्रकार आई के प्रमाणित में अपने पहले कथा दौर वाली उसी रोमांसी प्रभावित की तरह छोटी पार्ग हो जो नृत्यात्मक व्य में होस्ट उसके साथ रहती है, यथा: "उन लालों की याद है बनो, जिनमें तुम्हारे पुत्र की गंध और मंदिर के पूर्ण की खुशी मिली रहती थी। अब मेरी नाम के पास मंदिर के पूर्ण लाता तुम मुंग से उन्हें फुंक करती थी कि महंगा उन्हें लेगा और कहा करती थी।..."

अगर उन दोनों ने अभास करता अपने "विलेन" पाकिस्तान में यह तब क्यों लिख रहा है-

"बाहर जितनी गर्मी हो पर औरत को तो आदमी के साथ किये लेना पड़ता है। धर्म और रास मंदिर और नंदी की दुम में धर्म और रासवालक कथाओं के पूर्ण में हुजूम मिली रहती थी। जब मेरी पत्नी के रास मंदिर के पूर्ण लाने तुम मुंग से उन्हें फुंक करती थी कि महंगा उन्हें लेगा और कहा करती थी।..."

उसकी नंगी, छातिया पत्नी चेरे मुख्तार की तरह मल रही थी और वह मली की तरह आदिलता-आदिलता चित्र रही थी।"}[2]

[1] "नंगा" - जनवरी-मार्च 1972 अंक
[2] कथाकथन "जैसे कहानिया" - पुस्तक-
इन वर्षों में अन्न हट कर कहानी एक मार्गिक प्रभाव पाठक पर छोड़ती है। कमलेश्वरजी ने चंचल के स्थान पर माननीय कल्याण कराने का मार्ग अपनाया है जिसमें कहानी का प्रमुख केत्तु चंचल करार रह गया है। इस कहानी में समाजवादी विषय के तात्विक रूप का अधिक व्याख्याता को खोज दिया गया है।

जिसका परिणाम दृष्टिकोण के लिए उम्मीद है। पुस्तक के द्वारा नारी का सीमित है। इनहीं आधारों में इस कहानी का यथार्थ उत्तर हुआ है।

प्रथम भाग

"सारिका" के अंतर्गत 1973 अंक में प्रकाशित "सारिका के हेतु" कमलेश्वरजी की इस दौर की एक और तफसील रचना है जिसमें पत्री में सामाजिक मनुष्य के हुब-दर्द और संधिक सितार को अभिव्यक्ति की गई है। क्योंकि इस का सामाजिक आदर्श पड़ा आंदोलन की दास्ताज में पिल रहा है और अब यह अपने देश की गलत व्यवस्था का विकार होकर दास्ताज के लिए मृत्यु का अवधार करता है।

समाज कहानी में सफाई पावर का वार तुर्क तंदुर का यथार्थ करती है। वह फांसी-प्लश का रंग लिए हुए हैं।

यहाँ कहा जाता है: तीस वर्षों बाद सेना पाठ धारण तरी पत्र

इसलिए ऐसी नहीं न्याय दिल की थी कि यह नारी का गुलाम बन गया। तब बुद्धि की वोट उन्होंने बताया कि नारी को गहराई नहीं गया है और वे ने कहा कि यदि हेतु का मार्ग मिल जाए, तो नारी ठीक हो तकरी है। नारी के प्रति विकार दास्ताज का लक्ष्य देने के लिए तेरिए पावर तारा 5: सिमापती लेखक मान तरीके गए। तो होंस को मारना तो असाधारण, लेकिन निर्देश कर बाहर नाना असाधारण! तय: उन्होंने तामू का वेल धारण कर होंस को पुनर्जन्म।

तो छूठ गए और फिरार आ गए। और फक़कर उसे मार दिया गया।

कमलेश्वरजी की इस कहानी में सामाजिक मनुष्य के हुब-दर्द और संधिक सितार को अभिव्यक्ति की गई है। "देश का सामाजिक आदर्श अपने आंदोलन की दास्ताज में पिल रहा है और अब वह अपने देश की गलत व्यवस्था का विकार होकर पंजाब भोग रहा है।" पुस्तक दौरान पुस्तक पान सिंह लिखे हैं कि चिंता जीवन

पुस्तक पान सिंह: कमलेश्वर कहानी का तंद्रम - पुस्तक-76.
भूल्यों के लिए “मैं” का परिवार तबाह हो गया है वे मूल तेनापति वाया के वर्ण के लोगों ने तीन लिख है । “अमृत अचानक बेच गए व हमें उनके वर्ण से आधिकारिक लोग ले दिखाया और लाभ में है । जो अब राजा हो रहा है । .....

यहाँ स्पष्ट होता है कि विशेष रूप से क्या एक वे शासकों में कोई अंतर नहीं है । भारतीय अधिकारी भी उन्हें प्रूढ़ित संस्कार है । वे अधिकारी भी समाज का श्रेष्ठ करते हैं । इस प्रकार यहाँ वे समाज राजनीतिक परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव लिया गया है ।

सामाजिक, राजनीतिक विकासों जो छल कमारी शासन व्यवस्था की रस्सी काटता बन गई है । “अज की तलाश बदम ले तभी है । अम आदर्श ऊंच-कट दूर हैं । चिकित्सा तो यह कि ऊंचे वाला ही सत्ता प्रतिष्ठान की जब डिसेशनें में है, या फिर तत्त्वों के अनुसार होकर विद्यार्थी जो वन्दन विद्यार्थी के राज्यवाद के सत्ता जम जा रहे हैं, आज समाज शुभ्र समय के तहत वहाँ जल उत्तर रहे हैं।”

यह व्यवस्था के प्रति आंतोष इस कहानी की मूल संपत्ति है ।

अर्जुन यादव की नाव :–

यह इस थियेट्र की पार्ची कहानी है । इस कहानी की पहले “विद्यावने” के अंतम की जा चुकी है ।

अभी दुनिया :–

कबासार यह है : लंदन से आए हैं तक की यात्रा में ले लेक और उसके मिल की बैन्ट एक ग्रीक युवती और उसके पति ते हुई । युवती मार्श के तात उसके लीन दराधने कुछ थे । उसके बाद उनके अन्य पति ते ले लेक यह परिवर्तन था । मार्श के पति बहुत बुझ था । मार्श के पति ते अनुरोध किया कि वह मार्श को मार्श को समाधार । लेक नौ मार्श समझ में नहीं आया । तब मार्श ने बताया

पुरुषोत्तम – पुरुषोत्तम - गुजरात-74.

दुकान तिंड – “कमलिखन” – गुजरात-152.
कि वह अपने देश यूनायटेड जर्मनी या वहाँ विवादों का आदर्श है, तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है। तथा वह अपने विवाद अपने देश को देना वांछता है।

इस कहानी में सिद्धिराम शुक्ल में एक जहाज यात्रा में एक ग्रीष्म युद्धी और भारतीय युद्ध की बातचीत की गई है जिसमें कहाँ ग्रीष्म के तैनिक शासन के युद्ध कार या युद्ध कार की वाक्य है। यदि कहानी निर्मल यमार तथा कहानियों का नाम आश्वासन देता है। कहानी का बध्द अवसंपत कम्पनर है। श्री पुथपाल सिंह का कहाना है कि कमलेश्वरी ने यह कहानी किसी मजबूती में पसंद निकह है। यह मजबूती कभी "मिटा" संपादक को कहानी अवध देनी है, केवल भी हो।

इस कहानी का मूल सबूत मानव-जागरूकता है। यदि समस्त मानव मानव वाजन इस पिंच को मान सकता है, तो इस धरती पर ही स्वर्ग की स्थापना हो सकती है।

हेमा मर्यमन :--

"हेमा" मधुकार सिंह द्वारा संपादित "कमलेश्वर" में ही पहली बार आई है। इस पूर्व के उनके स्वतंत्र कहानी संग्रह में नहीं।

इसका कथातार है: श्री डबल्यू.डी. के नंबर 28 का काम का रहा था। तब मजबूत मस्ती में भर कर काम करते थे, इसके ठीक भीजन करते और तो जाते थे। इसके काम का निरीक्षण करने वाला नेत्र मजबूती ने बहुत प्यार करता
था लेकिन वह उन्हें क्राम भी कराई की तरह कर कर लेता था। मजूरों के दो ही क्राम वे मेलन करते और तरकारी तामान को देख-आना करता। कुंदल का क्राम तपस्या हो जुका था और अब पुलिया बनाने की तैयारी हो रही थी। पुलिया के लिए तैर, पत्तर तथा सीजेर आदि तामान आ गया था और ताध ही तामान की चीजीरारी के लिए एक चीजीरार भी आ गया था। बेटी चीजीरार के आने से मजूर बेक्षा हो गए थे। चीजीरार के आने के बाद, पाँच दिन बाद ही मजूरों और चीजीरार के बाद ही गयी। मजूरों को कहता कि चीजीरार ओवरसीयर बांस्क का ह्रास की है और उसने उनकी विकासता करता रहा है।

बेटी चीजीरार ने राउटी की मांग की। उतका तरी था कि बारिश में सीजेर पत्तर बन जाएगी। मजूरों को कहता कि यह बढ़ते हैं तो उन्होंने लिए राउटी संचालन रहा है। बस्तार में कीड़े मकोड़े तथा साप भी निकल आए थे। चीजीरार को अपनी पत्नी तथा बेटे की बिक्री रखती थी। वह अपने बच्चों तथा पत्नी को इसे देखा था। उन्हें तब राउटी में बनी रही। एक दिन दुबारा तभी मजूर उठे, पर रामकुर नहीं उठा। उसे सांप ने बाट लिया था। उलटा तारा गरी नीला पड़ गया था। सब लोगों में शोक छा गया था। शाम की रामकुर की लाइ गंगा सैलिया ने लाप पर लौटे, तो राउटी के पास ही बैठ गए। तभी एक मजूर ने बेटी चीजीरार को लुभाय दिया कि वह बच्चों को लेकर डाक बंगले में रहने के लिए जा जाए। बेटी की पत्नी ने वहाँ से जाने के लिए इंतजार कर दिया। रात को तब गया। चीजीरार जुरा ती क्राम तरसराह छोने पर लाजें में उठा कर मजूरों को देखता रहता था।

इस कहानी में कपिलचंद्र जी ने कमलचन्द्रनाथ "रेपु" की शैली पर पत्नी की बोलपाल में अंतर्लिविष्ठ का पुत्र देखकर पी डबल्डबल डबल ने मजूरों की चिंता की तत्त्वीय पेश करते ही की पकवान की है। इस कहानी में मानवीय प्रेरितों का घिराया खिंचा गया है। रोपानी की मजूरों पर क्राम करनेवाले खबरियों की दुरावस्था के तार मानव-मनोविज्ञान का गहराई के साथ विनिमित खिंचा गया है। मजूरों का जीवन फिजिना यातनामय है, लिंग पहचान तक के लिए उनके पास साधन नहीं है, यह फलस्वरूप पूरी कहानी में व्याप्त है। दरिंदुता इस कहानी की सूच सीमित का आधार है।
अंग्रेज़ी की आठवीं कहानी है। इसकी वर्त्मा "व्याख्यां" के अंतर्गत की जा पुढ़ी है।

ललित :-

इस लघुकथा की आठवीं कहानी है। इसकी वर्त्मा "व्याख्यां" के अंतर्गत की जा पुढ़ी है।

ललित :-

इसका कथासर यह है :- इस कहानी की नायिका सुमी की मम्मी चिन्हित है और वह एक कॉलेज में पढ़ती है सुमी की उम्र काफी बीत वर्ष है तथा वह एक अंतर्गत में टेलीफोन आपरेटर है। आठ वर्ष पूर्व उसके पिता की भूमि के बाबा भी अपनी नौकरी जारी रखती है।कारण हैं पढ़ने वाली सुमी की मम्मी बुद्धिमानी है तथा पुस्तकों के बीच भी उठाती-बेजाती है। कई शहरों के वातावरण में स्थानी-पुस्तकों में अधिक दूरी नहीं होती। जरूरत या अपनी मम्मी की मम्मी शारीरिक अनुभव पूर्ण करना चाहती है तथा त्यों को रोक नहीं पाती। दूरी और उसकी शैक्षणिक बुद्धि सब कुछ हो चुका है। त्या;- वह अपनी बेटी से सुन कर अपनी शारीरिक बुद्धियां पूरी करने कामती है। सुमी को अपनी मां के व्यवहार में एक विचित्र परिवर्तन अनुभव होता है। धीरे-धीरे तारी शिक्षा सुमी के तामने प्रसंग हो जाती है। पहले तो सुमी को अपनी मां का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगाता और वह उंगली को जाती है, लेकिन अंत: वह परिक्रमणों से समझता कर लेती है। वह स्वयं होटेल में करी जाती है ताकि अपनी मां के जीवन कुम के विचरन न करने। सुमी सोचती है कि उसके होटेल आ जाने के बाद उत्तरी मां को पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई होगी तथापि वह बहुत ढुंग होगी। सुमी की मां यदि जारी है तो मां भी है। त्या; सुमी के होटेल जाते ही वह बहुत अकेली पड़ जाती है। सुमी के जन्मदिन पर जब सुमी पूर्ण का गुलामार के लेख भेजने आती है तो उसे बहुत जिज्ञासु है। वह वातावरण में सुमी की पहली रेखा है। अंतः वह जाती होती है कि उसके मां उसके बिना बहुत उदास तथा अकेली ही रहेगी है। त्यों सुमी की भी यही शिक्षा है। वह बड़ी सी चेहरे की देखरेख का मन भर जाता है और वह अंतर्गत औपचारिक व्यवहार करने करती है। वह यह चेतना चाहता है भी विद्म व पुढ़ कर नहीं बोल पाती।

इस आधुनिक युग में व्याख्यां की तबते बड़ी तलाश है- व्याख्यात तुबी की तलाश। इस युग में तुब की तलाश दूरी रहती है वह प्राप्त या उपलब्ध है।

नहीं बन पाती। इस कहानी में युगानुसूच परिवर्तित मूल्य उम्र कर ज्ञारे लाभ आए हैं। तत्त्व ज्ञानी के माध्यम से लेख कहानी बताना वाचक है कि इस प्राकृतिक युग में संबंध बिखरते जा रहे हैं और प्राकृतिक मूल्य टूट रहे हैं, प्राकृतिक, पारिवारिक संबंध तभी अर्थ हीन हो गए हैं। बौद्धिकता ने इतर मूल्यों को अपनी तारीखता की क्षोभी पर रखने के लिए उसकी परिवारी की है। मृत्युचित वातावरण में मूल्यों की तलाश जारी है। पृथ्वी कहानी में प्रारंभिक तुष के गोष्ट में पहँ कर नारी माध्यम की मृत जाती है। लेकिन उसे अपनी यह तलाश भी तारीख स्व में नहीं मिल पाती। प्रारंभिक तुषों के बाद भी एक ऐसा अख़िलापन है जो बहुत वर्तमान है।

लेखक ने यह तुष की मां बहुत अख़िलापन महसूस करती है। इस कहानी की तलाश तुष, तुष, अन्दर तथा नये मूल्यों की तलाश है। आधुनिकता ने यही सिंहासन है कि इसका मूल्य को नकार कर तुष को अन्य प्रारंभिक तुषों में पाते की कीविक्षा करना यही इस प्राकृतिक युग के व्यक्तित्व की उपलब्धि है।

108 उपर उल्लिखित हुआ महान :-

यह इस संग्रह की दलवी कहानी है। इसकी चर्चा "मौस का दरिया" देखी की जायें।

111 नामांश :-

यह इस संग्रह की ग्रामर्क कहानी है। इस कहानी की चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह के अंतर्गत की जा चुकी है।

122 लाल :-

यह इस संग्रह की बारदिय कहानी है। इसकी चर्चा भी "बयान और अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह में की जा चुकी है।

133 या कुछ और :-

यह इस संग्रह की तेरहवी कहानी है। इसकी चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में हो चुकी है।
14वां जोखिम :-

यह इस संग्रह की चौदहवीं कहानी है। "बयान तथा अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह में इसकी पहचान की जा चुकी है।

15वां बयान :-

यह इस संग्रह की पंद्रहवीं कहानी है। इसकी पहचान भी "बयान तथा अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह में की जा चुकी है।

16वां राति :-

यह इस संग्रह की अंतिम कहानी है। इसकी पहचान भी "बयान तथा अन्य कहानियाँ" कहानी संग्रह के अंतिम की जा चुकी है।
माँ का दरिया :-

इस संकलन की कहानियों में खैया जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है।
अफसर दांपत्र जीवन के कारण भ्रष्ट होते हुए संबंधों का भी चित्रण किया गया है। यूद्ध की भयानकता तथा सेवनहीनता का चित्रण किया गया है।

1. युद्ध
2. तलाश
3. माँ का दरिया
4. दुखियों के रास्ते
5. उपर उठता हुआ मकान
6. जो लिखा नहीं जाता
7. दूरदर
8. कुछ नहीं कोई नहीं
9. दिल्ली में एक और मौत
10. प्रवासी आदमी
11. नीली हौल
12. बदनाम बस्ती

युद्ध "माँ का दरिया" कहानी संग्रह की पहली कहानी है। इस कहानी में युद्ध के समय की मनन्तव्यति का चित्रण है।

इसका कथासार यह है :- भारत और पाकिस्तान का युद्ध का रहा है। लोग हर तरफ युद्ध की ही बातें कर रहे हैं। नायक अकेला बटक रहा है।
इस वस्तु मादोल में उसे घर से आए पत्र की याद आती है जिसमें उसके पिता ने लिखा है कि जब तक दवा बाया है वह दिल्ली में वापस आ जाए। युद्ध की निम्नविचारता तथा केफारी की मार उसे घर लौटने के लिए फिक कर देती है। उसके पास तो ठंगे के कम़े भी नहीं हैं। उसके पास एक दिन रु. तीन-तीन की बर्दी है।
उसे पढ़कर वह घर की ओर रवाना होता है। रेल के सफर में वह तोपता है कि वह घर क्यों जा रहा है। युद्ध के डर से या केफारी के कारण। घर बाहर यही
यह कहानी दो महत्वपूर्ण बातों के आसपास घुमती है। बेकारी तथा युद्ध की भयानकता, युद्ध को बेकारी सूची उत्पन्न की जल्द करती है जितना युद्ध। स्वतंत्रता के बाद बेकारी ने हमारे युद्ध कर्म को अपनी गिरफ़्ठ में ले लिया है। बेकारी ने युद्ध को ही निश्चित बोध से पर दिया है। यहाँ तक कि वे यह तंग जाने का सब तालमेल नहीं बुटा पाते। इस कहानी का नायक लोकतांत्रिक रह जाता है कि यह फिर पर वाले यह तो नहीं लोटे कि वह बेकारी के कारण तो घर नहीं ली जाता। इस कहानी का नायक तो लोटता है, "घर पता ही जाएगा... पर वहाँ जाकर भी क्या होगा। भायद आत्म-पड़ोस वाले तो पते कि बमबारी के दर से ही भागकर आया है।" 

यह इस संगठन के दूसरी कहानी है। इसकी चर्चा "आठ कहानियाँ" के अंतर्गत की जा सकती है।

माँ का दरिया:

यह कहानी एक पीकर बच्चे की एक पुढ़ीम और उसके मां के खिलाफ "माँ का दरिया", "युद्ध" - पृष्ठ-16।

पूर्वोत्तर - पृष्ठ-16।
विवादात्मक कहानी है। मैथिली गोरखी ने यह रचना की है। विवादात्मक कहानी में एक युवा आदमी को अपने बालकाल में घटनाओं और अन्य संघर्ष पर चर्चा की है।
अया, जुनू ने उसे भी अपनी हालत बताई लेकिन कंप्लीट नहीं माना। आचार वह क्या करती। वह कर्नदार तो थी। कंप्लीट उसे परेशान करता रहा।
दर्द के कारण वह दरीयी थी। पोड़ा फट गया था अब उसे कुछ राहत मिली थी।
उसे लगा कि उसने मदनलाल को तूं दी ही लौटा दिया। उसने कहते से कहा कि मदन-
लाल को बुझा लाओ। उसने तो तो कि वह आदमी उसके लाते फिल्टी तहतुष्टि
रखता है, यही तो चक उसे लगा कि उसने मदनलाल को लौटा कर अच्छा नहीं
किया।

कमलनाथ द्वारा क़ेफ़ा जीवन पर झिक गई वह कहानी लेखी साहित्य में बहुत उचित हुई है। इस कहानी में समाज द्वारा उपेक्षा का व्याख्या व चली चित्तर्व है। कमलनाथ की निशाना यह है कि कहानी में क़ेफ़ा जीवन का
वर्णन वटारे लेकर नहीं दिया गया है अर्थात पहाड़ जल्दी और बीमारियों के
उद्धार कर सेवा कुलू की ज्यास-ज्यास और महेंद्रविदां का जीवन अंतिम
हुआ है। पुस्तकाल सिद्ध है कि कहानी की खूबी यह है कि क़ेफ़ा के शरीर
धार का, कौशल और कौशोलकों का खूब खूब चित्रण लेखने के पथों
हरी भी उपलब्ध है। निराशा कहानी में नहीं है। इस कहानी में पूरी
इमानदारी से शरीर के मात्र का धार का जीवन करने वाली क़ेफ़ा की ज्यास जल्दी
की बेहतरी और महेंद्रविदां का अललत मार्गिक तथा सफल चित्रण है।

प्रथम शारदबी दर दरेरारे शारीरिक वाताना की पुर्ति से भी अधिक
संगीत जूड़ और मूढ़ मन्यार के लिए ही प्रतिष्ठा थी। विप्र के बाद में उन्नें "मात्री" मात्रा
ही समझाकर लगा। लेकर ने जुनू ने माध्यम से क़ेफ़ा जीवन का बड़ा भाग बाहर
चित्रण किया है। यहां फिल्टी पूर्ण का जीवन मूल्य नहीं है। मात्र का मूल्य है।
जीवन बिताने के लिए यहां एक रास्ता है। प्यार, ममता व नामक
भावनाओं का यहां कोई असिस्टेन्स नहीं है। यहां तो इंतक की खूब मिलती है के लिए
फिल्टी की वाताना की भूमि मिलती पड़ती है।

फिल्टी शादी है कि नागर, स्वाजर व विशिष्ट समाज क़ेफ़ाओं के
भूमकाल व वर्तमान पोड़ा की समझ नहीं पाता। सभी पूर्ण उन्नें मात्रा बिताना
समझते हैं। क़ेफ़ा का वर्तमान भी भावह, ठूलात्याद, अपमान जनक, बिनमत और
अयोध्या दूर होता है। श्रवण होता है परतु कर्त्तमान से भी अधिक कुर्न व भयानक।
इस कहानी में एक बच्चा की हत्याकांड व बीड़ा का यवर्ध फिर बॉया गया है।
"मदनलाल" मदुर वर्ग का प्रतीक है। जो "माँस का दरिया" में नहीं उतरता
और मानवीय सच्चाई को अभिव्यक्त करता है। इसी प्रकार मदनलाल के अतिरिक्त
तभी मग शोक का के प्रतीक बन जाते हैं और लेखकीय धृष्टा उन पर प्रशिक्षा हो
जाती है।

पुस्तक के रास्ते:-

इस कहानी में दौरदंग दूरिया और उल्लेख नों का विकास हुआ है।

बलराज और ललिता पति-पत्नी थे। उनके दो बच्चे तृणोत्त और
तंजु थे। ललिता अब बलराज के साथ नहीं रहती चाहती थी। बलराज ने भी
तो कि यदि ललिता यही पाती है तो वे दोनों तलाक लेने। हालांकि उसे
यह भी लगता रहता है कि इस तलाक का उसके बच्चों पर दुरा प्रभाव पड़ेगा।
अंतः ललिता ने बलराज से तलाक लेकर बीकानू हे विवाह कर निया।

यह कहानी आधुनिक समाज में घटित पारिवारिक विधान को प्रकट
करती है। पत्नी किसी आक्रोश में खड़े कर अपने पति के साथ न रह कर अन्य
व्यक्ति के साथ रहना चाहती है, लेकिन पति चाहता है कि वे न हो तो बहुत
अच्छा होगा। वह अपने बच्चों के बारे में सोचता है कि वे पर पैदा प्रभाव पड़ेगा।
इस प्रकार की तनावमय स्तिथतियों में धिर्यर व्यक्ति पलियनवादी हो जाता है,
तथा अपने मुल्लों को भी तोड़ देता है। पति तो चाहता है कि वे स्वीकृत मानदंडों के
आधार पर में दो ही निर्माण तक लहरा। ती ही
आत्महत्या और बुरा।

ललितां की परिवार के प्रवाह में बहती फिरा जा रही है। और
अपना त्याग चुन पाने में असमर्थ है। ललितां की यह स्तिथति समाज के लिए
हानिकारक है। पति अपनी पत्नी की स्तिथति बलाते हुए निखट न है।

पुस्तक के रास्ते:-

"माँस का दरिया" "दुःखों के रास्ते", पृष्ठ 59.
का संकट पहल है ––– कि वह शायद हम दोनों में ले किती को भी संघर्षत नहीं चाहती।”।।१॥ इन स्थितियों में मानव बहुत अनेकावल और व्यर्थता का अनुभव करता है। देश की असफलता में मानव दूर जाता है “हुँड़ कभी नहीं बीतता। 
अगर बीतता होता तो मिर लॉटरी नहीं आता। यह हुँड़ों के रास्ते हुँड़ों। इन पर आदमी मिर-मिर लॉटरी आता है।”।।२॥

इस कहानी में बदलते हुए परिस्थितिवादित तथा दामस्क्स तंत्रों का यथार्थ विचार किया है। तलाक के बाद भी बलराज सुसिर नहीं हो पाता, वह अपनी तलाकहृदय पत्नी से मिलने आता है। तलाक की औपचारिकता के एक ही इकट्ठे में तारे महुर तंबूम तपासता नहीं हो पाते हैं।

३॥ अगर उत्तर हुआ मकान :–

यह कहानी में दूरस्थव्यंग की शेखरी और मजबूरियों का अक्षर विचार हुआ है।

सुरारीबांजु नामक युवक विवाह नहीं करना चाहते थे तिन्ह माँ बाप ने उनका विवाह कर दिया। सुरारीबांजु तब जलवंत नगर में नौकरी करते थे। उनकी पत्नी गाँव की यह बात पता चल गयी थी। सुरारी बांजु ने अपनी पत्नी की खरी नहीं ली। वह गाँव भी नहीं आते थे। इन बालों के लेक आकर गाँवी ने एक दिन हों लेकर गाँव की आत्मवात्मा का पुष्पांक फिरा था, तथापि उसकी सात ने देख दिया और उसे बसा दिया। वह उसी दिन ने वह लात चुप की नजरों में ही केंद्र रहती थी। एक दिन गाँवी के लात जलवंत नगर जाकर जबरन सुरारी बांजु को फिरा लाए थे।

जलवंत नगर में सुरारी बांजु के एक भाई थे– देवकी। उनकी पत्नी सतर्कता बढ़ी अब भी औरत थी। प्राप्त: सुरारी बांजु उनके पर आते जाते रहते थे। वह कभी-कभी सुरारी बांजु की आर्थिक रघुनाथ तह व्यवस्था कर देते थे। सुरारी बांजु का गाँवी के जमल करते थे। लेकिन देवकी की तमाम भी मात्र आई थी। सुरारी ने गांव में उनकी दुकान खुल्ला दी थी और उनकी दुकान जल निकली। वह सभी वेतन की उनकी लंबी समाप्त हो गई थी।

४॥ पूर्वकवि – गुरुठ–६०। २॥
मुरारी बाबू का विवाह हुए 45 वर्ष हो गए । मुरारी बाबू का इलाहाबाद बेटा किसने गांव छोड़कर गहर लगा गया । वह बड़ा डोक्टर था । मुरारी बाबू और गौरी गांव में रहने लगे । मुरारी बाबू का तारा समय देखती के यहाँ बूढ़ा जाता लेकिन गौरी को घर में ऑक्लापन बहुत काटता था । एक दिन गौरी, मुरारी बाबू ने लड़ पड़ी । उन्होंने क्रोध में आकर कह दिया कि वे हरिद्वार के चारी सो जायें । उन्हें बेटे का माहू बहुत ठंग करता था । किसने वह गौरीने मनोरंजन डेंटे रेड देता था । उन्होंने कभी भी कुछ देंगे नहीं मुहा । उन्हें ऑक्लापन काटता था।

जिसी को वह डेंट नहीं पाते वे और डेंटरी के पास को जाते थे। मुरारी बाबू और गौरी के बीच मन सुधार होने पर गौरी कानपुर बुली गई । एक दिन अपने गौरी, किसने उनकी पत्नी तथा बच्चे घर आ पहुँचे । मुरारी बाबू तब तक देखकर हैरान हो गए । किसने पूछा कि क्या वह सकुशल हरिद्वार कर दिया था । किसने ने बताया कि वह तो यह योजना बनाकर आया है कि वह अपने माता-पिता को ब्रजबेस्वा धरिद्वार सुरू करे । उसी दिन के दोनों के संबंध सामान्य होगा क्या फिर कुछ घटा ही न हो ।

मुरारी बाबू को सिर्फ सीता अपनी पत्नी से न रखकर पृथ्वी हो जाती है, जो मनोरंजन के चंद समय देखकर ही अपने कार्य की इतिहास समझ लेता है । किसने यह पात जाकर जब भी वह लीटा शरीर ही उन्हें एक पृथ्वी का केशगावन वर्ण कर देता था । पृथ्वी के यह सब व्यवहार की झंझर तब होती है जब वह "फले वक्ता सूपुल माती दामादों में से कोई सरसी देता है और वहे जलाता है, यद्यपि निभाना कोई फायदा हुआ या नहीं।"।

गौरी बहुत दिन बाद लौटकर रात्रि के शक्तिसंगम में माता मेरे अपनतृ थे वह पूछा लेती है ।

"कोई तकलीफ तो नहीं हुईो......" तब माता उनके दामाद की तारी दरार पर एक शीत लोग का जाता है, तब वहें जय दूध से जाते हैं । इस पृथ्वी यह कहानी दामाद के संबंध के विवाह के साथ-साथ धामावस्था की मजबूतियों को प्रभावित करती है।

धामावस्था की इस "धाममूर्ति" पर बहुलती कहानियाँ संगीत में आई है जिसमें

- - - - - - - - - - - - - - - - -

कमेश्वर : "माँ का दरिया" "उभर उठता हुआ मकान" - पुस्त-60.
ते छू जीवन के बुद्धतार आयामों को सूक्ष्म फैलों की परिवर्तित मूल्य दृष्टि को तुंडर ठंग ते रेखांकित करती है, यथा: "गोपिन्द भिक्षु की "क्यों कौंद्र""। विनाश कमलमबर की कहानी "आम्र उदगता हुंआ मकान" में पीढियों की यह परिवर्तित दृष्टि रेखांकित होने से रह जाती है। लेकिन यह कहानी आधुनिक समाज के उपेक्षित दृढ़ वर्ण का दुकृष्ट विचार प्रस्तुत करती है। दुरुपतिखत संस्कृत के प्राय: अपने माता-पिता के प्रवाह में बलवत माता-पिता को अपने सूक्ष्म-दृष्टि में वह अपने साथ नहीं रखता। और ना ही कभी उनके सूक्ष्म-दृष्टि की बर्बर लेता है, जब मनीआकर्ष केवल कर ही वह अपने कर्तव्य की इतिहासी समझ लेता है। पुरावा वर्ण की यह मानसिकता माता-पिता को बहुत कष्टदायक है। वह बेकाबूपेन में ही फिरे रहते हैं।

अध्यायम् के ताहत-साह जुड़ा पारिवारिक तनाव भी इस कहानी में आया है। यह कहानी पूर्वाकालिक शैली में लिखा गया है।

हाँ, जो लिखा नहीं जाता:

इस कहानी में प्रेम से निकोण "भूमित दु:न्दर"). मेहन्द्र और तुंदराना द्वारा दाम्याचं संबंधों के उल्लास पर फुकाना दर्शाया गया है।

मेहन्द्र और तुंदराना पति-पत्नी थे। तुंदराना विवाह से पूर्व वन्दर को पालती थी। वन्दर भी उससे विवाह करने पातता था। विनाश तुंदराना का विवाह मेहन्द्र ने हुआ और वन्दर ने विवाह की नहीं किया। मेहन्द्र और तुंदराना एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। प्रेम के दो क्षणों में मेहन्द्र ने तुंदराना को अपने प्रेम-संबंधों के बारे में बताया। तुंदराना ने भी बताया दिया की वन्दर नामक युक्त उसे पातता था। उससे अभी तक विवाह नहीं किया। बस उसके बाद से तुंदराना का पति उसकी प्रत्यय बात पर सन्देह करना आरम्भ कर देता है। धीरे-धीरे विचारियां बहुत नातालूत सरकर जा रही हैं। अंतत: वह एक दिन तब कुछ छोटकार अपने पिता के पास लौट गई। पाँच वर्ष तक अपने पति से वह अलग रही।

वन्दना और मेर्याल दोनों उसके पिता का देवा रंग हो गया। वन्दन के अंतिम संस्कार में आए और मेर्याल दोनों उसके पिता के अंतिम संस्कार में आए। वन्दन के अंतिम संस्कार में आए और मेर्याल दोनों उसके पिता के अंतिम संस्कार में आए। वन्दन के अंतिम संस्कार में आए और मेर्याल दोनों उसके पिता के अंतिम संस्कार में आए।

इस कहानी में पति-पत्नी के संबंध का उल्लास बहुत त्वरण से विस्तित हुआ। इस कहानी में वह भी त्वरण होता है कि उन्हें तारा जीवन त्वरण हो जाता है। पिता की मृत्यु के बाद पुराना को एक पुराना का आकलन भोगना पड़ता है। इस आकलन का दंगा भी बहुत आघाती तरह कहानी में उभरा है।

इस कहानी में मध्यवर्तिनी परिवार की आर्थिक विषमता और उन्होंने नौकरी करती एक लड़की तुलना की बेबती का विवरण है।

इसका बधातार है: सुनीता, गरीब परिवार की कुलता थी। वह मेर्याल दोनों में सबसे बड़ी थी। उसके पिता ने बहुत कठिनाइयों से उस की सराहना की। वह वह का अधि जलते रहते के लिए कोटी-कोटी नौकरियां करती रहती थी। इस कहानी के बच्चों को रूपान्तरण पढ़ाती तो कभी दूध दिये पर दूध बार्तता थी। उसे इस तरह का जीवन काफी पसंद न था। वह शादी के पति नहीं करना चाहती थी। उसे नौकरी मिल गई। तब से वह भाई-बहनों को त्वरित दी। उसकी निर्भरता की कंधा में वह तोपारी रहती थी। यदि उसके अभाव में बच्चे पहन किया तो आता-पड़ोस के लोग उसे पहंचते थे। मुहल्ले की औरतें उसे ज़ख्म कहतीं। वह होमाश शादी का विवाह करती थी तीन वर्ष दीन के बाद उसे विवाह में जन्म आ जाता था।

इस विवाह में उनका अर्थत्त्व उसे बता देता रहता था तथा वह स्वयं की तर्कशक्ति की अनुमति करती है। जब उनकी नौकरी छूट जाती है तब उसके मां बाप को उनके स्वियस्स की देखी तत्कालीन कहती है। वह उसके लिए कर की तलाश खुल ही जाती है।
एक दिन रेता ही हुआ। तुनीता की नौकरी छूट गई थी। मां-बाप ने एक लड़का देखकर तुनीता की सड़कमन के लिए उसे अपने पास बुलाया। तुनीता ने भी उनकी बात को स्वीकृति दी दी। इस समय नौकरी न होने की क्षज्जा दे उत्तरा अस्तित्व तमाम हो गया था।

इस कहानी में मध्यकालीन पारिवार की आर्थिक घटनाओं और लड़कों में नौकरी करती एक लड़की तुनीता की बेपत्ता का प्रतीक है। इस पारिवार की आर्थिक मजबूती शेष है कि इसके तलाश पूरी तरह दुःखरों पर निर्भर है, इसके लिए निर्धध "दुःखरे" ही करते हैं। घर की आवश्यकता की चोटी-छोटी बीमे आर्य या न आर्य - इसका निर्धध उनके हाथ में नहीं है। अमितु उन्हें कर देने वालों के हाथ में है। दुःखर में वोट दिले देना है उत्तरा निर्धध भी दुःखर ही उनके लिए देते हैं। इस घर के पार्वत को विद्यमान चीनों की दुःखध बनी मिलती ही नहीं।

मध्यकालीन पारिवार की आर्थिक घटना आर्थिक घटना के अस्तित्व की ही समझ कर देती है। आर्थिक इस घटना में स्वयं है संबंधित निर्धध भी नहीं ले लेता। निर्धध की सीमा इस हद तक बढ़ जाती है कि वह दुःखरों के तब निर्धध तब दूरकर तीखा करने की दीवार बिखा देते हैं। यहां तक कि नामिका जीवन में विकास के महत्वपूर्ण मामले में भी दूररों का ही निर्धध त्वीकरण कर लेती है।

इसे आर्थिक दबाव के बारे में की स्वार्तता भी नहीं प्राप्त हो पाई है, यही इस कहानी का प्रतिपाद है।

इसलिए छूट नहीं कोई नहीं :-

यह एक विशिष्ट प्राकृति की प्रेम कहानी है जिसमें बाप-बेटे में द्वारणी ही जाती है और अंत में सूरज अपने बाप का खून कर देता है, क्योंकि उसका बाप उसकी मां ते प्रेम न करने एक अन्य स्त्री से प्रेम करता है। इस मार्ग से उस स्त्री को झटपटे के अनेक प्रश्न जब सपना नहीं हो पाते तब वह अपने बाप का खून कर देता है।

इसका कथानाट यह है :- सूरजभान का पिता दीवान पुलिस में नाम करता था। वह रात को पहले घरी करता था तथा गाँव में रहने वाली
गौरी से उसके अद्वैथ संबंध थे। भौकादारी के बहाने उसकी हर रात गौरी के घर ही सीतारी थी। तुरंज को यह बात का पता चल गया। वह अपने मां के प्रति इस अन्याय की सहन नहीं कर पाया। दीवाने ने अपने नेटे पर पूछा आरोप क्या है। उसे पुलिस द्वारा पकड़वा दिया ताकि वह निर्दिष्ट होकर गौरी के साथ अपने संबंध बनाए रखे। गौरी ने जुमानत करके सूरज को छूटाया। तुरंज जमानत पर रिहा होने के बाद गौरी के घर पड़ी। उसने गौरी से पूछा कि उसने उसकी जमानत क्यों करवाई। गौरी ने बताया कि उसके पास मंदिर बनाने के लिए जो धन था उस धन को जमानत में लगा दिया। तुरंज ने गौरी से कहा कि वह दीवाने को वह दे कि वह आगे ते उसके घर न आए। तुरंज ने यह भी कहा कि वह गौरी को मंदिर बनवा देना लेकिन वह दीवाने को आगे न तकत मना कर दे। कभी-कभी झुप-झुप कर तुरंज गौरी का हात पुकारने उसे छुटा देता। पुलिस उसके पीछे लगी थी।

वह गौरी को अपनी मां के तमाम सहायता था। वह नहीं छूटता था कि उसके पिताजी दीवाने गौरी के साथ अन्याय करे। अतः वह तद्वद ही गौरी का ध्यान रखता। वह छूटता था कि वह गौरी को मंदिर बनवाने में तथा दीवाने के घुसने से भी बच जाए। एक दिन वह गौरी को मिलने आया कि पुलिस को पता चल गया। पुलिस की गोलियां फेंकने लगी। लेकिन दो तीन दिन बाद तुरंज तो नहीं पर उसकी लाश आई थी। उस दिन वह पुलिस कुख्यात में मारा गया था और उसके फिर पोलिसार्मी के बाद उसकी लाश का आया था। लाश चरणों के घर के बगीरे पर पड़ी थी। तुरंजाने का बाप अपने बेटे की लाश का देखने नहीं आया था। जब सूरज की मां अपने बेटे की लाश देखने आई थी तो दीवाने ने उसे डांट कर वापस बुला दिया। दोपहर में चार आदमी अर्थ उठाकर उन के ने कहा। गौरी सुबह से ही इंतजार कर रही थी। जब अर्थ गौरी के घर तक पहुँची तो उसने अर्थ रोकने के लिए कहा। चरण चुपचाप रह गया। अर्थ नीचे रख दी गई। गौरी ने क्रोध उठाया। सूरज का चेहरा देखकर चुपचाप अपनी कोठरी में लौट गई।

नैतिक मूल्यों का पतन यिस्त कर दी गया है कि पत्नी से छूट बोलकर पति उसे हत्या कर रहता है। पिता अपने बेटे को ही कोटा सहायता है। मानवीय संबंध पतन के कमार पर हैं, एक बाप भी नैतिकता व रक्त संबंध को छूट महत्व नहीं
देता। लेकिन कहीं अभी माननीयता जिंदा ही है। बेटा दरभंगा गौरी री पर
dोष आरोपित नहीं करता बल्कि उसके मां की तरह ही मानता है। नारी
होने के कारण उसका सम्मान करता है।

इस कहानी का एक सूदर मानवीय पत्र गौरी, उसके पिता की
प्रेमिका भी है किंतु उसकी पुलक पर निर्भरता, हर नारी की पुलक पर निर्भरता,
का अंधा विश्लेषण हुआ है। इस कहानी में बदलते हुए पारिवारिक संबंधों के साथ
काम-संबंधों का यथार्थ विश्लेषण किया गया है। पारिवारिक संबंधों में ज्यादा
तनाव के साथ-साथ दांतप्य संबंध की अपक्षपाती भी इस कहानी में अभिव्यक्त हुई
है। मानसूनों का धरती इस कहानी का नाभिक़ेद्र है।

98  98  दिल्ली में एक और मौत :-

"दिल्ली में एक और मौत" दिल्ली में हुई मौत के पृष्ठ महानगरीय
जनता के तरी खबरों को पिछले वार से एक अधिक कहानी है। किंतु परिस्थितियों
के परिवर्तन ते महानगर के वे ही लोग एक और मौत पर चिंतन देख एवं मानवीय
हो उठते हैं। इसका विषय कमेक्करजनि ने किया है। "दिल्ली में एक और मौत"
में दोनों स्थितियों के वैधक्य को गहराई से चिंतन रखने के लिए कहानीकार ने
दोनों कहानियों में पात्र वे ही रखे हैं।

कथातार यह है :- एक ही जगह पास-पास के महानगरीय
वामनों वाले सब लोग युद्ध की
घड़ी में बहुत अंतः । तरदार वास्तवी में उसकी पत्नी, भवानी तथा लेखक युद्ध
की वातदियार साथ-साथ मोह रहे हैं। युद्ध जारी है तथा प्रतिदिन मोर्चे पर
मरने वाले वीर जवानों के नामों की तूफान अबार में धपती है। तब लोग फौजी
वनकर ही की रहे हैं। मिसेज वास्तवी का भाई भी फौज में है तथा इसी कारण
वे उदास व परेसान रहते हैं। तभी गति में तें एक मेजर की अर्ध निकलती है।
मिसेज वास्तवी उसे देखकर ही दुःख में धीर वाली है। भवानी तथा लेखक भी
शक्तिता में शामिल हो जाते हैं। वे इसी अधिक कर का कार रखते हैं तबके
शहरमूर्ति ही तो ज्यादा लगता है। मेजर की आयु बहुत छोटी थी । उसके तीन
वर्षे ही। युद्ध में इस मेजर ने तात्पर्य पाकिस्तानी टेंक तोड़ कर बहुत वीरता
दिखाई थी।
प्रधानमंत्री शासनीजी ने भी उसकी प्राणार्क की थी। उसकी रेपेटेंट के कर्नल तथा अन्य अफसर भी आए हैं। मृतक के बूढ़े पिता भी शव वामा में राखा है। वैसे ही मृतक को आवंतनी लानी दी गई, कर्नल फूट-फूट कर रो पड़ा। बूढे पिता ने दिलासा दिया। कर्नल को संबोधित करते हुए उसने कहा "तुम तो सबर करो..." युथे देखी।"

इस कहानी में देशभक्ति लेनिक के मृत्यु ने इस महाद्वारीक लिंगी के स्वामी पाठ को भी उद्दर से झिलां दिया है। इस प्रकार यह कहानी पहली दिली में एक मौत के "कंद्रासट" में आकर मानवीय अवकाशों के प्रति एक आत्माभाव प्रदान करती है। इस कहानी की आधुनिकता श्रीमलिका का पाठ पढ़ता है। युद्ध की शानसमयी टेला में जब पृथ्वी प्राणी मृत्यु व मृत्यु से आतंकित है उस समय भी मृत का बूढा पिता रोते हुए फूट कर तांत्यना देता है। इस कहानी में युद्ध के विद्वारम्भ में मानवीय लैँडना की समाप्ति के यथार्थ को खोला गया है। युद्ध से जुड़ी हुई व्यवस्था के लिए मनुष्यों में युद्ध में मृत्यु की कोई घटना ही नहीं बनाती, यही इस कहानी का यथार्थविधि है।

फालू आदमी :-

इस कहानी में प्रतिबंधक दृष्टि से प्रेम की मन्वरियों का और दूरियों का दिशन हुआ है। इसका कथारार है :- नायक अपने माता-पिता की अनुपाधी संतान था। उसके लेख उसके माँ-बाप में संबंध छत्रा रहता था। इस प्रकार माँ-बाप के बीच उत्पन्न बनाव से उसे पता चल गया कि इस संबंध का कारण आस है। नायक का युवावस्था में सुनाता नामक युवती से प्रेम हो गया। वह नायक के शिशु की माँ बनने वाली थी। सुनाता उस बच्चे को जन्म देना नहीं चाहती थी। नायक के समझने पर भी सुनाता को पित्री भी उस का यह पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। इसी कारण नायक बहुत तनाकुर्त हो गया। वह नहीं चाहता था कि अब कोई शिशु की माँ दिया जाए। दोनों प्रेमियों के संबंध छठी तनाव के कारण समाप्त हो गए।

कमलेश्वर - "मात का दरिया" "दिली में एक और मोट" - पृ.122
चूँ तथ्य के बाद तुजाता का विवाह कहीं और हो गया । जब विवाह के बाद तुजाता नायक को भीली तब वह गर्भवती थी । तब भी उसने नायक को बताया कि वह उलझी मां नहीं बनना चाहती । यह तुनक्सर नायक परेशान हो गया । 
उसे लगने लगा कि यह फिर हत्या और बुन बराबर का दौरा शुरू होगा । उसके मन में संतान के प्रसन्न अनीम ता मोह उम्राई आया था । इसी कारण वह तुजाता के मना करने के बाद भी कमी-कमी उसने भिड़ने पहुंच जाया करता था ।

चूँ दिन बाद तुजाता ने मेटनियटी होम में एक बच्चे को जन्म दिया । नायक बच्चे को देखने मेंटनियटी होम गया । वह तुजाता को नहीं उस बच्चे को भीली पहुंच था । उसने तुजाता की बातों में मातृत्व शलक तुजाता उठा देखा था । उसे यह तब देखकर प्रसन्नता भी हुई थी । वह यही सोचता था कि यह बच्चा शुद्ध का होता तो अच्छा रहता ।

इस कहानी का नायक स्वस्तितिन हृदय से युक्त है । जब ते उसे पता चला है कि वह अपने माँ बाप की अस्पष्ट संस्कृति है, तब ते उसके मन में अलगी संतानों के प्रति बहुत विश्वास ता मोह पैदा हो जाता है । सुनाया जब बच्चे को जन्म देने से मना कर देती है तब नायक को समझ में नहीं आता कि जब वह माँ नहीं बनना चाहती तो पत्नी क्यों बनना चाहती है । इसी कारण उनके संबंध संतान हो जाते हैं ।

इस कहानी में संबंधों के बीच आप विवाह से भिड़ू का विवाह किया गया है । वह भिड़ू आज की भौतिकतावादी आभूषणशास्त्रावादी आभूषणकार की ही देन है कि पति-पत्नी विवाहोपरांत भी शीघ्र ही संतान नहीं बालों और उस संतान को हत्या करने के लिए तत्पर रहते हैं । इस कहानी में मनोवैज्ञानिक यथार्थ को बहुत बारीकी से उद्धारित किया गया है ।

---

नीली बूथिकः

इस दौर का श्रेणी और धार्मिक भूमिका द्वारा जच्च और चारी द्वारा भी चारी की न कलीमाई परस्थती की प्रेमलक्ष्य का मानसिक चित्रण इस कहानी में हुआ है ।
इसका कथासार है वह महेश पड़े - महेश एक अशिक्षित व्यक्ति है। वह कानपुर की एक ग्राम में बालक के रूप में जन्म लिया था। लेकिन बाद में उसे नीरव थोड़ी देर ही बीत गया। अब वह फिर अन्य बाबा से थोड़ी देर पर नियम हृदय नीली झील की ओर जाने वाले रास्ते पर मजुदूरी कर रहा है। उसके मन में तांदूरी हो गई हैं। फिरनी झील का तांदूरी अथवा प्रवृत्ति का तांदूरी तभी उसकी आकर्षित करता रहता है। अपनी झील प्रवृत्ति के कारण ही वह झील की तरफ अपने दाता देखकर रहता है।

उसे नीली झील बहुत अच्छी लगती है क्योंकि नीला रंग उसे बहुत पसंद है। इसलिए नीली झील की तरह उसे जो किसी भी बस्तु दिखाई देती है वह उसी की तरफ आक्रंध हो जाता है। मजुदूर ढूंढने के बाकी बड़े वह गोरी मेनों को निर्दिष्ट होकर ताकता रहता है। इसी कारण उसके लिए मजुदूर उसे जलते हैं और उसे भी उसने न करने की उपदेश देते रहते हैं। परंतु महेश पड़े को अपनी ही झील प्रवृत्ति के अतिरिक्त बहुत नहीं तकराता।

एक दिन इस नीली झील की ओर झिल्लियाँ नीली-पुस्करों का एक झलक आया। उत्तर झलक बहुत लोक और तारीखों की ही। एक महेश ने नीली ताफी भी पहन रखी थी। महेश पड़े उस स्त्री की ओर आकर्षित हो गया। वह लगातार उसे देखकर रहता। अब वह उसे बात करने का अवसर खोजने लगा। उस स्त्री के आकर्षण से ही उसने उस झलक को तामान दौड़ाया और जब उस झलक के आकर्षण से ही उसने उस झलक को तामान दौड़ाया और जब उस झलक के आकर्षण से ही उसने उस झलक को तामान दौड़ाया।

महेश ने नीली झील के पास की ही झलक पर पैराडोक्स प्रतिवाद के विवाद कर लिया। अब उसे मजुदूरी करने की आकर्षता नहीं रही, क्योंकि उसकी पत्नी बहुत अग्री है। वह विवाह जीवन की तरफ आकर्षित थी। अपने विवाह के बाद महेश पड़े प्रसन्न था। दोनों की आपूर्ति में बहुत अंतर था लेकिन वह भी उसकी नीली झील की तरफ आकर्षित था। अपने विवाह के बाद महेश पड़े प्रसन्न था। दोनों की आपूर्ति में बहुत अंतर था लेकिन वह भी उसकी नीली झील की तरफ आकर्षित था। अपने विवाह के बाद महेश पड़े प्रसन्न था।
अच्छी-अच्छी थोड़े लाकर देखा और दंग के कपड़े पहनना सीखा है। पारबती की उम्र बहुत अधिक थी लेकिन तब भी वह मेहता के कारण इन तब वस्तुओं का उपयोग करती। पारबती को दिली प्रेमी की भी आफ़िश डिंगा नहीं थी क्योंकि पारबती कयारों के लेन-देन का व्यापार करती थी। वह जब उस बील के पास जाकर घंटों बैठा रहता और दशियों को दिखाता रहता। पारबती उसके इन तौंदर्द्र प्रेम की समझ नहीं पाती। उसे लगता है कि तीतर देखने के लिये इतनी दूर जाने की क्या आवश्यकता है?

झर पारबती माँ बनने वाली थी। मेहता तो प्रेमी प्रेमी था वह इन बालों को सम्पूर्ण पढ़ाता था। पारबती को बताता सा लग रहा था। झर मेहता भी बहुत गम्भीर रहता था, उसे लगता कि वह बील पर ही बैठा रहे। मेहता बील के फिरने के बैठा रहता। बील के सिंवाय उसका मन कहीं भी नहीं लगता। मेहता पशियों के अड़दों का संग्रह करता। एक दिन बालों को बालों में अड़दों पारबती को दिखाए। यह लोग तो पारबती उन अड़दों को स्वयं करते में झरपाई कर फिर उन अड़दों के तौंदर्द्र से प्रभावित होकर उसने एक अड़दा उठाया और हुंदेय तो वह अड़दा उसके हाथों ते पूड़ गया। अड़दा का पूड़ जाना पारबती को सबसे बड़ा अपमान लगता। उसे लगता कि मानों उसके गर्म का वस्त्र ही मृत हो गया। अंततः अपस्ताल में एक मृत बैठे की जन्म देखकर मर गई।

मेहता पड़े फिर से अक्ल मर गया। अब इस "ओलेपन" तथा "पहले के ओलेपन" में काफ़ी अंतर था। अब वह विद्वृत था और पारबती का काफ़ी पैसा उसके पाल जमा था। मरने से पहले पारबती ने बार-बार कहा था कि उसकी मृत्यु के बाद उसके नाम पर कई में एक मंदिर और धर्मसाला बनवायी जाय। मेहता पड़े को अब उसी कान की तिथि रहने की। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता। वह पारबती की अंतिम दुख पूरी करने के लिये बड़ी करता।
बहने का कि पारबती के बच्चे को तो वह बच्चे नहीं पाया पर वह इन पवित्रों को लो बच्चो सकता है। उसने उसे पता लगा कि कुंजी का जगह नीलाम होने वाली है। वह उस जगह पर पारबती की इच्छा नुकसान एक मंदिर बनवाना वाला था। उसके लिए समय कम था रहे थे। उसने मंदिर बनवाने के लिए धंता बच्चो की। उसके मन में लंबा आराम हुआ। उसके मन में आया कि वह मंदिर बनवाए या नीली झील वाली जगह बरीद का फैलाव को संरक्षण पुराण करे। वह नीली झील या मंदिर को तो बच्चो में ते क्या युगा जाये उसका निश्चय नहीं कर पाता था। उसे बहुत हटकाटे होती थी वह झील के दिनारे जाकर सुरक्षा मुदार, तनाव, तर आदी परिस्थितियों को एक तक निराशा रहता। जिस दिन झील की नीलामी हुई उसे दिन उसने खुदिये के पास वाली झीमी नहीं बरीदो बत्तर नीली झील बरीद ली। लोगों की अँखें कुंजी रह गई कि वह मेंता ने क्या किया। मेंता ने लोगों की फिरी झील पर ध्यान नहीं दिया। उसने झील बरीद कर लोगे पहला काम किया कि झील वाले मोटे के रास्ते पर उसने एक तब्ती टांग दी। निश्चय किया था - "यहूं लिखार करना मना है।" नीचे एक और पंक्ति के-दासकल झील का मालिक मेंता पड़ा।

लक्ष्मण रामचंद्र ने इस कंडहार में नीली झील को पारबती के अधिक महत्व प्रदान किया था। उनका वक्तन है: "मेंता की वास्तविक दृष्टि वह नीली झील ही है, जिसके दर्शायों में वह सुहिलों के स्मृति हुए रहते, जीवन और तारक का साधनकार करता है, यादे अपने प्याले में उसे वर्तमान नहीं पाता है। "नीली झील" एक सैंस्कृतिक कहानी है, जिसकी तिथिद्वारा कई-कई हजारों पर एक साथ खत्म है और अपने मूल में एक प्राकृतिक वह कहानी होते हुए भी वह प्रयास की श्राप के लिए स्थानिक वहाँ प्रतीत होती है। कंडहारी की वसुं में सत्याग्रह हो चली के हो, परन्तु लेख का विवेक-प्रति और वातावरण-प्रति इलाजा समकाल है कि वह नीली झील, पारबती, मेंता और तनावकाल के बुझो के साथ आगे राहुने सफल नहीं होती है और मे उसने समय के लिए उसी वातावरण में जी रहे है। "हिंदु मे ऐसी कहानियाँ बहुत धम है, जिनका दिया गया हर विस्तार इलाजा प्रति और साथ ही इलाजा तर्क भी हो।"
क्योंकि उनके द्वारे मध्य नहीं जीवन नहीं अभिलभ अनुभव करती हैं। अंत में महत्ता का यह प्रेम त्वचाक मानवीय कल्पना में परिवर्तित हो जाता है। "प्रिया की ऊर्जा रचनतें वसी इन पद्धतियों को देखकर है" पारंपरी की याद और विश्वास और नीलाम दिन उत्साह तीन अपने की बोली लगाता है बड़ुआ के राज वाली अमृत नहीं, दलदली नीली झील खरीद की हो।

उसकी आँखें के अभाव में होने दोनों के शिकारी की सोनी से आकर होकर गिर जातीं थीं पर उसे पारस्पर की याद विरास और फिर नीली झील का बड़ी दाना यह दिल्लिया है कि उसने इतने इसलिए वारीदा है कि कोई शिकारी सद्यलय, गंभीर देवा से आए देव हंतें, शराबों, तोनपतरी के जोड़ों में से किसी पक्षी को लीका न कर दे उसे यह पारस्पर की विना अनुकूल है। यहाँ उसकी पीढ़िया व्यापक मानवीय कल्पना का रूप धारण कर पक्षियों की पीढ़िया से अबेक हो जाती है। यह अभाव की पीढ़िया का व्यापक मानवीय कल्पना में परिवर्तित है।

इस्तीफे कहानी बहुत गहरे जाकर पास के मन को धूली है। यह कमेंट की बेहतरीन कहानियों में यह नहीं है। किन्तु इसका अन्त भी "राजा निर्बंधिता" के अन्त की तरह एक रोमान्ती आंदोलन का रंग दिखे हुए है। यह अन्त तब तक मानवीय कल्पना तो ज्ञात है किन्तु यथार्थ की भयानक स्थिति से कन्नी कांट कर निकल जाता है।

इस कहानी में एक पुस्तक की मानसिकता का विभिन्न स्तर तरह पर विवरण विकास गया है जो कि एक कहानी का प्रतीतिनिधित्व करता है। इस कहानी का नाम नहीं अब तक में मजबूत हर में अभाव होता है। उसके नाम शहरी सत्ताओं के प्रती आंदोलन पैदा हो जाता है। सत्ताओं का शहरी क्षेत्र उसे प्रभावित करता है। इस दृश्य प्रती नियंत्रण के प्रती उद्धरण मोटा उल्लम्ब होता है। यह परिवर्तित मानसिकता वस्तुत: परिवर्तनीय धिलंग के प्रभाव से ही उल्लम्ब हुई है। जो धीरे-धीरे हार्दिक क्रम में भी अपनी और आकर्षित कर रही है। इस प्रकार यह कहानी व्यक्तित्व पर जनवाद की विकास दिखाती है। यहाँ पर यह कहानी आमुकित का प्रबंध करती है।

---

"मेरी प्रेम कहानियाँ", "नीली झील" - पृ. 109.
वह कहानी "माँ का दरिया" लंबूद की अंतिम कहानी है। इत्यादि समानांतर कहानी की अंत्य प्रयोग हुआ है जिसका पूर्व उत्कृष्ट बाद में मल कर उनकी प्रतिष्ठा कहानी "राते" में मिलता है। इत्यादि केवल जीवन के अंत पर प्रयोग का वर्णन है कि किस प्रकार पुलित वहाँ आकर जीवन की तुषार व्यवस्था को अत्य-व्यस्त कर देती है।

व्याख्यातार यह है:— महाराणी विकटेन्द्रिया के शासन काल में इंग्लैंड ने आरंभिक उन्नति की थी। कई दौरों में इंग्लैंड ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। इत्यादि काल में वहाँ सिविल तथा लाइब्ररी की बढ़त उन्नति हुई थी। सन 1839 में लाइड कर्नल विनस्टन का वायसराय था। वह महाराणी का अत्यस्त-पात्र आदर्श था। सन 1911 में जार्ड वंड भारत आये थे। दिल्ली में एक दरबार हुआ था। लाइड कर्नल के राज्य में सीमा प्रदेशों पर कब्जाओं पिद्धोट हुए। तो कर्नल ने उन्हें दबाने का अधिकता किया था। लेकिन उसे इस काम में सफलता नहीं मिली थी। अंततः लाइड कर्नल ने नई वात की उतने कब्जाओं पिद्धोटियों को लटकोगे ते अपने वात में किया था।

उसके बाद लाइड हालिए आये। जनता में अंतोत्स बढ़ गया था। बंगला के ताथ से जल्दी पक्षात्मक किया था। चांदनी चौक ते एक दिन वायसराय की तपारी सूर रही थी। उस समय उन पर एक बम फेंका गया था और वायसराय बुरी तरह घायल हो गया था। सन 1916 में चेम्बरजोर्ड वायसराय बने। उसके बाद डी केबड संकट पात हुआ। पात डेंगे के बाद ही आरंभ तेजी से चला। जनता के इस आरंभ को बहुत पुराना ते हुकुला गया था। जलियां वाला कांड इस वाम का प्रणाम है। लाइड इदिन का अमल आया। लाइड डीजिस में नेहरु द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता का आख्यान दिया गया था। आज्ञाते का तंबूब फलता रहा। डेंगे का बन्दवार हुआ, पाकिस्तान बना और भारत भी आज्ञाद हुआ। तब भी इतिहास लिखा जाता रहा।

नाइटवे ने बताया था कि यह बस्ती बहुत तपान्न थी। इसे एक तापहु ने बताया था। इस बस्ती में काम-धरे फूंक पड़े हुए थे। धरती सोना उगली थी।
बहुत अच्छा तमाम था। लोग एक दूसरे पर किया गया करते थे। इस बस्ती में तस्मा नामक नौजवान तन्त्री नामक कुश्तिया बुजुर्ग वाला तथा दोनों की जाति अण्ड यह उन्हीं दिनों बस्ती में पुरिता चीफी बनने की बात हुई। आगरा जिला के हुक्कामों ने बस्ती में पुरिता की जब्तता नहीं की। बस्ती में कभी कोई दंगा, घोरे द अच्छा बारदात नहीं हुई थी। जिला अधिकारियों ने इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। और गांव में चीफी बन गई। गांव में पुरिता आ गई तो पुरिता का धब्बा शुरू हुआ। बस्ती में लोगों के दो दल बन गए थे। एक दल जो पुरिता के पवन थे और दूसरे विरोधी थे। पुरिता वाले चीफी की तनाववाह्यता कम थी। अपने परिवार का बंधा वे बस्ती के लिए पर ही बनारे थे। एक दिन पता चला कि पुरिता इंस्पेक्टर दौड़े रहे पर अपने बाली थे। इसलिए बस्ती में पुरिता चीफी की सफाई के लिए लोगों को काम कर कार्यात राखा। सबसे बड़ी बात के लिए पंजीकरण की गया था। किसी ने बाली जमाने में डंडा था। बस्ती में अपने लोगों की दादा की गई। सारा खरा महज ने पुरिता आया था। पुरिता वाले तस्मा से चिरे रहें थे। सरकारों के जते ही तस्मा को तरा राजी कटने के अपराध में पकड़ा गया। गांव में वैद जी के घर घोरी हुई। मंदिर के पास आठ लोग गांव में फिरता था।

बस्ती में तस्मा की गिरफ्तारी का आलोचना आया हुआ था। उस पर मुख्यमंत्री का प्रभाव था। फिर फिर उसमें पुरिता वालों के गहरी दोस्ती हो गई। उन्हीं दोस्ती का सर्वांगी रोग बस्ती वालों पर बढ़ा। यह गांव में घोरी। वस्ती में बदलाव होने लगी। पेड़ों में छुपी आम गांव-भांग मिलने लगी। देशी बमार की बोली और पुरिता वालों का कमीशन बंट गया। एक दिन लोगों ने जमाने में डंडे हटाते आत्महत्या कर ली। बस्ती में सन्नाटा लगा गया। तस्मा भी बारी में कुंद पहुंच वह तन्त्री की लाश खोदने का। आजबर बहुत कठिनता से तस्मा को पकड़ कर किनारे लाकर गया। वह बदना तो घरों तरफ अविचार ती स्थिति हो गई। तस्मा पुरुष में रहने का। वह भीतर नहीं सिर्फ उबलता रहता। एक दिन दोबान जी की लाश पड़ी भिली। तस्मा उसका बाद दिखाई नहीं दिया।
वह फरार हो गया था। दीवान जी की मृत्यु के बाद पुलिस ने बस्ती वालों पर जुल्म दाने शुरू किए। निदाँच लोगों को धौटा जाता। तस्मा की माँ को भी बहुत तंग किया गया। पूरी बस्ती में आतंक छा गया। धीरे-धीरे बस्ती को डाकुओं का झालका बरार दे दिया गया। बस बस्ती उजुड़ती गई। काम-करों चौपट हो गई। लोग दूसरे गांवों में को गए। तब तिलार-विलार छोड़ गया। बस्ती को बदनाम कर दिया गया था और बस्ती धीरे-धीरे उजुड़ गयी।

इस कहानी में स्वातंत्र्य-पूर्व भारत की जनता के मानकूलयों को पुष्टित कर स्वतंत्र भारत में व्याप्त फूडलायर का विवरण देकर मूल्यों का भरण विविधता किया गया है। मूल्यों के द्वारा की उत्तरदायी प्रगतिष्ठत व्यवस्था है, यही इस कहानी का प्रतिपाद है। इस कहानी को प्राप्तवन्ता सामाजिक यथार्थ के उद्देश्य से मिली है। कहानी का कथ्य सामाज्य होते हुए भी देश में घटित घटनाक्रम के समानांतर प्रसंस्कारवर्धक के कहानी में एक आर्कर्ण बना रहता है। इसमें देश के इतिहास को मदददाता रखते हुए कहानी के विकास और पुलिस की कार्यव्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है।
मेरी प्रिय कहानियाँ :-

इस तंगाह में आधुनिक युग व प्राचीन युग की परिवर्तित विचारधारा, नैतिक मूल्यों व विद्वानों का वर्णन किया गया है। ज्यादातर के बोलियां के प्रति ध्यान का स्तर भी उभरा है। महानगरीय जीवन के अंतर्गत की संस्कृति इस तंगाह की मुख्य विशेषता है।

1. राजा निरस्त्रिया
2. बोई इस दिन
3. गर्भियों के दिन
4. ब्यान
5. माँ का दरिया
6. नीली झील
7. नागमणि
8. तलाश
9. आत्मिक

राजा निरस्त्रिया :-

यह कहानी कलेक्टरों की इस दौर की सार्थिक प्रसिद्धि और वर्धित कहानी है। इस कहानी में आर्थिक विवाहाली द्वारा उत्पन्न दांपत्य संबंधों के तनाव, उन संबंधों का तिक्कना एवं आर्थिक मजबूतियों में अनुभु की निरस्त्रता का बहुत साफ़ विचार हुआ है।

यह कहानी लोग कथा ते बुनी गई है। इसका तारामंडल यह है --
इस कथा में पहली कहानी यह है कि मां बच्चों को तनाव से निकाल पकड़ रही थी। यह कहानी इस प्रकार है :-

यह राजा निरस्त्रिया था। उसके राज्य में बहुत सूर्खी थी। राजा की रानी बहुत सूर्खी थी। राजा भी सुखे ते महल में रहता था। यह बार राजा निरस्त्रि को गया। तत्काल दिन बीत गया। परंतु राजा नहीं लौटा। बहुत व्रतीक के बाद रानी मृत्यु के तार राजा की बीज में गई। रानी ने बहुत दुःख परंतु राजा
न मिला। अंततः यह निराश होकर महल में लौट आई। लौट कर रानी ने देखा कि राजा महल में भापा आ गया है। रानी की प्रतापता का पारामार्ग न रहा। लेकिन राजा को रानी का इतना तर्क मंदी के साथ बांटा यिस्काल्कुल भी अवैध नहीं लगा। राजा की इस प्रतिफिल्म को देखकर रानी ने राजा को समझाया कि जो राजा के प्रति अपने अवशेष हाम के कारण ही स्वयं को मंदी के साथ जाने से रोक न पाए। राजा-रानी यह दूसरे को बहुत आदर करते थे। उनकी अपनी तक कोई तंताल नहीं थी। इसीलिए यह राजा का दिया वह बाहर जाना।

राजा रोज तबते दबलने जाता था। एक दिन वह ऐसे ही महल के बाहर पहुंचा फिर तब पर बाहर लगाने वाली ज्यादातर ने भापा फूल लिया और कहने लगी कि हाय राम। आज राजा निरंकोटिया का मुख्य देख लिया, पता नहीं बांटा भी नतीजा होगा कि नहीं। यह तुम्हें राजा का मन पूरा ते भर गया। उसी क्षण यह महल को लौट आया। वह तरह पसन्द उतारकर बन को कला गया। रानी ने स्वयं देखा कि यह नर की रात उसकी मनोकामना पूरी होनी। जब उसे राजा के बोलने का पता चला वह बहुत हुँकार हुई। वह राजा को बोलने लगी। एक भित्रियारिन का भेष बनाकर वहां पहुंची, जहां राजा उहरे थे। उन्होंने राजा के साथ रात विलायत तथा तुम्हें होते ही वापस लौट आई। राजा घूम दूसरे देख को कला गया।

एक दिन बाद राजा बहुत सा धन क्या होगा गाड़ी में सादृश कर अपने राज्य को वापस लौटा, राजधानी के निकट पहुंचे। हर राजा की गाड़ी का पहिया पतल की गाड़ी में उसका गया। एक पंडित ने बताया कि "सांकेत" के दिन जन्मा बालक आगे अपनी तुपारी ताकर झुमे गए, तो पहिया निकल जायगा। वहीं दो बालक बेल रहे थे। उन्होंने यह सुना तो बूढ़ कर पहुँची और कहने लगे कि हमारी पैदात से Sकंट की ही है, पर तुपारी नहीं है था। राजा का मन ही। फिर अपने धन की रात यात्रा बताते आये गए थे। लेकिन गाड़ी में तब राजा को, आ गया । भीतर हुँकार तो रानी बुझी से बेड़ाल हो गई। राजा ने उन बालकों के बारे में घूम तो रानी ने बताया।
कि वे उसी के बेटे हैं। राजा ने इस बात पर बिकुल दिखाव नहीं किया।
रानी को इस बात ने दुखी किया।

रानी ने अपने कुल देवता का स्मरण किया। कुल देवता उसकी तपस्या
से प्रसन्न हो गए। उन्होंने अपनी शक्ति से रानी के दोनों बालकों को नक्सात
बिसरू में बदल दिया। रानी के सतनों में दुख मर आया। राजा की प्रमाण
मिल गया। उन्होंने रानी से माफी मांगी और युग्मों को स्वीकार किया। राजा
ने फिर ते काम काम संभाला। राज्य में अपने बेटे के नाम पर लिखे ज्ञापन ताकि
उसके राज्य मर में अलग उत्तराधिकारी की खबर पहुँच जाए।

माँ जब यह कहानी सुनती थी, तो बच्चे आत्मास बैठे कहानी बदन
होने पर पूरी चढ़ाते।

इस कहानी के साथ-साथ जगपति की कहानी भी यात्री रहती।

जगपति लेखा का बयान का दोल था। मैद्रिक की पट्टाई के बाद
जगपति कस्बे के एक बकोला का मुहाफर हो गया। उसकी पत्नी वंदा बड़ा बुनबुरता
थी। लेकिन वंदा के कोई सतना बैठा नहीं हुई। एक दिन जगपति अपने एक रिसर्टेने
के भाई द्वारा बम्बा मी गया। जब वह बाप आये वाला था तो उसके घर
डाका पड़ा। जगपति की भी गोरीया लड़ी। किसी ने यह खबर वंदा को पहुँचायी।
जब वंदा मनोरिंदो मानवी वहां पहुँची तो जगपति अपस्ताल में था। जगपति की
दाहत के कारण वंदा भी अपस्ताल में था। यह अपस्ताल कस्बे का खुमामा
सतनाम स्थात था। अपस्ताल की द्वाराधव बज्जिलिंदु कंघुउन्नार के बाग में थी।
वंदा ने जगपति को बताया कि वह कड़े बेकर दवारस/उपनगर कराने के लिए उसके
अपना ग्राहीर कंघुउन्नार को देवा। जगपति लडूरस होकर अपने पर वापस लौट
आया। विंसतन म बेलोरियार होने की बात बढ़ कर वह उदास हो जाता।
घर आने पर जगपति को पता का गया कि वंदा ने कड़े नहीं चले। तब भी जगपति
की साखर न हुआ कि वह वंदा के बूढ़े कि उसकी दवारस कड़ा से आई थी। विदे
सब यहाँ तक रहता तो शायद स्थिति के बिखाझी। जगपति बेलोरियार हो गया
था और तब उसे र्मना जो जरहती थी। वह लोकता पत्नी से कड़े मांग ले। और
बेकर जो वैसा मिले तो उससे कोई बाम बुझ करे। परंतु जब भी वंदा उसके साथने
आती तब वह बात करने की तिमाह न कर पाता। बज्जिलिंदु की बदनी भी उनके
बदन में ही हो गयी थी । बव्यनविंद चंद्र के वाले उसके पर आने-आने लगा । जगपति को यह पता था, फिर भी उसने कभी कुछ भी न पूछा । चंद्र ने एक दिन जगपति से बव्यनविंद की शिकायत की तो जगपति बोला कि वह आड़े भाल नहीं आने वाला आदमी है । धीरे-धीरे बव्यनविंद ने आर्थिक सहयोग देखा जगपति के लिए लक्ष्यों की टाल कुल्हा दी । जगपति का ध्यान जम गया । उसे पता चला कि चंद्र यहाँ बनने वाला है तो वह उदास होकर पड़ा रहा । उसका मन किसी भी काम में नहीं लगा । जगपति ने चंद्र कभी भी स्पष्ट बात-बीत न कर तक देखा । चंद्र ने अपने मायके जाने का निर्देश दिया । उसने जगपति से कहा कि उसने तो चंद्र को बेच ही दिया था । अब वह मायके जा रहे हैं ।

इस समय पर्यावरण जगपति को पता चला कि उसना पूरा हुआ है । पर वह अपने गांव के ही किसी मुख्यदेव नामक व्यक्ति से विवाह करना चाहती है, पर चंद्र हुआ बालक बाध्य है । वे चाहते हैं कि चंद्र गर जाए, तो रास्ता हुआ । फिर जो ईश्वर की फिराकारी वहीं होगा ।

जगपति ने यह बड़ा तुरन्त तौ वह परेशान हो गया कि उसने ही तो चंद्र की ऐसी नाराजीय स्थिति के लिए लिखा किया है । हुँँ ्दुँ, वर्षाताप व ग्लारण के कारण उसने अपनी लक्ष्यों की टाल बेच दाली तथा अक्षम खाकर आत्महत्या कर लीं ।

जगपति गरिये से पहले दो पत्र लिख कर छोड़ गए । एक चंद्र के नाम, जिसमें उसने पर्यावरण किया था और अपनी धार्मिक इच्छा लिखी कि वह बड़े बच्चे को लेकर वापस आ जाए । दूसरा पत्र उसने कानून के नाम लिखा था कि उसके किसी ने नहीं मारा । उसने समय के बारे से, उनकी स्थिति के बारे को लिखा था । उसने लिखा था कि उसकी लाश तब तक न जलाई जाए जब तक चंद्र नहीं को लेकर न आ जाए । और विश्वास को भर भी उसके बालक के हाथ से दिलवाई जाए ।

[2] बीड़ हुई निमित्तः :-

यह कहानी समूह लेखक के दिल्ली आने के बाद की कहानी है । इन कहानियों में महानगरीयों के परिवेश की तृप्ति, त्वचार्य, अनन्वित से भरी महानगरीय
उनका का अभिव्यक्ति है। वह कहानी महानायक अनन्यस्वरूप पर निकली गयी कहानी है।

यह इस संगठ की दूसरी कहानी है। इस कहानी का कथासूत्र यह है—इस कहानी का नामक वंदन को अपने कहने से इस शहर में आए हुए लोकों को दिखाया गया है। दिल्ली जैसे इसे शहर में वह लघुवाद आत्मवादा दूरदर्शिता है। लेकिन इसने बड़े शहर में उसे कोई भी आत्मवादी नहीं मिली। उसे लगता है वह एक दम अकेला है। इस अन्तर्विद्यार्क के कारण उसे अपना कस्बा याद आता है। वह तीसरा है कि यदि वहाँ वह गांव के तुलसी विनायक पर भी कहा जाए तो भी उसे वहाँ कोई न कोई परिचित मिल जाएगा। लेकिन वह शहर तो राजधानी है। तारी पैसे के मूल धनवाद को लेते रहते हैं। कोई भी कहीं नहीं लक्ष्य, किले के लिए भी नहीं।

वंदन को आता है जो तड़कों के फिनाकर पर व वरसताओं हैं जो भी वह किले के पर नहीं जा सकता। उसे लगता है कि घर बाकी भी उसे अपनाए घर नहीं हो लेना, क्योंकि उसका छोटा घर है और उसकी पत्नी के लिए पद्मावत की कोई स्वतंत्रवादी होगी। वह पिछली गांव में रहता है वहीं एक शैक्षाद है और उसके मैनीकियन पद्मावत वर्षों से काम कर रहा है, लेकिन उस गैरैज़ के मालिक को उस मैनीकियन पर विवाह नहीं है। वंदन को मानिक का यह व्यवहार बहुत झटकता है।

वंदन के पद्मावत में विवाह केवल रहता है, जिले वह अध तक देख भी नहीं पाता है। उसे होशा आने दरवाजे पर नमाजें टोपी देखी। उसके मन में दो ताल बाद भी, पदों के व्यक्ति को न पहचान पाने का दुःख है। जब तो, बैंक तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी उसे लोगों का व्यवहार बहुत वृद्धिमान है। वंदन को आते लोकों का वह गांव हो गए है और जीवन धनवाद कल्याण रहता है। यहाँ कोई भी रेसा कुत्ते को नहीं मिले लोगों के बीच रहता जाता है। कोई बुरी या दर्द नहीं है जो उसे इस शहर ने दिया हो। उस शहर में उसके मन में भी मिलने में गुन समय कल्याण रहता है। वे मिलते होते ही किसी भी हाथ जोलते हैं और किसी सूतक करते हैं।

इस शहर में रहकर उसे जीवन के वे वर्ष याद आते हैं, जब वह अलग नहीं था। उसे इन्द्रा का याद आता है। उसे वह समय याद आता है जब वह और इन्द्रा जीवन भर तारे का त्वचान्तर रहते थे। इन्द्रा उनकी प्रतिमा को
पढ़वान्तरों थे तथा उसकी पुराण को रचित था। इन्द्रा का चित्र बना और हो गया था किंतु वह तब भी उसका बहुत व्यापार करती थी। चित्रांक होने के बाद भी वह जानती है, पढ़वान्तरी है। इसलिए यह उस क्षेत्र में इन्द्रा ही उसकी परिभाषा है।

इसी अनुभव के से बचने के लिए वह इन्द्रा के घर जाती है। उसे वहां भी औपचारिकता की बूढ़ आती है। इन्द्रा भी वह भूल गई कि वह बैठी चार पीता है। इन्द्रा के लिए व्यवहार से वह बुझे हो जाता है किंतु बेरोजगार पर वह इन्द्रा के घर जाता है। उसके वारक तर्क की आँखों में वह अपनाया देता है तथा कथा बताते हैं। वह तर्क पूरी तात्पर्य कर उसका मन ठीक देता है। अंत में वह घर पहुँचता है। उसकी पत्नी उसने बांधे के लिए पूजती है। तब उसे लगता है कि कथा तो कथा ही है और वह जरूर उसे आता है। इसे भी नहीं देता और वह तीर्थ हुए में ही अपनी पत्नी को बिंबबोल कर जाता है। और पूजने लगता है कि क्या वह उसे पढ़वान्तरी है या नहीं।

कसबे से आता हुआ चन्द्र महानगर में आकर अपने की रंग और अन्य अनुभव करता है। वह कसबे का आदान-प्रदान बाजार, लंकार लेकर महानगर में चलता है। लोगों के रंग रंगकर की आया करता है तब यद्यपि अन्य अनुभव करता है। वह यद्यपि यहां रंग रंगकर निरंतर करता चलता है। हां, यद्यपि पढ़वाने के बिना भी एक व्यक्तिकृत पढ़वाने चाहता है। पढ़ाती अन्य है, समाज अन्य है, शासन अन्य है। तब इन्द्रांकुश बचता है कि चन्द्र के अर्थपत्र में तम्बो अपने ही है देखते हैं। वह पढ़ता सरासरी पढ़ाता है। कथा यहां भी हुई गया कर रही होगी, और पुकार का आदर्श उपर नमूना हुआ तब तक नहीं हुआ। आदर्श पवित्र मात्र के लक्ष्य नहीं रहा।

मातृत्व के व्यक्ति के अनुभव की माताओं, उनकी आरोपित कुमार की लक्ष्य और इस्तेमाल के लोगों की निरस्तगता का विचार महानगर का यथास्थिति है।
महानगर में व्याप्त अजनबीयन की महानगर का निवासी का अनुभव करता है, नया-नया गांव या बस्ते से आनेवाला अभिभावक। पुल्लंसाल की कांडनी है कि "बोई हुई दिसाई" सक मदतकुण्ड कहानी होने पर ब्लॉक बोई-तोई की कहानी है। महानगर की यात्रिन विज्ञानी को चाहिए होने के लिए यह कहानी खुद भी यात्रिन्न हो गयी है। लगता है कि लेखक के स्थान पर अस्थायित्र प्रयत्न हो गया है। जैसे- लेखक ने सोच लिया हो कि महानगर की यात्रिन और अजनबीयन पर कहानी निकली है, फिर उसने उससे फारसुंग तेजस विशे दोनों, उसके अनन्त-अलं पारदर्श तरीके हो, फिर उनें चन्द्र के माध्यम से जोड़ दिया हो। यह कहानी पूरा एक पीट नहीं मालूम पड़ती। और कहानी अपने अन्त में अजनबर नासीबी हो उठती है, जो कहानी की विवाहनियता और तहालता को आह्वान करती है।

[[3]] गर्मियों के दिन :-

इस कहानी में कबेस्बरही ने जीवन में क्षुद्र बूढ़ी आत्म प्रदर्शन की प्रतीति के बोझावन का सूक्ष्म विचार किया है।

इस कहानी में सब करके में भी कुछ अन्य डॉक्टर्स के ताजा बोई देखकर दुःखार पर ताजन बोई ही ही की दीखे हैं। वैसे जी स्वयं को स्वयंसे के कार कर नहीं रखना वाचते। वैक्ति की आर्थिक प्रवृत्ति अधिक नहीं है। बोई के विना प्रतिष्ठा भी तो नहीं है। जयः उनकी विना ख़बर विशे ही यह काम करता रहता के लिए चन्द्र को परछिया। ताजन बोई बनाने के लिए सब मरीज रंग दे माहा था। ताजन बोई की सब धाकिये वैक्ति ने स्वयं लिख दिया। वैक्ति का धुआन में मरीज अभिक नहीं आते। इसलिए वह ताजन आर्थिक के रजिस्टर में दे काम करते हैं। गर्मियों के दिनों में भी विवाहन के कारण यह काम करता जाता है। ताजन दी ताज वह मरीजों की भी प्रतीता करते हैं। वैसे ही बोई मरीज दिखने में बाल्कुल व्यक्ति दिखाई देता है। तो वे बूढ़ी ही लखुपान की बात करते हैं कि उन्हीं से बोई आगरा बनाया था, जब तक वह बोई नहीं आता, वे झील बोई ने काम करते रहते हैं। अपनी अवतार जताते
हुए वे बहते हैं कि इन तब बेकार के कामों में सिर खपाने की उनके पास कहां पुरस्त है। बड़ी मुश्किल है एक आदमी आता है उस तुरंत डॉक्टर सर्टिफिकेट की आवश्यकता है। वह उस व्यक्ति को देखकर खुश हो जाते हैं और इस काम के लिए चार लघु मांगते हैं। वह व्यक्ति दो लघु देने को तैयार है। वह उस आदमी के लिए अपनी व्यवस्था का नाटक करते हैं तथा उस आदमी को बताते हैं कि खुदा सर्टिफिकेट देने में कितना बरता है। बेकार चार लघु देने की बात पर ही अब रहते हैं। वह व्यक्ति ब्रह्मांड का आता है। तब बेकार मन की मन प्रयास करते रहते हैं। वह अपने मन को समझाते हैं कि वह व्यक्ति लौट कर फिर आसमा।

गर्विनों की दोषता की और गर्वी बढ़ती ही जा रही है। आत्मापास खुद आदर्श अथवा संबंध बनाए दोनों को खाना खाने व आराम करने की रहते के। परंतु वेदाथ उसी व्यक्ति की प्रतिवेद में दुःख दर खते रहते। वह रोज की तरह घर नहीं गए। आज दिन भर उनकी बाहिनी नहीं हुई। इसी वजह का आज घर नहीं जाना चाहते। आत्मापास दुःख दर में पूछा कि वेदाथ आज घर नहीं गए तो उन्होंने कहा कि तलाक काम कर रहे हैं। देर तक वह मार कर काम करते रहे, पर फिर उनके भीड़ लग गई। उनके पास ऐसे भी नहीं हैं। ऐसे खाना खाते वाते। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और पानी पीकर ही काम पर उत्तर गए।

व्यवस्था जीवन व्यवस्था को, निरक्षरता, खोजण तथा खुदे प्रयास की प्रश्नता से भर गया है। नये गृह शहरों में धीरे-धीरे कल्पना व गर्व के पहुँच कर वहां के जीवन में भी हलचल मिल रहे हैं। नये शहरी मूल्यों से कल्पना जीवन किस प्रारंभ आग्रह दरें रहता है। इस कहानी में इस कथा को ही लक्ष्य किया गया है। इस कथा पुराने तरीकों और नए तरीकों में उस तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

शहरों में विद्रोहों की भस्मार्त ने फिर भी केस्ट को नहीं छोड़ा है। डॉक्टर तब इसकी बात में आ गए हैं। शहरों में यह प्रश्नता गर्व के आ गई है। कल्पना में तालाबवालों लगाने के पीछे को अभिज्ञान है, वह नहीं समझा गया अभिलिखु उसके अर्थ लगाया गया है। "आकाश बढ़ाना।" बेकार तालाबवालों का महत्व क्यों
को समझाते हुए कहते हैं कि “बॉयर पॉस्टर विज्ञापन सिनेमावालों का भी काम नहीं करता। बड़े-बड़े शहरों में जाए, ‘सीदी’ का तेल बेचने वाले की दुकान पर साइनबोर्ड भिल जायेंगा। बाल-बच्चों के नाम तक के साइनबोर्ड हैं, नहीं तो नाम रख को जुलता जाये है।”

प्राचीन के हित मूल में समयानुसार अभिवादन बाले लोग अपने ही परमार्थ पहल कर बैठे हैं। वह प्रत्येक श्रेणी में पिछु रहे हैं। फिर भी वह अपने पुराने शान को बरकरार रखने की आफत को भिड़ा कर रहे हैं जबकि उनको जमाने के साथ धना वापस देते हैं। वोतली अन्य डॉक्टरों की निंदा करते हैं। अपनी पराजय को वह निंदा के माध्यम से व्यक्त करते हैं। वोतली के बड़ा मरीज नहीं आते, फिर भी वह दर तथा अपनी व्यस्तता की ही बात करते रहते हैं, लेकिन वास्तविकता हमे किसी विश्वासी नहीं है। अतः उनके पास एक भी मरीज नहीं आया। हर आने वाले व्यक्ति को वह बड़ी आशा से देखते हैं। हम जब वह मरीज नहीं होता तो निराश हो जाते हैं। अंततः वह निराशा में लौटते हैं कि “अब सकता है, कल यही आदर्शी योग्य है। इस एक घर में मिटी को लोग देख लें।”

बस वे अपने ही व्यक्ति का महत्व निंदा करते रहते हैं। “मैंने वोटली की दुकान दिन भर नहीं खुली रहती। वोटली घोड़े ही हैं भाई।”

जब एक व्यक्ति उन्हें बताता है कि सुबह ने बुधवार दिक्का भोजन किया है, तब वे कहते हैं - “ये तब जैव कार्य का ही तरीका है। मरीज में फिराया जाता है। तब तक जबकि दूरदूर जवाब नहीं आता है। बड़े शहरों के डॉक्टर हैं जो आपके को बदनाम दिखाते हैं। अंततः आपके लायक मरीज की आधी जान भी तुझे खुश दालती है।”

वोतली इन आदर्शी व्यक्तियों के बढ़त परेशान हैं। उन्हें प्रत्येक बात करने का जुलता है। उनका बैठना है कि अन्यवादी दवा तो बड़ी भी देना तरीका है। उनमें हस्तक्षेप और बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती है। वह दर में बढ़ता है।

आपूर्वक की तारीफ़ करते हैं— "आपूर्वक नब्ज़ देखना तो दूर चेतना देख के रोग बताते हैं।" एक स्थान पर कहते हैं— "डॉक्टरी तो तमाम बन गई है। वकील मुख्तार के लड़के डॉक्टर होने लगे। बुन और सन्तान के बात बताते हैं— हाथ में जल आता है। वैद्य का चेंटा नम की होता है।"

प्रतिवेद के पुष्पांक के साथ-साथ जो लोग नहीं चल सके हैं उनके व्यक्तित्व में इस तत्त्व की भरमार है। प्रतीक्षा के अभाव में अपनी प्रतीक्षा की सीमा करने के लिए वह परामित्र का आश्रय लेते हैं। वे अपना दुःख अलग-अलग पद्धतियों से व्यक्त करते हैं। क्योंकि यवथा को तीर्थे धेर पाने का साधन उनमें नहीं है। इसलिए वैधवी कम के भी, स्त, डॉक्टरों की सीमा करते हैं। इससे उन्हें सीधी अमल मिलती है। वह यवथा को भूलकर कल्पना में जीते हैं। कल्पना की है तो आम्ल प्रभाव है। कहानी में पिचुँ गई जीवन-पद्धतियों की निर्मतरता को उजागर करते हुए उनकी दयनी स्थिति को उभारा गया है।

बयान :-
इस कहानी की वर्ण "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में की जा पुकी है।

मात का दरिया :-
इस कहानी की वर्ण "माँ का दरिया" में की जा पुकी है।

नीली झील :-
इस कहानी की वर्ण भी "माँ का दरिया" में की जा पुकी है।

मामलए :-
इस कहानी की वर्ण "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में की जा पुकी है।

उगास :-
इस कहानी की वर्ण "केंठ कहानियाँ" में की जा पुकी है।

आतापित :-
इसकी वर्ण "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में की जा पुकी है।

कमलेश्वर : पुरात्तक - पृष्ठ-58.
कमलेश्वर : पुरात्तक - पृष्ठ-59.
चोई हुई दिखाईः

यह संगुंठ परिवर्तित मानवीय तंबकों की लेखना को अभिव्यक्ति देता है। प्राचीन की अनुभूति की पिच्छिल की गई है। नायककृत द घटनालीय जीवन का अवलोकन भविष्य मार्मिक स्थ में वर्णित हुआ है।

पहले अवलोकन कहानी

प्रेमिका
बोई हुई दिखाईः
जार्ज पूर्व की नाक
पीला सुलाब
दिलचस्प में एक मौत
की शिमला
सौंप
dो की हुई छिंदनगी
दुखद भरी दुनिया
परारा शहर

एक अवलोकन कहानीः

इस कहानी में "अवलोकन" है जो कुछ नहीं है। यहाँ घटनाधृत के रित्सिंग अन्य रोमांली प्रेम की आत्मावैज्ञानिक परिपरिपरिता दिखाई गई है। जिसमें वह कुंतली को उसके पति द्वारा निर्वाचित किया जाता है और उसे "सम्मान" सम्बोधन का वास्तव देकर शारीरिक ठहरने की मिलता करता है। इसलिए उसमें कुंतली के शरीर के पोर-पोर का अपनी खींचक ते देखने की अनुभूति है। इस प्रमाण के अस्तित्वात्मक अन्तरों के दहानी एक सामान्य रोमांली प्रेम-कहानी बनकर रह गई है।

इसका कथार कहता हैः - लेखक और घटनाधृत एक ही घर में रहते थे। उसके साथ वह घर में कुंतली नामक महिला रहती थी। वह बहुत परेशान थी। उसके पति उसके ठीक प्यारा नहीं करता था। पंडलाथ बेरोलुमगर था और सारा दिन कुंतली की गतिविधियों का ध्यान रखता था। वह कुंतली को लेकर भाग जाने की कल्पना करता रहता था। एक दिन कुंतली के घर में एक घटना घटी। पंडलाथ को कुंतली तथा
उसके पति की लहराई की आवाज़ें टूनाई देने लगी। चंद्रनाथ यह तब तुनकर बौखलाता जा रहा था। वह कूंटली के पति के लेने लगा था लेकिन लेकर ने समझा बुझा कर उसे रोक लिया। कूंटली तथा उसके पति का युद्ध बड़ा था जा रहा था। तब चंद्रनाथ तो कहते लगा कि यदि कूंटली के पति ने कूंटली को घर से निकाल दिया तो वह उसे अपने साथ रख लगा। कूंटली के पति ने तामाना केवल कर और उस की साड़ी बूंजकर उसे घर से बाहर निकाल दिया था। कूंटली का आया मंदर लंगा हो गया। तभी चंद्रनाथ ने अपनी कमीज उतारकर कूंटली को धाँसे के लिए दी। कूंटली वह कमीज नहीं धाँस रही थी। वह चंद्रनाथ को बहां ते हट जाने के लिए कह रही थी। चंद्रनाथ को कुछ नहीं सुना तो उसने अपना कुछ कहा, "मां खुश आपने बेटे की कलम! जूंक ले मां" उसे लंगा शायद यही रसिका रह गया है किसी वह अपनावर जाता कर उसका शरीर ज्ञान सकता है। तब उसने कूंटली को गठरी की तरह उठाकर दरवाजे के भीतर कर दिया। इस घटना के बाद वह बहुत ही उदास हो गया।

इस कहानी में दुसरे प्रधान लोग में नारी पर होने वाले अपराध का उपाध्येय भी उपस्थित हुआ है। कूंटली जब तक पति की गतिविधियों को कुर्सियां सलाह है तब तक वह उसी कुछ नहीं कहता पर जैसे ही वह हर्ष देने रोकने के प्रयत्न धाँसक होंकर अधिकारी की मांग करती है तो उसका पति उसे पीटता है तथा घर से निकाल देता है। यहां पर लक्षात्मक बात से नारी का विपरीतक हिजर करना हरर है वही इस कहानी का आत्मरिक्षण है।

[[3]]

लंगूर की इस दूसरी कहानी का कथातार यह है:— सुमिजी की बेटी कमला वीरेन्द्र से गृह करती थी। एक दिन कमला के भाई के होस्टल ने कमला के भाई को बता दिया कि वह वीरेन्द्र को गृह-योरी खत दिखायी है। कमला के भाई ने कमला को बहुत डांटा। उसके दिन कमला ने तीन पत्र लिखे। पहला पत्र अपने भाई को लिखा तथा तोंगड़ बाकर स्पष्टीकरण दिया कि वह किसी वीरेन्द्र को नहीं जानती। उसने यह प्रतिष्ठा भी की कि वह कुछ की ताल को आंधा न
आने देने। दूसरा पत्र उसने भाई के मित्र रतन भाई को लिखा दिया निम्न: उसके मित्र तीनों पत्र से उसकी घटनाओं की थी। उस पत्र में उसने घटना पर फिर उसकी राय पर रखी दिया था। उसने राय को अपने प्रेम का पात्र विश्वास दिया था लिखा कि उसके प्रेम का दीपक कभी न चूर्णा। तीनों पत्र लिख कर उसने अपने पत्र से रखे लिखा। मौका पात्र भाई का पत्र उसकी भूमिका पर रख दिया। जब रतन आया तो उसका पत्र उसे दे दिया। और तीसरा पत्र भेजने के लिए उसने अपने तबीयों को दशू भाई को लेकर घटनाओं का लावण दिया कर विशेष के घर भिक्षाने की दिया।

इस कहानी में नाभाविक बालक बालिकाओं के प्रेम संबंधों का चित्रण है। भाई के उड़न पर भी उसे कोई भय नहीं लगता। रतन उसके भाई से उसके प्रेम संबंध की धुरी करता है। कलास की लगता है कि रतन और उसका भाई जो उसे प्रेम करते हैं वहीं तमाज हैं और उसे अनुभव होता है कि तमाज प्रेम में लावण हैं। तब भी वह बिना किसी भय की परवाह किये दीर्घता को लिखता है और इस प्रकार उनका प्रेम संबंध बढ़ता ही चला जाता है। इस कहानी में मनुष्य के चरित्र के अंदर को दांवी दी गई है।

3\ बोहे हुई रिखार्डः

इस कहानी की चर्चा "भैरी प्रिय कहानियाँ" में हो पुकी है।

4\ जार्डन पक्ष की नाकः

इसकी चर्चा "हिंदा मुर्दे" संग्रह में हुई है।

5\ पीला गुलाबः

इस कहानी का नामकरण आनंद अपने पिता के एक मेजर मित्र के घर में रह कर पढ़ाई कर रहा है। उस परिवार के दंपति की दो बेटियाँ थी। बड़ी शुभा और छोटी प्रभा। शुभा का विवाह हो गुरु था परंतु वह पति से अलग अपने माता-पिता के पास ही रहती थी। उसके माता-पिता इस आस पर थे कि बड़ी शुभा अपने घर दाप्तर जाती। शुभा के कारण ही प्रभा का विवाह
वह था। शुभा देखती रहती थी कि प्रभा का दिखाया हो जाना चाहिए। बेटूर तालब, उनकी पत्नी, शुभा सब यहीं देखते थे कि प्रभा का दिखाया आनंद से हो जाए। इस संबंध की स्वीकृति करने के लिए मेजर तालब आनंद के पिता के पास गये थे। आनंद के पिता को यह संबंध मंजूर था। बच्चे घर में चल-चल हो गई थी। शुभा व उनकी मां के साथ प्रभा गई दिखाई देते थे। शुभा आनंद के घर आती हुई बच्चे लगी थी। आनंद के कमरे में रोजू बॉडी पीला गूलाब लगा देता था। वह यह जानना चाहता था कि वह कितनी पत्ता है पर उसे ठीक तरह से पता न कर सका। आनंद की बहू पीले रंग का गूलाब बहुत अच्छा लगता था। उनके पत्ता का रंग शुभा ने पहचान किया था और इसकीजिए वह रोजू उनके कमरे में पीला गुलाब लगा दिया करती थी। तबकि उन दिन शुभा की गृह दो गई। तब कुछ उदासी में बदल गया।

समय बीतने के साथ-साथ आनंद व प्रभा भी सामान्य हो गये थे। प्रभा ने आनंद की पत्ता पहचान कर घर में बूढ़ा तारे गुलाब लगाया। आनंद ने भी वह पीला गुलाब बोया था। उसे यह सेहत बना था कि कहीं माली ने उसका पीला गुलाब न तोड़ दिया हो। पीरों के बड़े होने तब गलियों के बिकने तक का समय उसने बहुत बैठने से बाद और जब गुलाब खिले तो वे तारे गुलाब पीले रंग के थे। इस कहानी में अत्यन्त दार्पण के साथ-साथ पुस्तक-संबंध की रोगांठितता को अभिव्यक्त किया गया है। पीला गुलाब समय का प्रतीक है।

इसी दिल्ली में एक मौत:-

इस कहानी में दिल्ली में हुई मौत के प्रकार महानगरीय जनता के तरह शक को पिटाने वाली एक अट्ठारह कहानी है। किंतु परिस्थितियों के परिवर्तन ते महानगर के वे ही लोग एक और मौत पर विचार संदेह से मान्यता हो उठते हैं। इसका चित्रण कमजोरजर्ति ने किया है।

इसका कथातार यह है:- दिल्ली में करोल बाग के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ दीवानवंद की सृष्टि हो गई थी। उनकी मदानाता निकाली थी। अलूल, मदानी, बालावंदी, सरदारी सब लेख के पुलो्तिह है। उनकी दिनवारा उनी गति से आरंभ हुई, फिर प्रकार अन्य दिनों में होती है। अलूल मदानी अपने कपड़े प्रेष करने के
लिए भूमि का चुकाई कर रहा है। तरदारबी के यहाँ नारे की तैयारी हो रही है। और वातावरण की बीमार रोज जी तथा आज भी देर से उठी है। इन सबको देखकर लेख लीजिए कि ये सभी भी शक्यता में नहीं जा रहे। उसे लगता है कि आया हुआ, नहीं तो उसे भी रोजी में तूफान-तूफान जाना पड़ता। लेकिन वह तो लेख का भृत ही था। तब लोग सजबन के शक्यता में भाग के ने ही जा रहे थे। शक्यता में वहाँ से हुए भी तब लोग अपनी जातियों में मस्त है। भिन्न वातावरणी शाम को फिर नजरिये लें। फिन्ने का कार्य कृपा बना रही है। वातावरणी मजान के सूत की तारीफ कर रहा है। लेख वेदांत से यह सबके बीच बहुत कोश हमला कर रहा है।

महानरायण संस्कृति में लोग रूप गृहरोग से इसके कोटे हुए हैं कि मौत के उदास वातावरण में भी रूप गृहरोग से जुड़ नहीं पाते। शक्यता में शामिल होना एक अपवाद रिक्वेट कर रहा है। भावना वाले को उनसे मरने के साथ ही भगा दिया जाता है। संज्ञों के बीच यह विचारम ता भाव पैदा हुआ। वह पहले ग्यारों द भर्तियों में रहनेवाली जनसंख्या में नहीं था। लोग संज्ञान भी गए हैं। यही लोकार्पण ही यहाँ पर आधुनिकता के सूत्र के रूप में उभरी है।

प्रकाश की भिकला :-

इस लोगों को इस तारीख कहाँ में लेखक ने नारी-जीवन के उपाधि का अंकन किया गया है। इस कहानी की वाल महिला पाँघ माज में नारी की विभिन्न रितियों का अंकन करती है। वह अमान बाप की नहीं थी। वह बहुत शालीन शुद्वता है। वह घर के डालात समानता है। उसके लोकी है कि पद्मार्क समाप्त करने के बाद वह अपने पिता की तहायत के लिए पूरी करता है। उसके पिता लोकी है कि पद्मार्क पूरी करने के बाद वह बेटी की शादी करेगा।

इस कहानी की दूसरी युवती है इंती। उसके पिता की मुल्क है गई थी। घर की तारी दिखाया रहती है। इंती की मां रहने रह्ती थी। इंती की आय का भी कोई साथ न था। अत: उसे विवाह होकर माँ के केवल लेने पड़े। फिर धीरे-धीरे घर के छोटे-बड़े बच्चे भी बढ़ गए। इस
कारण बलवंतराय से उसके जान पता मान हुई थी लेकिन उनसे कभी भी बलवंतराय को इतनी यह नहीं दी कि वह फालतू बात कर सके। एक दिन घर में खेलने के लिए भुजा ने यह ली तो उसी बलवंतराय के आगे उसे बीस सख्त के लिए दात पतारना पड़ा।

इस कहानी का लीसरा पात्र है लक्ष्य। लक्ष्य एक खेल में रहती है।
उसके पास कोई कार नहीं है, पर वह होमस बार या टेक्सी से ही आती जाती है। वह बड़े होटल में रिसेप्शनिस्ट है। उसके आस-पास रहने वाले लोग उनके बारे में बहुत तारी बताते करते हैं तथा वह की तिमाही से देखते हैं। लक्ष्य का घर सुनिया संपन्न है। घर में किसी प्रकार की कभी नहीं है। लेकिन उसका परिवार कहीं चोरों की तरफ रहता है। उसके परिवार के लोग आस-पास के लोगों के साथ नहीं खिलाड़ी-खुलते। एक दिन वह बहुत रात गए एक व्यक्ति के साथ कर मैं बैठ कर घर लज्जत है। वह उस व्यक्ति की शेष अपने घर आती है तथा उसके आगुने करती है कि वह उससे बिदाई कर ले। यह प्रस्ताव सुनकर वह व्यक्ति साफ बैठकर रह देता है।

दौरा पात्र है तुनीता। तुनीता अपनी एक नौकरानी के साथ रहती है। वह नई है। उसे अपनी नौकरी दौरान की लगती है। उसके पास अपने बीते हुए जीवन की स्मृतियाँ हैं जो उसके स्लाब में लगी हैं। उसे अपना आखरी बहुत खत्म है। वह किसी से बड़ा बहुत बात करती है। अपना दिल लगाए रहने के लिए वह हुंदा बात नेतिना है या कभी खिलाड़ी ने। वह बार उसके नौकरानी को बताया कि दोबहरोटी बाला संगमा आदमी तुनीता को छोड़ आती लगा हुआ करता है।

"एक बी प्रिंस" कहानी शिल्प-स्तर पर एक विनियम कहानी है जिसमें यह कहा जाता है कि यह कहानी बूढ़ी गई है। पहला मकान भिलाई का घर, दूसरा मकान-भुंटी का घर, तीसरा मकान-लक्ष्य का घर और दौरा मकान-तुनीता का घर। इन चार मकानों में रहने वाली लड़कियों को संघर्षकारी जिद्दियों का घिनया करता हुआ देख कर कहानी के अन्त में यह बताता है कि इस प्रकार
इस लड़की की तरह क्या रहेंगे लड़कियाँ भिन्नता के संबंध में जुड़ सकेंगे हैं। इस कथा-कंद का अंत लगभग एक पैसे शब्दों और वाक्यों के किया गया है जो कहानी का शिख में एक नूतन प्रयोग है।

यह कहानी आधुनिक समाज के विभिन्न कार्यों की नारियों के मीनक विकल्पितवाद व शासंदायों से पूर्ण है। बिंबला, बुंदित, सुनीता व लक्ष्मण सभी अव-अवर रिवाजियों में जो रही है। इस कथा में धार विभिन्न रिवाजियों में एक बात संबंध समाज रही है और वह है पुरुषों का नारायण के प्रति गलत दृष्टिकोण। वांछितवाद की पुरुष विचित्र विश्वासों ते देखे हैं तथा इसे संबंध बढ़ाना चाहते हैं। इस प्रकार इस कहानी में पुरुषों की गंदी मानसिकता का प्रचलन हुआ है।

आज की पुरुष-पुरुषाण समाज में नारी की रिवाजत्र विभिन्न दृष्टिकोण है, यही इस कहानी का प्रतिकार है।

838 तौर पर:

यह कहानी भी एक प्रेम कहानी है। इस कहानी में दो पात्र है- आलंकार और इंधन। आलंकार किंवा डाक बंगले में लगा था। रात को चौकीदार आया और उसने मोबाइली जला दी थी। तथा आलंकार को सांपों के प्रति संघर्ष कर दिया था। आलंकार ने सांप के पुत्र से खड़े के तभी दरवाजे बंद करवा लिए थे।

आलंकार मन में सांप का भय झलक दरक टाटा तरत बैठ गया था कि कई केला न हो। कि जब इंधन आए जपर उसे आलंकार की लाग देखने को मिले। उस लोगता रहा कि जब इंधन आए जपर उसे बहुत प्यार करेगा। उसे तलालों में नींद नहीं आ रही थी। रात को उसे बहुत कड़ी ने नींद आई। सुबह उठा तो उसका मन बहुत झूठा था क्योंकि इंधन आने वाली थी। इंधन आ गई थी। आलंकार ने उसे बहुत घृणा। वह उसके तारी पहाड़ों पर गया। और इंधन ने घृणा और दरवाजे के पास उसके साथ बैठा रहा। इंधन के साथ में उसने किंवा कपनाल की थी। उस तब पूरी हो गई। लेकिन तारी की दखल उसके दिलों दिमाग पर बहुत बुरी तरह देखा हो गई थी। उसे अचानक कर उसे तारा का फिटा मिला। यह दमरा गया था। इंधन के साथ वह जल्दी-जल्दी डाक बंगले तक पहुंचा। आते ही वह बिस्तर पर बैठ गया। उसने इंधन को बताया कि उसे तारा ने अपनी पीठ
विद्वान्। ईश्वर ने देखा कि उसके बालों ने देशर पीन आनंद के कभी तुम्हारा हुआ था। इत्यादि में यह के मनोविज्ञान को प्रदर्शित किया गया है।

| 314 | एक तक हुई दिनांकी |

इत्यादि में एक ऐसे घटना का रिकॉर्ड है जो देशी घड़ियाँ की ही चिदंबरम स्माल्क माल के समान पानी देती है। वह पुरुम में जब यह फैला जाता है, तब वह उन घड़ियाँ के बिन दिखार तिस्ता कर देता है जिन घड़ियाँ देती हैं। इत्यादि देशी में तामाम भारतीय की स्माल्क माल के पृथ्वी रूप की धृति पर कटाक्ष फिर गया है।

इत्यादि का विकास यह है:— लेखक को अपने शहर का दुराना परिवर्तन । यह नई बाल्क के बाद मिला। वह लेखक को अपने घर ले गया। रात में लेखक को उतने बताया कि वह छोड़ दी है। लेखक से रह नहीं गया। और उसने कल्की की पत्ती के बारे में पूरी दिल्लिया।

इसलिए है कि उसकी पत्ती की मृत्त दी हुई है। उसने बताया कि उसका लग बना। वह उसकी मृत्त है। दीवार पर छोड़ दी है। उसने बताया कि वह छोड़ दी तब तक ही रही है। उसने दिखाया कि उसने बताया कि वह छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है। उसने बताया कि छोड़ दी है।

कुछ दिनों का बाद लेखक के आग्रह के लोगों से नई क्रममाती पहनी हुई थी। उसका बताया था कि वे पहनाया स्माल्क का माल है। वह नई पत्ती के एक कुरान्दार ने उसके साथ में बदल ले। वे पहनाया धीरे-धीरे पहने। लेकिन वे न्यूज़ रहे। अब तो लेखक की दिनांकी है। खाना था कि वे पहनाया उसके हाथ में बदल ले। अब तो लेखक की दिनांकी है। खाना था कि वे पहनाया उसके हाथ में बदल ले। अब तो लेखक की दिनांकी है।
एक दिन एक सिपाही लेखक के पास पहुंचा। उसने लेखक को बताया कि उसने भाग्य से भारत में एक बड़ी खुशी अनुभव की थी। लेखक उसे बधिरा नहीं करते थे और उसने उसकी खुशी में दिलचस्पी दिखाई दी।

लेखक उसने कहा कि उसने एक बड़ी खुशी अनुभव की थी, जब उसने एक सीधी बात सीधे उसके आगे कह दी।

हालाँकि, जो कहना चाहिए, तो उसकी खुशी में दिलचस्पी दिखाई दी। लेखक उसने कहा कि उसने एक सीधी बात कह दी।

इस वक्ताव्रत में महानगरीय परिसर में जीवन वित्त रहे हैं तथा सामाजिक कार्य का ज्योति दिखाया गया है। याद की की यह गति-विधि कहना बेहद रहा तब भी प्रभाव की सृष्टि का दृष्टि ही रहता है।

अधिकांश के दैर्घ्य में कहने के लिए साहित्य का दिशा ही रहता है। इन साधनों के अभाव में ही जीवन की सृष्टि श्रद्धालुता पत्यारा की सृष्टि हो जाती है। उसकी सृष्टि के बाद जीवन की विभि अभाव में ही जीवन की सृष्टि ही बनाता है। चीजों पर वही हुई भी उसी तरह की प्रतीत है।

महानगरीय जीवन की भीड़-भाड़ तथा अवकाश में असल होता है तब उसका आलापन गहरा हो जाता है। अपने अभाव को पूर्ण करने के लिए जीवन की कास्ट में एक बड़ा पकड़ कर दिखाया बेहतर होता है तथा उसकी भारत की चीजों पर फिसल भी छांटा होता है।

इस प्रकार यह झांकी जीवन के आवश्यकताओं के अभाव में प्रभाव की सृष्टि के बाद पैदा हुए अलापन की भावना का मार्गित चित्र अंकित करती है। पूरा व्यक्ति की अवस्था भी इस कहानी में सामाजिक चित्र हुई है।
वह बहनी कलेक्टर की "बोई दुधा दिखाएँ" में सुझावित एक और समस्या बहनी है जिसमें उन्होंने मध्यप्रदेश अभियांत्रिकी अभियांत्रिकी के विषय के कदम से आगे जाने के लिए विधिमय नैसर्गिक रूप से ठहराए।

इस बहनी का व्याख्यान है:- विहारी बाबू किसी कंपनी में नियुक्त है। उनके अन्दर ईंधनियार उन्हें बहुत काम में लेते हैं। विहारी बाबू इन्हें रखते हैं कि उनके अन्दर विषयों को बिना सुविधाओं धारण करते हैं। बिहारी बाबू चाहते हैं कि उनका वेतन ग्राहक भाई की खुद घर-लिखकर ईंधनियार वापस ताकि उनके पर के सभी कदम साफ़ हो जाए। बिहारी बाबू के भी गर तौर पर आते हैं तो दिमू को पत्राद खर्च करने के लिए अपने पास बुराए हैं, लेकिन दिमू तो बचत है कि वह अपने पिता की इच्छा को नहीं समझ पाता। स्त्री का आकार बसता हुआ तरफ पढ़ देता है। वह जेल रहता है या फिर दिना करता रहता है। रोजक शाह को पढ़ाई करने के लिए उसे अपने पिता से मार खानी पड़ती है। दिपू को मार पड़ते देखकर विहारी बाबू की भाई-बहन भी सहम जाते हैं। परंतु वह भी कुह बोल नहीं पाते। दिपू इतना सहम जाता है कि वह रात में लोग हुए भी पढ़ाई पढ़ता है तथा रोने का वर्तमान है।

"दुनिया की मार है ऐसी हुआ एक बाप और बाप की मार से कांपता हुआ बेटा", निम्न मध्यप्रदेश की आंवालियों की दुनिया, घुटने एवं नंगरूल बीजिनी को लायक करते हैं। अपने की बहन की बचने की स्वतंत्र और भुलालाट और अपने के दिमू की बहुत बढ़ी आदर देखने की आवश्यकता में उसकी खुद बुराई ये तब चीजें बहनी के माध्यम में समायोजक जीवन के सन्तोष के दलने के प्रयोजन उपक्रम करते है। विहारी अपने जीवन में हारा लगाने की बात इतनी तोहत है कि उसकी पतली की फटी ताज़ी की जांद नई ठाँड़ी आ जाते, जाएँ तिर पर आ जाने पर बच्चों की राजाई का अचान दूर किया जा जाते। मार आकर नींद में भी अठारह बजे, एक नींद अठारह, रत्ने........." गिनतियाँ, अबराम के हुकूक में लेटकर रहा नाताले के जाता और फिर न्यारी के झुके पहाड़कर रंगे के झील, काँडी, पौलक के तिनका झूल जाता दिपू मार-बाप के कार भिंतिय है। दिमू आबादों में जीता हुआ यह "अभियांत्रिकी नन बन जाने वाले" "अभियांत्रिकी" के तात्कालिक भिंतिय मिला कर नहीं पले सकता है। इतनी दिलिम दिपू की अपने नम्बर ने लेते देख विहारी बाबू
को लगता है कि उनकी दुखभारी दुनिया वहीं ठहर कर रह गई हो। इस प्राचर यह कहानी समाप्त की बायों को बढ़ी खुबी तो सामने लाती हुई निन्म मध्यकर्म वरिष्ठ की सबसे नित्य को पूछत जरूरी है।

प्राचर शहर :-

यह इस लंघ प्राचर की अंतिम कहानी है। इतना कथासार यह है :-

तुबकीर ने अपना जीवन अपने पिता के साथ करते में ही खिलाया था।
उसकी माँ का देखा करपन में ही हो गया था। तुबकीर अब नौचरी करने शहर में आ गया था, लेकिन उसे अपना अध्यात्म शहर बहुत याद आता रहता था।
त्यौहार आदि पर तो तुबकीर बहुत ही अकेलापन महसूस करता था। होली के दिन जब वह अकेलापन महसूस कर रहा था तब उसे पहुँच लाल वहले की घडना याद आ गई थी। उसका बाप निंदी लड़की को भगा लाता था। प्रधान ने उसका मकान ढेर रखा था। नींदिष्ट की ने उसकी वस्त्रान नहीं थी। जब तब वेस्टना रहता तुबकीर का जीवन मुड़ा हो गया था। उसका बाप मुझदमा जीत गया था और उसने उस लड़की के खिलाफ कर लिया था।

तब ते तुबकीर के लिए पर धर निराम हो गया था। वह अपने घर आ गया था। त्यौहार पर तुबकीर को घर का अवधार अनुभव होता है।
उसकी तौलती माँ की मृत्यु हो जाने पर वह यह घर नहीं गया था। तौलती माँ की मृत्यु हो जाने पर उसने अपना अध्यात्म पहुँच था। उसके तौर पर उसे जीते जीता था। वह घर के तुब-दुख में जान आता था, आदमी के लिए जान देता था।
तुबकीर अपने बाप का अकेलापन समझता था। उसने अपने बाप को अपने पास आने का आग्रह किया था, लेकिन उसके पिताने कहा गया था। उसने अपने बाप को अपने पास आने का आग्रह किया था। फिर उसने बाप को प्रस्तुत कहा था, प्रस्तुत कहा था कि प्रतिमास कुछ समय बिता दिया जा गया। तब ते वह प्रतिमास कुछ समय बिता दिया जाना करता था। एक दिन नींदिष्ट की का पत्र प्राप्त हुआ था। उसके लिए था कि अपनी बेटी के लिए उसके पिता की तो। उसके लिए उसके पिता की तो। उसके लिए उसके पिता की तो। उसके लिए उसके पिता की तो।
बोधने जाना पड़ा। उसके बापू लौट आप थे। वह नए केदार ताले के कर आया था। उसने बताया कि वह केदार दार गया था। सुबीर की लगा कि उसके पिता ने उसका भी अपमान करवाया है। दोनों बाप-बेटों की बहुत लड़ाई हुई थी। दोनों ने खुद के का मुंड न देखा की फसम बाई थी। उसके बाप ने स्पष्ट होने से इंकार कर दिया था और उसने भेजने से इंकार कर दिया था।

अबानक ये बातें बुला कर भी उसका मन अपने पिता तथा अपने घर को याद करने लगा और वह अपने बाप से मिलने का पहला ही संकाल के लिए दान दिया। होली का त्यौहार था। सुबीर जब गांव पहुंचा तो उसने देखा कि घर पर ताला लगा हुआ था। दीपकी ने कहा कि दो साल दिन से उसका पिता दिखाई नहीं दिया। सुबीर एक दिन दीपकी जी के घर रहा। जब वह वापस आया लगा लगा देखा। उसका बाप भीतर था। उसने सुबीर को बताया कि उसकी भी यह शहर पराया लगता है। वह उसका दिल नहीं लगा इतना वह जला गया था। तुलसी ने ध्वस्तः दिल्ली कने का आग्रह किया था लेकिन उसके पिता ने लगाता था कि परायापन कहीं भी कल्याण नहीं होता, हर जाह ही होता है।

सुबीर ने भी अनुमान किया था कि जिल शहर के लिए वह तरलता रहा है, जहाँ उसके बाप के लिए पराया ही फुका था।

"बोई हुई दिखाईं" संगीत की अंतिम कहानी "पराया शहर" भी एक अच्छी कहानी है। इस कहानी का स्वर है - अनुक्रम के जीवन में भर गया अनन्यपूर्ण, केशवपन्न और परायापन। जो धर्म को सप्तदर्श रोकने के दो सूत्र हैं: "बुध दिल्ली का महानगरीय जीवन और बुधवार दुर्गवादन का अपना छोटा-सा शहर। इसे दुर्गवादन का पूर्व सुबीर पन्द्रह करों से दिल्ली में रह रहा है, कितने अभी भी उसे दिल्ली में लाने नहीं पाया है। पन्द्रह ताल हो गए इस दिल्ली में रहे रहे पर मन में कहीं यह बात नहीं उठती कि यह दिल्ली उसकी है।"

इस कहानी का श्रीनाथजी जेरलाए दी रहा है। जेरलाए आयुर्विको की महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। नगरीयता तथा महानगरीय बौद्ध कहीं कहीं पर कहानी में उभरा है।

"बोई हुई दिखाईं", "पराया शहर" - पृष्ठ-134.
राजा निरबंधिता :-

आर्थिक स्थितियों के दबाव के कारण उत्पन्न बेरोज़गारी की स्थिति निरचनावादी उत्पन्न करती है। प्रेम का आदर्श त्या की पिथानी हुआ है।

विकासन की पीठा की मासिक त्या में पिथानी की गई है।

1) देवा की मां
2) पानी की तरफीर
3) धूल उड़ जाती है
4) लुब्ध का सपना
5) मुरदों की दुनिया
6) आत्मा की आवाज़
7) राजा निरबंधिता

8) देवा की माँ :-

यह इत संग्रह की पहली कहानी है। इसका कथातार है :-

देवा के पिता एडवर्ड मास्टर थे। गांव से बाहर ही रहते थे। उन्होंने दूसरा पधार कर लिया था। उनके बच्चे तथा पत्नी शहर में ही रहते थे। पाँच साल पहले वह उनकी मां से मिलने आए थे। देवा की माँ ने देवा को पेट काट-काट कर पढ़ाया था। पद्धति पूरी होने पर भी उसे लौकिकी नहीं मिली थी। उनकी माँ तूत का तरफ, उसे रेंजा कर दरियां बनाती और दरियां बेकर घर से गुज़ारा करती। देवा जीवन के लिए भक्ता रहता था। आखिर हारकर उसने अखबार कर पढ़ना शुरू कर दिया। देवा शायद धीरे-धीरे कृमिशारियों में सामना हो गया था। एक दिन उसे पुलिस का आरोप लगा गया। देवा इतसार करती रहीं पर वह नहीं लौटा। लौटा भी नहीं, उसके तो सब साल की कुल हुई थी। देवा जीवन के ही उनकी मां को बताया था कि यदि दोस्तों स्मारकों की ज्ञानत हो जाए तो वह फुट लगता है। देवा की मां ने उसके पिता को पत्र लिखा। जो आदमी पत्र लेकर गया था। उससे ने बताया था कि उन्होंने कहा कि वो उनकी ज्ञानत नहीं कराये। देवा की मां ने सब कुछ स्वीकार किया। तब उनसे गांव में लिंडियर भवना छोड़ दिया। लिंडियर की विद्वान सुलझाने के लिए में डाल अपना सुहाग उसे तार दिया।
वेयारी गुप्ताप दिन काद्वरी रही। यह सत्ता बाद देवा वापस आ गया। बाद में सब स्वाभाविक हो गया। देवा ने बताया कि उसके पिता बीमार है।

अस्पताल में है और एक महिला के कीमार है। उसने पूछा कि वह कह जाकर देवा आए। मां युष्म रही कुछ न बोली। देवा भी तो गया। मां भी तो गई। रात को देवा ने देखा कि मां अपने बिस्तर घर ही नहीं थी। देवा उठकर बाहर आया तो मां तुलसी के आगे निमंत्रण की। उसकी मांग में सिद्धूर चक्र रहा था।

देवा गुप्ताप ले गया। तुलसी उठा कि उसने मां ते पूछा कि क्या वह लोग बापु को देखने वार्ता। मां ने उत्तर दिया कि वह नहीं बोली। देवा ने पिक पूछा कि में चला जाए। मां ने दुःखा के उत्तर दिया, "नहीं।"

इस कहानी में पिता का दूसरा विवाद कर लेना ही देवा के बेरोजगार होने का कारण है। नारी के प्रति अपनाया गया दूरा व्यवहार भी इसमें चिह्नित है और नारी मांगों त्याग की मूर्ति है, जो गुप्ताप सहायता है लेकिन जब अन्य ही तंतन के द्वारा उसकी प्रभावना को उसके पति के असीमित कर दिया, तो उसकी आत्मज्योति भी समय को गई। कहीं कहीं क्या अनावरण नहीं रहा। उसने स्वर्ण को बांट दिया। गुप्तुर कुछ को तैयारा झरी का प्रतीक है। लेकिन उसके विस्तार देखने वाला वह वह सुन मांग भर लेती है, उसकी स्वाभाविक कामना के लिए। लेकिन उस पुत्ता द्वारा दिया गया तिरस्कार वह अंती कुछ सही और बेरोजगार होना तथा झरी का प्रतीक किया गया अन्याय भी उसे वाद था। तब न स्वर्ण अपने पति को देखने गई और न देवा को ही जाने दिया। इसमें नारी का परमारणात्मक स्वभाव भी अभिव्यक्त हुआ है।

पति-पत्रीय नारी का और अपनी अपका तथा प्रति जाग्र नारी का विषयिक स्वभाव भी अभिव्यक्त हुआ है। परिवारीक और दांतक-संबंधों का विधान भी यहा मूर्त है, जो आधुनिकता की देन है।

देवा आज के युवा कर्ता का प्रतीतिनिधित्व करता है। उसकी मां गरीब है और देवा उसकी एक मात्र तंतन है। देवा को पढ़ाने के लिए उसे बहुत शारीरिक श्रम करना पड़ता है लेकिन देवा भी युक्त नहीं कर पाता। आज का युवक बेरोजगारी के कारण इसी विवाह में विभिन्न बारें शामिल हो जाती हैं। वह तारा दिन घर से बाहर रहता है। मां ने नहीं कही जाता है कि यह मात्र जी के पात गया था और एक दिन जब उसे कुछ हो जाती है तो उसकी मां को पता चलता है कि वह व्रतिकारी हो गया है।
इस कहानी की लेखिना नारी के परम्परागत नारीस्त तथा उसके विद्वानगण लघु को पितृव्ययोगी तथा पितृगण तेज किया है। रागान्तक लघुगण के अभाव में परिचारिक विवरण है - देवा की माँ स्वर्ग कहाँ है, "असल वात यह नहीं है कि इसे उससे धूल-स्वीकार करके नहीं मानती हो।" तत्परता में रहते घर की भीड़-भाड़ और यह शारीर में कभी अपने पति के बात करने की तत्परता में उसे नहीं देख सकता। उसने यह सुने जाना ही नहीं और उनके ने जो कर भी वह तो भी ही गए।"[1] इस वक्त जहाँ वह तपस्त होता है कि देवा की माँ जी अपने पति के बारे में बाचक के फूलों के लिए स्वर्ग की प्रशंसा करता है। इसी कारण अच्छे भी उसके माता में प्रसन्न होकर यह स्वर्ग होता है। वह माता अमृत का गर्भ भरता है। लेकिन जब देवा जी के पति जाने की घटना घटती है तब वह कहता है कि भगवान को लंबित में रहते हुए देवा की घमनता के लिए तीव्र लिखकर "भिन्न भिन्न देखै पति का गोद लो। माता जी का अपना निर्देश नहीं देखै।" जिस घटना को देखने वाले देखै पति का गोद लो। माता जी का अपना निर्देश नहीं देखै।"[2]

वह सोचता है कि वह भिन्न भिन्न है कि वह अचूक-अचूक बालीरों पर निस्वार्थता करती थी। मानो सत्य उसके सामने स्वभाव हो गया था। "वह आत तब किन परछाओं पर निस्वार्थता करती आयी। देवा के पिता जी के पास बीता। पर वह भिन्न भिन्न प्राणनी की। भिन्न भिन्न घोर देखा बालीरों वह देखा आ रहे हैं। भिन्न भिन्न तभी से रागान्तक विज्ञान की तत्परता गया था। और भिन्न भिन्न युद्धुत्तम तक उसके नारीस्त और पत्नीत्व को खुश बना गया था। इसके लिए कि वह कुछ और न बालीरों तक।" वह भिन्न थी। जो देखी थी। वह भिन्न तरह संस्कृती विशेषता और अधूरी रह क्रमशः पति के आकारी रहन की गरीब में अपने ही दुःखार्द दर्शन रहा। वह नीचे देख बढ़ाने का स्वर्ग न बनाने पाये। बालीरों देखने पर तुम्हारी ही अलस पड़ा। और इस तरह में उसकी लज्जा को भिन्न भिन्न धूलकी देख गए थे।"[3]

यहाँ नारी के मन की पीड़ा उभर कर आई है। वह अपनी लज्जा, अस्मिता और मान्यता पर भिन्न परम्परा की घोट सत्य नहीं कर सकती। अक्लापन

तो शयन आधुनिकता की विरासत है। देवा की माँ भी यह अवलोकन भोग रही है। "ढही की तुझ्यां सत्ता बदलनी जाती, पर ये दुःख से धरा की घड़ियां नियंत्र
अधिग खड़ी थी, अवलोकन के पल उभरत हो गए थे, जबिनें ढही की तूझ्यां नहीं
हटा पायीं..... नहीं हटा पायीं।"  ²²

"देवा की मां" मां की पीढ़ा और दंन्द का अंकन है किन्तु यह पीढ़ा और दंन्द पूरे पारिवारिक परिवेश के तनाव के पैदा होता है। यह कहानी एक
पारिवारिक वातावरण के बीच देवा की मां को प्रस्तुत कर भारतीय पत्नी की
tक्लिफ और दंन्द को उद्धारित करती है। बेरोजगार युवक की मां धन के आवाद
में सेवा की निगाह, मैरायपूणी व अलाम जीवन निपटती है। गरीब परिवार की
इन दिनिगतियों का मार्गिण विचार ते ही इस कहानी की आधुनिकता की पहचान
बनाती है।

²² पाती की तत्वावरण :-

यह कहानी अनस्फोट प्रेम की रोमांसी शैली में लिखी गई है। विषय में
चूं-चूं भारतीय भंगती व बहुमत क्षेत्र साधन वातावरण बना हुआ है। कहानी
का शीर्षक तृसृति का प्रतीक बनकर आया है।

इसका कथासार यह है :-  अक्षत अपने पिताक एकौशा बेटा था। उसके पिता
बहुत भारतीय और सत्ता व्यक्ति थे। राज बहुत गुरू और बड़े ही संस्थापक। उनकी एक ही इच्छा थी कि उनका बेटा विवाह करते।
अक्षत की मां गरीब थे बढ़ी उनका विवाह कहीं तय कर गयी थी। बाबा चाहते
ये कि अक्षत का विवाह बहीं हो। अक्षत विवाह नहीं करना चाहता था क्योंकि
वह मनीषा की प्रेम करता था। लेकिन बाबा तो यहीं चाहते ये कि अक्षत मां की
आविर्क्तिकी इच्छा पूर्ण करे। वह यह भी नहीं कह पाता कि वह मनीषा के विवाह
करना चाहता है। इसके वह विवाह ही नहीं करना चाहता। उसके बाबा
कहते ये कि वह मनीषा के प्रेम करता है। लेकिन मुफ़्त की आविर्क्ति बात तो
रचनी ही थी। उनका निर्म संक्षेप लेकर था। मनीषा तद्विन्द्र अक्षत की प्रेमण देती

²² पृष्ठांकः पृष्ठ-19.
रक्ती। परिस्थितियों को उसने परेब निया था। अतः उसने भी कभी अबत्त ते विवाह का पुजातान न रखा। वह तद्नदेह कहती थी कि वह फिर निविश्वर्त है। उसके नन में कई कोई स्वार्थ नहीं है। तभी शायद वह इतना मुक्त होकर उसे प्यार कर सके हैं। अबत्त कभी-कभी तोपता कि उसके जीवन का क्या अर्थ है। मनीषा उसे समझाती कि यदि वह हर कष में अर्थ तलाशने लगे, तब वह स्वार्थी हो जाना। अबत्त और मनीषा कभी इस विचित्र स्थितियों पर बात करते तो मनीषा कहती कि अपने पिता की इच्छानुसार कुछ, इससे फिर से कोई दुःख न होगा। लेकिन अबत्त नहीं वाताता कि वह मनीषा को दुःख दे।

दोनों में अटूट आत्मीयता थी और विवाह भी था। तभी तो तब बुन होकर बुन भी नहीं हुआ था। लेकिन अबत्त को अनुभव होता रहता कि कहीं एक विविधता है जो कभी भी नहीं भर सकती। बयन में अलग होकर मनीषा और संजय फिर बनकरए हुए थे। वे दोनों अबत्त के साथ मिलकर नहीं किनारे की प्रकृति में बोले रहे। अबत्त के रंग नदी के किनारे दीपदान करती दिसम्बरों के सिंह की बढ़त से भर देते। मलाढ़ जब नदी की छाती में का सम्मान घाट वीरता तो अबत्त अपनी टूलिंगा के लाभ से नविन भर देता। संजय कहता है कि इन गांवों का नक्शा बदलेगा। संजय कहता है उसके शब्द व अबत्त की तेवारि एक जीवित सुनें खोज जाएँ। संजय अबत्त को समझाता है कि मनीषा उसकी अतिरिक्त कश्चितादी नहीं। जोता है। वह प्रेमांत स्वीकार देती है। अबत्त ते कहती अपने रंगों को जीवित रखना अपने लिए... जो केवल दुःखर होगा वही मेरा होगा। यदि उसे रंग खिंचा रहें तो वह भी खिंचा रहेगी।

अबत्त फिर की कोई दूसरा दिश की गांव छोड़कर का जाता है। मनीषा की प्रेमांत उसके लिए जीवन न अलग। दोस हराए वह गांव छोड़कर, तब तक वह समाप्त हो दुःख था। बाबा और मनीषा की मृत्यु को कुछी थी और संजय भी मृत्यु के कारण पर ही था।

इस कहानी में बदलते हुए सामाजिक परिसर में आधी नवीन विवाह-धारा के कारण उत्पन्न हुई स्थितियों का विषय हुआ है। एक विचित्र बुद्धिमत्तावादी कर्ता ने इन दिसम्बरों में नए मापदंड स्थापित किए हैं। नए आदर्शों के तहत एक संदर्भी जीवन की आसा नहीं की जा सकती।
बाबा समाज की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि है। वह युवा पीढ़ी से बहुत आगे हैं और सैय्यदी अंतराल तक स्तरों पर बहुत आगे हैं। अबत मंदिर में विवाह नहीं करता। बाबा ने अख्त को मंदिर जाने के लिए विवाह नहीं किया। उन्होंने अख्त को मंदिर व धर्म के जोड़ने में जुड़वानी नहीं की लेकिन कहा, "मेरी धार्मिक पद्धति थी, वे तेरे उपर फ़ैलती है या नहीं। बैठने में आतानी रहेगी।" बताने में मन का काम करता किया था। जल्दी तरफ वे संस्कार दिया करते थे। विवाह नहीं। और जो अवस्था विवाह देखकर कुछ दौड़ना यादता है वह लगभग आरोपित ख्यात होता है। "संस्कार के बाद वाला तदेव आरोपत रहा है।"

अख्त बाबा था कि अप्र से "बौद्ध" देखकर कहते कि विवाह होगा। तो बाहर हो गया। लेकिन इसी ही की नहीं यात्रा था, "अख्त लोकता था कि बाबा देख की उसे को अस्तित्वार करने पर बाबा कुछ कहते और तब वह उन्नी के अपनी बात मनाया लेता, या वे विरोध देते थे। तब वह रास्ता था या लेता। पर बाबा यानी का बहाव था। हाथ में देख निकल जाते। वह विरोध करते है। दोनों और वे क्या कर वह निकलते और धरा का यही अवकल अवस्था।"

जब अख्त ने बाबा से पूछा कि वह तो या है और अस्तित्व दो, तो बाबा किया जाता। "जब है। क्या तेरा तेरा दुब वाह दुहिए।" तीन मांगे तेरी अत्या की लोग संजल था। वह तो आप अपनी क्षुद्र स्वार्थ तैर दुःख है। फिर तैरी मरी, जो ठीक लोग हैं जिन्होंने मन भरे। जो ठीक है। यह कहते हैं, उनकी अबिंच पत्र आपनी थी। अख्त जब-जब विवाह के लेकर कुछ निर्देश की बात लोकता है तब तब अवकल उसका पीछा करता है। "मांगती कुछ नहीं। न आदेश देती न अनुमान और न तिरस्कार। बत यही कि वह ठीक कर देंगे, वे तथ्यार न करेंगे। इससे उम्र दहुँ तस्वीर न मिट जाए, बस केवल बरी।"

जल्दी घटना-फूड में अख्त को एक नवीनतम आदर्श में बांध दिया और

111 कमलेश्वर: राजा निरबर्दिता: पानी की तस्वीर, पृ.25.
113 पूर्वक्ष: पृ.25.
113 पूर्वक्ष: पृ.27.
114 पूर्वक्ष: पृ.27.
115 पूर्वक्ष: पृ.27.
मनीषा भी तो कहीं दबाव नहीं डाल सकी। दोनों का प्रेम आदर्श प्रेम में बदल गया। मनीषा कहती है- "हमारे छोटे-छोटे आदर्श न कल्पनाएँ किल्ली पदार्थ नहीं है। जलना रस कहाँ है जिसका है अवश्य। दुनिया में रहते हुए भी उससे अलग होकर तपने कैसे कुन लेते हो। जो कोई तोपे मलके कैसे हंस लेते हो। तभी पूरा स्वाभाविकता है किल्ले नोगे के जीवन की।......"।

अबत की जीवन निर्वासन लगने लगता है मनीषा नवल समझती है- "हर क्षण अर्ध बोलने तो स्वाभाविक हो जाएगा। जब तक अर्थीने की नोगे तभी तक यह पावरता का तेज मुख्य दिखाए, युक्त रस लूकी। हम सब तो तौरहर्द हो, अपने में पूर्ण।"

इस कहानी में प्रेम किल्ला स्वाभाविक हो उठा। जाच के संदर्भ में ल्याना तो समाप्त हो गया है। प्रेम के माध्यम से भ्रूच्छत अपना स्वाभाविक पूरा करता यहाँ है। आदर्श प्रेम की अश्चिमत सार्वभूत कल्पना यहाँ है जो कि इतना प्रमाण में मिल पाना अत्यधिक ता ही है। इस कहानी में पोंकियों का अनसराग शी पूजा हुआ है तथा प्रेम का अति वायवी स्छी भी अभिव्यक्त किया गया है।

पून्त उठ जाती है:-

यह इस संघट की तीसरी कहानी है। यह कहानी "लोके हुए सुताफिर" नामक उपन्यास का ही तबियत स्त्र है जिसकी यहाँ पहले की जा चुकी है।

स्वाभाव का संधान :-

यह कहानी अपने प्रमाण में एक निरंतर मानवीय फसल पर कैल बनते बाली कहानी है। कहानी में दो छोटे-छोटे बच्चे हैं और उन चिठ्ठियों के माध्यम से ही लेखक ने युद्ध की दूरता और उससे दफरती शान्ति की कोविश को चित्रित किया है।

कथातार है:- इस कहानी का नामक लेखक है जो पूरा पृष्ठकी देखने गया था। बच्चों उतने कुछ पृष्ठों देखी। युद्ध के पत्र देख कर उसका मन आशंका हो उठा।

पूर्व में - पृष्ठ-29.
पूर्व में - पृष्ठ-29-30.
रात में उसने सपना देखा कि उसकी बालिका गुड़िया गुड़िया का व्याह रचा रही थी। उसने दुल्हन का घर बनाया था तो दूजी ने दुल्हन का। तारी तारीयों के बाद बारात के जाने की घड़ी आई। बारात दुल्हन के घर बड़ी थी। बारात पूरी और बिदाई की घड़ी आ गई। उसने उन्हें ठेक तारब के लड़के के बूटे की आवाज सुनी। देखा तो सूरत ऊपर बैठा था। दोनों ने योजना बनाई कि कूतर को उड़ा दें। उसने मिट्टी का देखा मारा और कूतर उड़ गया। लेकिन जैव तारब का बैठा बंदूक लिए बड़ा था और अंधेरे से आग बरसा रहा था। जैविक कूतर उड़ जाने की कूते में तालियाँ पीट-पीट कर द्रो हो रही थी। लेकिन जैव तारब के गुस्से का अंत न था। उसने दो तीन हवाई फुटर करते दोनों जैविक को डरा दिया। इसी बात के से ठेक की नींद कुशी। उसने उसी दिन में अकबर में पढ़ा कि हादसे का बता पर प्रतिबिंब की मांग की गई थी।

आज की मानवता युगों की विभाजन का अस्त है। इतनी जर्जर है कि रात्रि की निर्धार में भी आदर्श को युग – युगों कमबारी की दिलाई पहली है। वाराणसी में आज के पुरुष में मानव पर युग के भ्रामक बादल मंडरा रहे हैं। आज के पुरुष में ऐसे कहानी तबसे अविश्वस्तता है क्योंकि विचार की सभी शक्तियाँ युग की उच्चतरीय तेलनायर्य कर रही हैं। ऐसे-ऐसे उपरांत है निर्माण किया जा सकता है जो चिन समय मानवता के एक पल में तबाह बन जाते हैं। जल स्वच्छता है कि मुदुह के दिलाई में युग का भय बना रहता है।

यहां जैव तारब तारामंडली शक्ति के प्रतीक है, कूतर शांति के प्रतीक है और जैविक भगवान मानवता की। इस कहानी में मानवता के उपर मंडरा रहे आत्मविश्वास युग के संकेत को प्रातीकार्य में उमारा गया है।

नूर्देव की दुनियाँ :-

इस कहानी में एक और कहानी के भारीकरण से उत्पन्न व्यापारिक की चक्करियाँ फिरती हैं हो तो दूसरी और जीवन-सूखे दूर ने का दर्शन है।

इस कहानी में एक ठेकेदार की बेटी "साबिता" सुनाते से आई थी। साबिता
बहुत ख़ुश्सूरत थी। उसके बाद से उतरते ही बस अछुड़े पर बैठे कौमजोड़े वालों तथा निसार की निसारी उस पर टिक गई। तारिकहरी निसारी थी। तारिकहरी के पीछे उसके पति की हत्या कर दी गई थी। लेकिन कोई भी उसका बाल बाला न कर पाया था। नातिर के बाद तथा तारिकहरी की बकरी के कारण दोनों में नैसार कार्यरत हो गया। निसार मोटर का चेतना था। वह जब भी काम था, पूरा पाता हो तो तारिकहरी के पास आ जाता। वह जब भी अपने काम से बाहर जाता तब अपने बच्चे ने उसे कोई नींद भूल दिया। एक दिन दोनों बाद रहे थे कि तब तक गोरख आ पहुंचा। उसे उन दोनों की आत्मीयता अच्छी नहीं लगी। क्योंकि वह भी तारिकहरी के प्रति आसकता था। वह तारिकहरी को समझाने का चाहता था। लेकिन तारिकहरी को निसार का संबंध प्रिय था और निसार भी तारिकहरी की बच्चों में ही हुआ रहता।

कुछ दिनों बाद तारिकहरी मोटर कने करने कारों का बाद तक से निसार को जीविकार्जन की सिंह करने की कारों का प्रायोजन बतम बने जाते हैं। जीविका कमाने के लिए वह कारों में जाने का तो अपना बच्चा भेजा की शिक्षा ठहरी की तारिकहरी के यहां रखा। कोई नौकर जो कोई जो था बताया है। जब वह तातदिन के भाद काप कर उसे एक बात करने लगा। वह तारिकहरी के पर पहुंचा तब उसने तातदिन का पाया। उसने नगर की स्कूलियों से पूछा तब पता करा कि तारिकहरी उसके बच्चे बोल जोकर उसे बोलने का तातदिन ने बोला। वह तुम्हें निसार का भने आता ही यथा जो। और शरीर भोजन कर गया। उसे अपने बच्चे श्वास्थी है। बिच्छे ने बत बना या था। उस बत उसे यथा है कि वह दुनिया आदिवासियों की नहीं, सुरक्षा की है। सुप्राचार कापने वाली बच्चे की दुनिया भी सुरहो की है। और दुर्गति बाल गाय पुरायह जीने वालों जीवित लोगों का दुनिया भी सुरहो की है। वह तारिकहरा बनायेगा क्योंकि तारिकहरा की दुनिया में एक जोश-करोज है, लोग जानिते हैं पीटे जोश-ख़रोज़ से फुल में निकलते हैं। लेकिन ने तारिकहरा की यानी सुरहो की दुनिया वातावरण पैराडाइम कल हो से आदिवासी के दर्द और आश्चर्य को व्यक्त किया है।
इन कहानी में कहाने के शहरीकरण से उत्पन्न बेगमानपन की व्यवस्था का विषय हुआ है, ब्रह्मचारी की पीड़ा तथा बीच में लोगों के टूटने का दर्द भी उभरता है। निसार का बकरा नूर उसकी समस्त आशाओं व बोलते आयों का पृथ्वी था। उसने अपना निसार का हक़ अपना बकरा नूर तारिफते की साँपा था और वह गाँव छोड़ कर भाग जाती है। उसका गाँव के भाग जाना निसार को भीतर तक ठोंग जाता है। उसका देखभाल टूट जाता है। नूर की लाप देखकर उसे लगता है उसकी तारी दुनिया की ही विद्रोह कर दिया गया है। उसे लगता है कि पूरी दुनिया की सुन्दरी की है। उसे लगता है कि वह बापस सुन्दरी की दुनिया में नहीं जा सकता। जब वह तारी बनाता। वह निर्धार करता है कि सुन्दरी की दुनिया में बच वह नहीं रह सकता। इस प्रकार निसारों का दूर होता इन कहानी की आयुष्यिता का झूठ है। शहरी कर्म के कारण मानवीय तरीका की समाप्ति की ही इन कहानी का नामित है।

888 आत्मा की आयुष्यः

इन कहानी का सारांश यह है:— राजू अपना नाम समाप्त करके रिसों के भाई गोपाल के घर पहुँचा। गोपाल अभी तक घर नहीं लौटा था और भामी घर में अकेली की। उसकी भामी थे वह पहली मुलाकात थी। बेनिया भामी बहुत खास-सी जोड़े में केली थी। उसने नायक से अभिनव बात न की। राजू भी गुप्तराम बैठा रहा। कुछ देर में गोपाल आ गया। उसकी बातों से नायक को पाना लगा कि वह अपनी पत्नी की प्रकृति नहीं समझ रहा है। वे जब रात को बाहर खोंचे लेते लोग निसार की अपनी पत्नी की बबाई रोदियाँ पसंद नहीं आया। राजू ने गोपाल को अपनी पत्नी को डांटे व मारते हुए उतना पर उसे भामी की कोई आयुष्य दुनाई नहीं पड़ी। वह गोपाल को रोजना बातकर व लेन-देन देना हुआ पर उसे भामी की कोई आयुष्य दुनाई नहीं पड़ी। वह गोपाल को बाजार में आया व आया आया आया आया। घर लौटा तो उसे अपनी जेनिका का पता मिला। उसने लिखा था कि विवाह तो उसके भी अपने माता-पिता की इच्छा से समझ पता नहीं मानता। लेकिन विवाह के उस गर्म में रखा दिया लेकिन वह।
राजू की याद करती है। उसने लिखा आज उसे खाना बनाना पड़ा क्योंकि वह बनाने वाला नहीं आया था। तब उसे रोटी बनाने में बहुत कठिन हुआ क्योंकि उसने कभी बनाया ही नहीं था। वह सोचकर रही तो यह रोज खाना बनाती। इसी दृश्य में रोटियाँ ठीक नहीं बनीं और पति ने खाना खाते समय कह दिया कि ये कैसी रोटियाँ बनाई हैं।.. राजू ने उसी समय पत्र बंद कर दिया। उसे पिछले दिन वाली घटना याद आ गई।

इस कहानी में आधुनिक जीवन की विकसिति और लालच-भरे दाम्पत्य संबंधों को अभिप्रायत किया गया है। "मिसफिट" होने तथा वर्ण की समस्या इस कहानी का मूलाधार है, जिसकी परिधि पर पुख्त-पुख्त भारतीय समाज में नारी की दफ्तरी स्थिति को उल्लोह किया गया है।

राजा निरबंधिया :-

यह इस संघ की सत्तवां कहानी है। इसकी वर्ण "मेरी थिय कहानियाँ" में हो पुकी है।
कल्यङ्क का आदमी :-

इस कथा तंगर के कहानियों में दरण की स्वतंत्रता का प्रथम उठाया गया है। तांत्रिक विकल्प के आग में जल लोगों की क्रम गायबा का वर्णन भी किया गया है। नारी पर ही रहे अल्पाध्याय तथा परंपराओं में बहे हुए कश्य के व्यक्ति का महामृत्यु किया गया है।

1. तीन दिन पहले की रात
2. गर्मियों के दिन
3. हटके हुए लोग
4. गाय घर
5. तीरश्रोधे
6. उत्सव और तेज़ीन
7. गाय की घोंटी
8. नींवरी बेखरा
9. सच और बुढ़ा
10. केकरार आदमी
11. अनेकदार साहब
12. कश्य का आदमी

13. तीन दिन पहले की रात :-

इस तंगर के यह पहली कहानी है। इसका कथासार है :- मीना स्क मध्यमांचल परिवार की डिलीती बेटी है। मीना की विवाह-योग्य है। मीना के पर में आपने वाले प्रस्तुत युक्त में उसकी माँ मीना का वर तलाशती है। इस प्रकटिया में उस व्यक्ति को जानने के लिए वह अत्यंत आपवारिक व्यवहार का सहारा लेती है। उस तरह यह युक्त उसकी आकांक्षाओं व इच्छा के अनुसार काम व बातें करता है तब तक उसकी प्रशंसा के पुल को दिया जाता है, बदले वहीं ही वह अलग लगने लगता है, वैसे ही उसे छिड़का कर दूर कर दिया जाता है। इस प्रकटिया में मीना को उस युक्त के निकट जाने का पूरा अक्सर दिया जाता है। नैवस्य का अक्सर
पाकर उतका मन तबसे अधिक दिवाकर ते जुझा जो बहुत आदर्शवादी युक्त था। लेकिन एक पीड़ा के साथ उसे इस संबंध को समाप्त करना पड़ा। मीना की वह पीड़ा बहुत तनाव थी। फिर तिने आया - बहरी हुआ। तब अबर आया - उससे मीना का विवाह हुआ लेकिन मीना प्रसन्न न हो लगी। क्योंकि वह मीना के माँ-बाप की इच्छाओं के अनुसार था मीना की आवश्यकताओं के अनुसार नहीं। इसी पीड़ा में वह दिवाकर को नहीं मुला तकी।

इस कहानी का मूलाधार हमारे परिचार का छून है। कभी कहता है कि जिल आमुरुम्बता की बात हम करते हैं वह मिलता है, जल है, प्राण्यता है। परंतु फिर भी हम उसे छूट नहीं पाते हैं। स्त्राहता के नाम पर छूट, सत्यता के नाम पर छूट। जीवन की सुरुवात - बहरी भी नहीं। "फिरने बड़े छूट और प्राण्यता भी हम तास ते रहे हैं। सुरक्षा, काशे की वृ पीवन की। और पैता और पद। क्या यही जीने का मतलब है और क्या यही आयामक है कि एक पुख्त अपनी पुरानी की बाँहों में घर कर भौतिक सुनिश्चितताओं से भर है, जीवन की वह बुढ़ी सुरक्षा दे दे ।"।

वास्तव में यह कबन हमारी नासिकियों को सिखाना करता है।

इस तब की चेतना में प्रेम पैता अदालत भाव भी आ गया है।

परिवारिक संस्कारों में जबकी पुख्ती यह जीवन का पाठ कर भी फिरौज़ नहीं कर पाती। घर में नारी स्त्राहता को लेकर आतंरिकिया आदोलन अध्यक्षीय व बेमानी लगते हैं। बेमानी नारी स्त्राहता - फिरने देखी व फिरने भोगी। "सारी लाइफियां स्त्राहता हैं। वे प्यार रह तकती है मुफ्त कर तकती है, लेकिन जो आतमी है वह नहीं कर तकती।"। वास्तविकता भी यही है। मीना भी वह जीवन भोगी है। घर में आये नए युवक की संबंध की तलाश की जाती है। पहचान करने की इस अवधि में मीना को उन युवक से छुड़ाने का पुरा अधिक दिया जाता है और वह छुड़ी जाती है। भक्ष्य उसकी आँखों में नाचता है। युवक की पुरानी के दौर में मीना को लटकता है अपने उसकी पुराणा हो रही है। इसी क्रम में वे निकलते हुए वह भीतर कहीं गहरे से जुड़ती जाती है। परंतु होता इसके विपरीत है। इसी क्रम

पूर्वोंक - पृष्ठ-9.
में ते दिवाकर गुरुरा। और इस बिंदु में ही तब बिखर गया। उसे दिवाकर की याद आती है जिसके उतने प्रेम किया था। यहाँ आदर्शों को उपेक्षा में मूल्यों का ध्यान अभिव्यक्ति किया गया है और पुलिस आपराधिक के वर्ण के सम में भौतिकता के पुरात समर्थन को अभिव्यक्ति दी गई है।

युवकों पर भी इस बात का गहरा अलावर यह रहा है। उन्हें जब अत्यधिक दिन दिया जाता है तो उन्हें समझ नहीं आता कि उन्हें अस्वीकार क्यों किया जा रहा है। जिले के साथ जब मीना के मां-बाप का व्यक्ति एकाक बदल जाता है तो उन्हें बहुत अजीब सा लगता है। जिले को एक नौकरी मिलती है, जब वह बहार हो जाता है तो उसके समय मीना हो जाती है तथा जिले हत्या कर हो जाता है। उसकी नजरों में हैरानी की कि आचरण उनके शरीर पर इस दिन शिकार क्यों नहीं होता? क्या वह भी कर हो गया है? वह बताता है कि उसकी आँखों में बनी ताजमहल, कुचली और गवर्मन की सजार टोंक की तत्कालीन वह देख लेते...। लेकिन उसकी हैरानी नहीं थी।

कितनी धारक है भौतिकता की यह दृष्टि। युवकों व युवतियों को यह कुछ बिल्कुल निभाया कर छोड़ देता है। यह विवाह संबंधों का रूपांतर उत्पन्न करते हुए लेखन ने आज के मूल्य की आदर्श बनाए रखता है। बदली हुई नैतिकता इस कारण अभिव्यक्ति हुई है कि मीना को विवाह के लिए युवकों के संबंध में आने भी दिया जाता है लेकिन उसे वर्ण करने की स्वतंत्रता नहीं दी जाती। इस अद्वितीय आम्हिना पर प्रादर्श किया है।

गर्मियों के दिन :-

यह इस संघ की दूसरी कहानी है। ऐसी बार "मेरी फिरोज़ कहानियां" में की जा चुकी है।

अटके हुए लोग :-

लेखन ने अब बहुत मामले मुददा उठाया है कि यह सांस्कृतिकता व
विभाजन भोगने वाले लोगों की आवश्यकता का वर्णन करता है।

इसका कथातांक है:— परस्तराम व उसकी बेटी तत्त्वज्ञी भी हंसराज की भांति स्वभावधारी हैं। शरणार्थियों को बसाने के लिए उन्हें कुछ दुकानों की रू पत्र भेज दिए हैं। इन्हीं में परस्तराम व हंसराज की भी दुकान थी। इसका त्यागी लोगों में बहुत रोष था। उनकी बिक्री में उसका आ गया था। हंसराज भी धीरे-धीरे बसने को विचार करते हैं। परंतु पुरानी दुकानें पटाके पकड़े दुकानें बना दी जाती है और इन लोगों का अधिकार नहीं होता, उन्हें वह बांट दी जाती है। हंसराज व परस्तराम बाली रह जाते हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता। परस्तराम तो सततती का विवाह हंसराज के से करना चाहता है, परंतु अब वह ही स्वतः है, हंसराज बहुत प्रयत्न करता है, परंतु उसे दुकान नहीं मिल पाती। वे अपने हताश होकर की रोज मार की तोपते हैं तथा वह परस्तराम भी झूठी मिलते ही झूठा भेजने का याद कर कर पहुंचते हैं। परंतु नियत को तो यहीं मंदूर था कि उन्होंने पत्र भेजने का पत्र भेजता है। परंतु नियत को तो यहीं मंदूर था कि उन्होंने पत्र भेजने का पत्र भेजता है। इस पर भी शरणार्थियों को न्याय कहां भेज दिया जाता है। सब झूठी की ललास में भटको रहते हैं।

विभाजन के बाद जीविका कमाने का प्रयास किया है। शरणार्थियों को विन-विन वातावरणयुक्त दुकानों में गुजरना पड़ता है, इस बातकी में यही मान्यता रखा जाता है। वे भरोसेमेत भी जीवित रहने के लिए विविध विशेषता के लिए विविध किया गया है। वे झूठे भरोसेमेत भी जीवित रहने के लिए विविध किया गया है। इस पर भी शरणार्थियों को न्याय कहां मिल पाता है।

विभाजित हुए लोगों में अपनी धर्ती का मोह बुड़-बुड़ कर भरा रखता है। "हूटी हुई धर्ती का मोह मन में भर गया। आंखिक पंजाबँ पंजाबँ है। यहां यह चिंतन कहां?"अपनी धर्ती का मोह भला कहां बुड़ता है।

इस दहची में विभाजन की पीड़ा भोगने वाला व्यक्ति की समझ सकता है कि तपाई धर्ती भी अपनी कैसे सब कुछ फूंक कर रहे देती है। "पंजाबँ की लापटियों को मतलब नहीं किया।" यह ठोकर झाँकी ही होती है कि आदमी अपना कहां कैहां।

कमलेश चर: पृष्ठ-44.
पृष्ठ-48.
लब कुछ बो देता है तथा भटक जाता है। इस कहानी की तीव्रता, विभाजन की पीड़ा और तांगुदासिक दंगों की विचरिता का पर ठिक्र हुई है।

याि घर :-

इस कहानी का नायक लेखा है। विभाजन के बाद हुए दंगों से पीरिय युवती स्थाय घर में वेदर का गाम करती है। उस घर घर में ग्राहक बहुत ही कम आते हैं। लेख क प्राय: ही उस घर घर में घर पीने जाता है। वह लेखा- वेदर जानती है कि लेखा पृथिवित वार्तय में कब आता है और कब नहीं आता। पृथिवित का आना-जाना ही लेखा व लेखा वेदर के बीच का संबंध था। एक दिन वह लेखा वायघर में आता है। वाय बंदित है लेकिन वाय पीने-पीरे कुछ सोयने लग जाता है। इसी दौरान लेखा वेदर अपने तप्योगियों से गाय करके कहती है। तब वह व्यक्ति को लेखा वेदर के बाय करके रोकने के लय में राजकुमार की याद आती है, जिसे उसने एक समारोह के बाद अपने अपने ओटोग्राफ दिया था। उसने उसकी ओटोग्राफ कुछ पर फिर दिया था-- 'जिंदगी प्यार के लय है।' अन्यान्य लेखा वेदर ने घर की याद दिलाई जो पड़ी-चढ़ी घड़ी हो गई थी। दोनों में बात-पीट आरम्भ हुई। तब लेखा वेदर ने बताया कि विस्तार वास्तव के हंगंग से बकर भागी। लेखा ने फिर किती तोप में पड़ गई। वह सम्भवतय में राजकुमार के बारे में तोलने का जो कि दिखाय के किती महर में रहनी थी। वाय समाप्त तक लेखा घर को नहीं। लेखा वेदर ने किता अन्य ग्राहक के आगे तक उसने बैठने का अनुरोध किया। वह अनुरोध अपोजन के बारा था। अवान्य लेखा वेदर ने बताया कि वह भी कुछ दिन के विचय में नहीं आयी क्रोधकि वह राजकुमार से मिलने दिल्ली जा रही है। राजकुमार भी दंगों में उसके ताप आई थी। उसने बताया कि राजकुमार दिल्ली में नही है। नायक को अपना दिया हुआ ओटोग्राफ याद आया तो वह बहुत हुँकड़ हुआ। शायद वह लोग कहना रहा द उसका दिया ओटोग्राफ राजकुमार के लिये बिला दुःखित हो गया। उसे लगा कि उसकी फिर में पंकजार्त्स उसे बैतन रही होगी तथा वह कहा, घट-पट कर दिया हो रही होगी। उसे लगा कि शायद इस लेखा वेदर उसे अपना समक्ष बता रही है। तभी उस ताप उस वायघर में एक अन्य ग्राहक आया। वह लेखा वेदर उसकी और
बहुत तथा बहुत आत्मीयता ते उसले पूछने लगी। कि आप बड़े के मालूम पड़ते हैं। यह तुम्हारा नायक करे ऐसा आभास हुआ कि उसे आत्मीयता का धर्मा हो रहा है। वास्तव में ऐसा नहीं है। तब उसे लगा कि शायद जो नहीं है वह भी ऐसा ही करती होगी। उसे लगा कि लेकिन पृष्ठ ने उसे कुछ कहने बहुत शायद अच्छा दिखा दिया है। उस कब्जा वाय की कीमत पर इतना सूक्ष्मता धीरा प्राप्त करना उसे अधिक मानना नहीं लगा।

इस कथानी में दोनों से भाग्यकर आप लोग जीविका कानने के लिए कैसे कहते रहते हैं। अपना मन मार्ग उन्हें यह तब करना पड़ता है। एक केंद्रीय वेशर प्रत्येक ग्राम को अपनान देती है ताकि वह ग्राम नियामित स्थल हो। वह बात पर आता रहे। परंतु धीरे-धीरे वह अपनान विकल्प अस्ति कर जाता है। यह व्यक्तिकीता उसकी विकास हो जाती है तथा इस प्रक्रिया में वह एक आदमी से एक हम कर स्काप निकल कर अलग होती है तथा नए ग्राम में आत्मीयता से पूरी है। "आप बहुत के मालूम पड़ते हैं।"

इस बीच वह पहले व्यक्ति की संज्ञानों का ध्यान नहीं रख पाती को स्फोट होता रहता है। परिणाम: अगर पुरस्कार भी नीचे मार्ग पूर्व प्रदर्शित करते हैं कि एक प्याला वाय की कीमत पर इतना नायक थोड़ा बहुत होता को स्फोट होता है। "इस से बायर से आई हुई व्यक्तिकीता की बहुत महर्धे ते पृथक किया गया है। तोहफेः

इस कथानी का व्यक्ति यह है -- इस कथानी की नायिका का प्रति स्वभाव से अत्यन्त कोशिश है। छोटी-छोटी बातों पर मार्गपत्र बहुत ताजारण ती वाय है। वही से यह परम्परा की दुकान जाती है। परंतु नायिका प्रेम के अतिरिक्त भोग तथा वर्तमान के आदि में भी जी रही है। इन सब त्रासदियों के बीच पुष्प पूर्व नायिका के तोहरा युक्त चान की ओर आकर्षित होती है, तथा जूहले

1.1 कथापर : कहाँ का आदमी : "चायर" - पृष्ठ-57.
1.2 पूर्वार्थत - पृ.57.
स्थान देखती है, परंतु समस्त इतिहास व कामना की उपस्थिति के बावजूद भी यह किसी भी पुरुष पर विद्रोह नहीं कर पाती। परिस्थिति के साथ लिए तात्त्विक परिस्थिति का लाभ तो इस पाने की तामाशा उसमें उत्स्पन्न नहीं हो पाती।

यह कहनी मोटे तोर पर स्थिति-शोधन का अंकन करती है। पुरुष छोटी-
ती बात पर निजाम दिखाता है। मारपीट, झगड़ा तो बहुत सामान्य बात है
परंतु वह तन के लिए प्रूँक वस्त्र व पेट के लिए पवयाधि अन्न का भ्रांति नहीं कर
पाती और उही जानती भोगते रहने के लिए अपने आंदोलन में चिंता रहती है।
उसकी स्थिति का अंकन बहुत मार्गित ढंग से किया गया है। यहे वीथके सात
रोके तार पर कमांडों की भांति लटके रहते हैं।"31] और "दो दो दैवे
के लिए वह तरसती रहती है।"32] उसका मन भी होता है कि उस के पात अन्य
विद्वानों की भांति अत्यंत वतन होते हैं। छाया, कान व नार वहाँ प्रस्तुत के लिए आत्मक
होते, परंतु यह उसका अत्यंत प्रवेश होता है। इसी कारण उसके परिस्थिति की पहली पत्री
भाजा आग लागकर क्यों मरती। वास्तव में वह इस जीवन के लंबी से उक्ता कुछी
है। "यह जीवन बेकार है....... यह जीवन नरक के बदल है, इन अभावों और
व्यापारों के बीच से वह उठ जाता तो कैसा रहे कितना आघात हो।"33] 
किती। "विद्वत्व स्थिति है नारी की। यह तब हैकर नारी स्वतंत्रता की
खिलाई।34] उस रहती है। समाज में समन अक्षालों व अभिकारों की प्राप्ति
की बात तो कोई कूंर, उसके जीवन की तो आक्षेपणारे भी नौरी नहीं होती।
बहुत धन्यवाद स्थिति है। रोटी व वस्त्र से भी धर्मवत्ता नारी फिर भी पति को
उद्देश्य ही प्रदान करती है। उसका तन व मन विद्रोह करता है। इसी कारण
यह अन्य पुरुष के प्रस्तुत आवश्यक भी होती है, तब भी संक्षिप्त उसे रोक लेते हैं।
परिस्थिति के साथ अपने का साथी मानकर लिए गए तात्त्विक परिस्थिति से अपनी राख नहीं
छोड़ने देते। वाह रे संक्षिप्त। कितने ऑपरेशन तो संक्षिप्त। यदि वे संक्षिप्त
न होते तो भारतीय नारी भी बहुत पहले ही विपल्स के कारण रह जाती और
भारतीय समाज की गरिमा की अव तब बनी हुई है वह बहुत घटने विशेष खूनी होती।

31] कमलेश्वर, कान्हा का आदाली: लोचन, पृथ-60.
32] यूरोपियन, पृथ-61.
33] यूरोपियन, पृथ-62.
इतिहास और वैज्ञानिक

इस कहानी में गरीब कवि की कथा पूरी होती है और उनकी कोई बात भी नहीं सुनता। यह तथ्यात्मक के पक्ष में होता हुए भी वह गुरुगार है।

इसका माननीय रिस्क इस कहानी में लिखा गया है। कथातार यह है :- इस कहानी का नामक यह साधारण गरीब युवक है, जो तदर्श की रात में अपने तनावों से निकहीत पाने के लिए घर से बाहर निकल कर ठहर रहा है। उसे बाहर रामसिंह नाम का कांस्टेबल मिलता है। बातों करते-करते रामसिंह अपने मित्र की बेवकाफ़ प्रेमिका की बात करता है। यह पुराक अपने तनावों में रेता घिरा है कि यह कांस्टेबल की इस बात पर अभिक हँसकर फुट नहीं कर पाता। कांस्टेबल को यह बात अबरती है। बातों-बातों में कांस्टेबल उसे दर जाने के लिए पैदा देता है। इसने एक पुलिस डेंस के कांस्टेबल को गले लगाने चाहता है। जब व्यक्ति अपने तमाम अभावों के बाद भी कांस्टेबल का लिया उसे वापस लौटाना पाता है तभी यह पुलिस डेंस लौट कर आता है और उस व्यक्ति के पास स्कूटी है तथा रामसिंह उस व्यक्ति पर आरोप लगाता है कि यह व्यक्ति बदमाश है। वह अपने तमाम पुलिस डेंस जानियों के उसे पकड़ लेने में रामसिंह देता है तथा उस व्यक्ति की कोई बात नहीं सुनता।

इस कहानी में मानव मूल्यों के ध्वस्त होने तथा व्यवस्था के अलावा युक्ति दो जाने का प्रयास विधेय हुआ है। मनुष्य की वारिष्ठ निराशात्मक इस कहानी का प्रभाव पड़ा है।

गाय की घोरी :-

इस कहानी में भ्रामिन जीवन बिखाते हुए, उस की दलाल पार करते हुए अकलापन काटने के लिए सुंदरी की बायः नाव में होने वाली प्रत्येक घटना- दुर्घटना में सारी होती हैं। प्रबु: यह जब साती नहीं होता, तब भी उस दृःव- तुल अथवा घटना की सारी जानकारी प्राप्त करके सवार को उससे जोड़ लेते हैं तथा अपनी उपयोगीता की उस घटना के जोड़-जोड़ अपनी शक्ति क्षणों हैं। यह उनकी आदत ही बन चुकी है। जब बुझिया की गाय घोरी होने पर वह उस बात में भी
त्वां को बीच में डालो हैं । जब पुलिस द्वारा बांच की जाती है तब उन्हें बहुत परेशानी होनी माही । वास्तव में उन्हें इस धोरी का कुछ पता नहीं होता । अंदर में वह कह दिये हैं कि उन्हें कुछ भी नहीं देखा । इस प्रकार उनका अपमान होता है और इस अपमान को वह लाडिया बाबर पुराई हुई गाय को वापस लाकर ताजम व मदल देते हैं ।

इस कहानी में मनोवैज्ञानिक मनहस्त को अभिव्यक्ति किया गया है, जिसमें मनुष्य आपनी अपनी आत्मा प्रतिपादित करने का पथ संघर्ष प्रमाण करता है। आत्मापरस्पर को मनोविश्वास को लेख ने मुख्य जी के घरिण के माध्यम से उद्धारित किया है।

नौकरी पेशा :-

-------------------------

इस कहानी में "कस्बे के एक और पहलू का बड़ा ताजल दिखाया हुआ है। इसमें कस्बे का जीवन, कस्बे का आदमी, उसकी मनोवैज्ञानिक "कस्बे का आदमी" कहानी तो अधिक हृदय से चित्रित हुआ है। वह कस्बे की विद्युता का आदत करना है। इस से कस्बे का ही आदमी की दृष्टि के दिन सुकार रहता है।

"नौकरी पेशा" कहानी में "गाँव जिस से उखड़े लोगों का पता" देते हैं इसी कस्बे की विश्वास का अवशेष हुआ है। कस्बे में कस्बे हुए लोग शहर में नौकरियों की ओर आकर्षित होते हैं। वह आक्रोष वा वा की संख्या दिलाता है। आनंद को अन्य पता आसमान भी है। राजन्यता भी जीते आर्थिक व नीतिक आयाता दिखाई देने के दिन सुकार रहता है। इस माननीयता में आपकी इसकी विशिष्टता से जबर जाता है कि वह उसके भारी पता के मुख्य उसके यह अन्य उसके यह नौकरी करता था, ताकि उसके द्वारा रिकाल नौकरी उसे मिल जाए।

इसी के से पता करते परम्परा की दुनिया दाले लाला के पूरे राजन्यता के जब "बादा" संबंध प्रमाण हो गया तब वह अपने को बुद्धिमत समझता है, और कल कहानियों के बावजूद "नौकरी पेशा" कहानियों वाला पत्रिद करता है। इसी प्राप्त होते "नौकरी पेशा" आदमी का लेखक बहुत ग्राममानिवेश मध्यम किया
गया है। कब्जे के छोटे-छोटे दफ़्तरों में काम करते कल्ले दफ़्तर की बाहिरा के निकट स्टेशनरी के छोटे-छोटे लामान, पेंटिले, कागज़, आदि पुराफ़ कागज़ को घोरी ही नहीं समझते। ये बाबू लोग थे कौन, इसके परियों में कहानीकार ने कहा है फ़िकि ये तारे ही महान परिवार और गांव से उखड़े हुए लोगों के थे। "भारी डोरे की होटे में गांव के लंकारों से अभी किर मे तारे ही परिवार भीतर ते गुट कुएं थे। 

भारी युवती और कार्यालय धीरे-धीरे वर रहा था पर निरादरी के मामले में वही नेंदी ठाठ जली तमाम जाता, नाक तूफ़ी रची जाती।"

कहानी का अंत यह बताता है कि भारी बीवन का कार्यालय थाई फ़िका ही इन लोगों के बीवन में आया हो, हिंदू अपनी का जो दर गांव वालों के दिल में होता हे वही राममैत्री को बाबू राजीव वाल की सिक्कारिया के लिये प्रेरित करता है, विद्वान दोनों था-पुरी से कहते थे। यहां रोमानी त्रिता भी ब्राह्मण का पीछा नहीं छोड़ता है। इस प्रकार यह कहानी गांव के उखड़े और शहर में रोटी कमाते लोगों का विज्ञापन बहुत प्रायंकितता है करती है।

तारे और बुध व।

इस कहानी का नाम रही बीवर है और उसकी देखभाल करने के लिए शारदा नामक नहीं है। वह नहीं उसकी बातें ध्यान त्युन कर उसे अपनाया। इसे बहुत धक्का है। रहीवा उसे तलाना नामक युवती की बात करता है जो उसकी भी है। वह कहता है कि मैं उससे प्रेम की बात की थी पर उसका संकोच वह अपना प्रेम बैठा नहीं टांगा। तलाना उसकी अपनी चिंता है और उसके मिलने असप्तता आती है। लेकिन अपनाने उसी दिन वह फिरे डॉक्टर के साथ उसके विवाह की तत्क्षण देखता है। इस पर उसे बहुत दुःख बहुत दुःख है। अपने दिन तलाना उसके मिलने आती है नब वह कहा रहा जाता है लेकिन बहुत भी नहीं रहा लक्ष्य। अपनाने तलाना रहीवा को देखने आती है तब दोनों ने नहीं कर लक्ष्य। अपनाने तलाना रहीवा को देखने आती है तब दोनों के निराश रखे बात के बारे में पुराफ़ कि हरिवा बुध बोलता है कि वह उसकी पत्नी का पता है, जिसके उसने लिखा है कि वह उसके मिलने आना चाहता है। नहीं शारदा वह

|| वही, "तीकरी पेसर" - पृ. 204.
बल गुणती है। तरला के जाने के बाद वह हरीश से पूछती है कि उसने बुझ क्यों कहा। तब हरीश जवाब देता है कि "जो विखाना है वह लग नहीं हो सकता, और अगर बुझ किसी को बनाता है तो बुझ क्या है।"

हरीश तरला के तर पर दूर्दे अपने दृश्य को अपने बुझ से जोड़ने का प्रयास करता है। यहां इस कहानी में काम-संबंधों की नैसर्गिकता और उससे जुड़ी हुई मानवीय नियतियों को धारक किया गया है। यहां मूल्यों की भावनात्मक स्तर का बहाव मूल्यों की परिस्थिति - तपास्ता तथा उद्देश्य - सापेक्षता पर बल दिया गया है।

वेकार आदर्शी :-

इस कहानी के नामक प्रकाश को प्रकाशित का अनुसार था। फिर भी उसे अभी तक नींवरी नहीं मिली थी। वह रोजगार कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवाने गया था। रोजगार अधिकारी उसकी योजना से बहुत प्रभावित हुए। प्रकाश की अवसरों में छपी रचना, लेख दल्लाबे देखकर उन्हें लगा कि प्रकाश तो भावी लेखक है। प्रकाश की तारीफ बारे सुनकर रोजगार अधिकारी उसका बताया कि वह भी बाल मनोविश्वास पर यह पुस्तक लिख रहा है। उसकी इच्छा थी कि प्रकाश यह पुस्तक को लिखने में उसकी तदायकता करे। उसे तदायक ने प्रकाश को अपने घर आने का निर्देश दिया तथा बताया कि उनके सारे तो बुझ और है। क्योंकि नींवरी तो उनकी विवेकता है। उन्होंने प्रकाश की नींवरी दिलावाना का आश्वासन दिया।

यह कहानी समाधान में भाषाप्रचारी नेरजे की सीक्षा के लिए गई है। सप्तप्रतिभावन लेखक को सच अनुमान कोई नींवरी नहीं मिल पाती। वह नेरजे के कारण भरोसा है तथा रोजगार अधिकारी भी अपनी नींवरी के संचालन करता।

भारतीय साहित्य :-

इस कहानी में बहुसंख्य भारतीय थे। लेखक व उनका मिट्टा नेरजे बलरामजी के घर में जा हुए थे। बहरानी उन्हें अपने बहादुरी के किश्रे लुमारा करता था।

कड़खेत्र : वहीं : तप और बुझ, पृष्ठ-102.
यह दिन स्वर्गी की को सँग पर साधन का तार मिला। उन्हें एक डाँक को पकड़ने का काम लौंगा गया था। स्वर्गी को अपना शौर्य दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ। डाँक का पता करने के लिए उन्होंने लिस्टरियों की क्रृत्वियाँ का उपयोग किया। लेकिन उन्होंने कोई सफलता नहीं मिली। लेकिन उन्होंने निकल निकाला कि वे स्वयं ही खुद करेंगे। डाँक को जब उन्होंने के अभियान में दे स्वयं भी शामिल हो गए। इसी वक्त में दो तीन दिन बीत गए। नरेश भी एक दिन गया गया। वह काफी देर तक नहीं लौटा। स्वर्गी को उनके एक तिमाही ने बताया कि डाँक पकड़े गए हैं। अब स्वर्गी नरेश से अपनी बीमारी का बाबान बनना चाहते हैं। खुद ही देर बाद एक पुलिसवाला आया तथा उन्हें बताया कि पाँच लोग विरोधार्थ हो गए हैं। स्वर्गी मुखरिया की कोशिशें में भेजना चाहते थे।

क्षतिग्रस्त साधन ने स्वर्गी के लिए एक पत्र भेजा था और साधन ही पाँच फ्रोटी थे। लेकिन वह देखा तो एक ही अद्भुत के पाँच फ्रोटी थे। स्वर्गी यह देखकर परेशान हो गए कि वे फ्रोटी तो एक ही अद्भुत के थे। पाँच पाँच मुखरियाँ में थे। इसलिए पाँच अद्भुत पकड़ दिए गए थे।

उस दिन नरेश भी बापुल नहीं लौटा। उसका तार मिला था कि उसे डाँक तमगह नहीं लिखा गया था और उस बढ़ी मुफ्तिल से छुट गई है। इस कहानी में प्रभास की व्यवस्था पर चौंक भी गई है। व्यवस्था-विरोध की लीडना की है। कहानी में व्यवस्था की नियमता के प्रति मोर्न्स के अभियान की गई है।

कच्छ का आदर्श :-

"कच्छ का आदर्श" की कहानियों में भी राजा निलेकित्व के ही काल की कहानियाँ हैं। इसलिए ये कहानियाँ अपने घरेलू में माया नहीं हैं। वे भी परेशान और जीवन के विचित्र आयामों को उद्भासित करने में प्रयत्नशील लक्षित होती हैं।

"कच्छ का आदर्श" कच्छ के स्वाधी के छोटे-छोटे अन्तर्शरीरियों के साथ उसकी सहायता और सहकार को उद्धार करने वाली कहानी है। तीसरे के
प्रति अद्वैत प्रार्थि और अपनी आस्थापत्य में उसके प्रति पीड़ा-बोध को लेकर जीने वाले छोटे महाराज को लेकर ने एक जाने-वड़णे परिप्रेक्ष में व्याप्त कर दिया है।

कथातारः—इस कहानी का नायक शिवराज रैल से अपने कर्त्ते को जा रहा था। उसके साथ उसे एक तोता था। वह व्यक्ति उसे तोते को आदे की गोलियाँ बना-बना कर खिलाड़ा रहा था तथा उसे तीताराम-तीताराम कहने को उकता रहा था। लेकिन तोता छोड़ने के प्रति अद्वित सच दिखा रहा था। उसने एक बार भी तीताराम नहीं कहा। वह व्यक्ति शिवराज को पहाड़ नैवाया था। शिवराज को भी याद आया कि के छोटे महाराज हैं। छोटे महाराज की मां बहुत पहले तक निर्माण गई थी। बाप दादा सोने-पांडे का काम करते थे। बाप के मरने के समय भी छोटे महाराज की उम्र बहुत कम थी।

उन्होंने जब ते एक गोरे में बहुत संपत्ति की गई जो बापों की बची थी उसे परिवार के मुख्तार ने ध्वस्त की। तब ही छोटे को रोक भरते के लागू बाध्य कर दिया। राम के महिना भर का कोई पैसा न दिया। वह उसकी क्षोभी पर जा पहुँचे। जब उसने पैसे न दिए तो एक तोता उठा लाए। वह वह तोता तबी के उनके पास है। वह हंगामा करे उसे अपना तरा रखने हैं। शिवराज और छोटे महाराज अपने कर्मे में पहुँचे गए। अपने रिश्वत के बाद शिवराज छोटे महाराज की निःशक्ता को बुरी तरह तक देखा रहते थे।

उन्हें बांसू का दौरा था और वह रात तो नहीं लेकर थे। उन्हें अपने तोते की पिठा भी थी कि कहीं बिकली उसे बांसू न जाए। उन्होंने शिवराज तो अग्रिम जिंका कि वह तोते को अपने घर रखे। तीन-चार दिन बीता। गए। छोटे महाराज की बालक बिगाड़ आती जा रही थी। उनका ध्यान अपने तोते तत्पूर्व पर भी अटक रहता था। वह अपना तोता कापड़े मारने लगा। आखे दिन तेरे जब शिवराज उनकी कोठरी में गया तो महाराज चिल्लाया जैसे तो टेंटे थे और तोते का निःशक्ता निहाले पड़ा। फिरों के उपर उन्होंने एक कपड़ा काट रखा था। शिवराज ने तोया पता नहीं आता तब भी मंगू तोते ने तीताराम कहकर उनकी इज़हार युग्म की उड़ी या नहीं।

इस कहानी में हमारी सिद्धियाँ और खंड-खंड आस्थाओं पर पूरार जिम्मा गया है।